राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 भारत का सेमीफाइनल खेलना लगभग तय ...

चुनाव से पहले डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय छात्रों को किया ... 12

वर्ष : 12 | अंक : 73 | पटना, सोमवार, 24 जून, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 59,340

चांदी 55,350

सेंसेक्स 63,327

निफ्टी 18,816

मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन बापू टावर का किया निरीक्षण, निर्माण कार्य तेजी से पूरा करने का दिया निर्देश

एक-डेढ़ महीना के अंदर बापू टावर बनकर हो जायेगा तैयार : नीतीश

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गर्दनीबाग में निमार्णाधीन बापू टावर का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने बापू टावर के भूतल एवं पांचवें तल पर जाकर निर्माण कार्य की प्रगति का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने भूतल तल पर ही बनाये गये ओरियेंटेशन हॉल में टर्न टेबल थियेटर शो (रोटेटिंग पर्दे) के माध्यम से गांधी जी की जीवन यात्रा से संबंधित फिल्म देखी। निरीक्षण के दौरान भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि ने मुख्यमंत्री को निर्माण कार्य से संबंधित विस्तृत जानकारी दी और बताया कि निर्माण कार्य तेजी से किया जा रहा है और इसे फिनीशिंग टच दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि जो भी आगंतुक बापू टावर देखने आयेंगे, वे ओरियेंटेशन हॉल में बैठकर बापू की जीवनी, उनके आदर्शों एवं कार्यों तथा बिहार की गौरव गाथा को देख सकेंगे। मुख्यमंत्री ने निरीक्षण के दौरान प्रेक्षागृह, प्रतीक्षा कक्ष, लाउंज, बापू के आदर्शों को आमजन में स्थापित करने हेतु कार्यों के प्रदर्शन के लिये दीर्घा, अनुसंधान केन्द्र, आगंतुक सुविधायें एवं अन्य संरचनाओं की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने निरीक्षण के दौरान भवन निर्माण विभाग के सचिव को निर्देष देते हुये कहा कि बापू टावर का निर्माण जल्द से जल्द पूर्ण करायें। इसका निर्माण जल्द पूर्ण होने से बापू की जीवनी, उनके विचारों और उनके आदर्शों को नई पीढ़ी जान सकेगी। बापू के जीवन से जुड़ी ऐतिहासिक घटनायें, गांधी जी के विचार, स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका, बिहार से लगाव, बापू के आदर्शों को बेहतर ढंग से रेखांकित करें। जो भी चीज प्रदर्शित किया जा रहा है, उसके बारे में हिन्दी और अंग्रेजी में ठीक ढंग से लिखें ताकि आमजन यहां आकर उसे देख और समझ सके। उन्होंने कहा कि यह परिसर ग्रीन एरिया रहे, परिसर बेहतर और व्यवस्थित दिखे। जब बापू टावर बनकर तैयार हो जायेगा तो बहुत अच्छा दृश्य दिखेगा और लोग यहाँ आकर बापू के बारे में जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे। हमने इसका निर्माण कार्य कई बार आकर देखा है और समय-समय पर सुझाव भी देते रहे हैं।

बहुत अच्छा बन रहा हैं बापू टावर : सीएम

निरीक्षण के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि बापू टावर बहुत अच्छा बन रहा हैं, हम बराबर आकर इसे देखते रहे हैं। हम पहले से ही सुझाव देते रहे हैं। एक-डेढ़ महीना के अंदर यह पूरा बनकर तैयार हो जायेगा। हम जल्द से जल्द एक-डेढ़ महीना में इसकी शुरूआत करायेंगे।

ये रहें मौजूद : निरीक्षण के दौरान जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, भवन निर्माण मंत्री जयंत राज, सांसद संजय कुमार झा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि, मुख्यमंत्री सचिवालय के विशेष सचिव डॉ चन्द्रशेखर सिंह, पटना के जिलाधिकारी शीर्षत कपिल अशोक सहित अन्य वरीय अधिकारी एवं अभियंतागण उपस्थित थे।

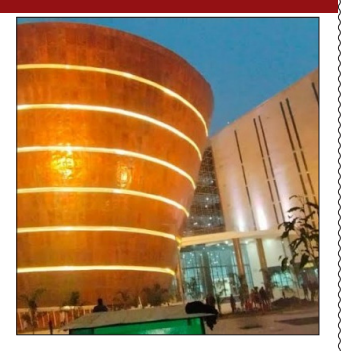

संक्षिप्त खबरें

घुसपैठ के दौरान मारे गए आतंकवादी का शव बरामद, अभियान जारी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के उड़ी सेक्टर में गोहालन गांव में शनिवार को मारे गए दो आतंकवादियों में से सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी का शव रविवार को बरामद कर लिया है। जबकि मारे गए दूसरे आतंकी के शव की तलाश की जा रही है। इलाके में अभी भी अभियान जारी है। सेना को शनिवार को सुरक्षा एजेंसियों से इनपुट मिले कि आतंकियों का एक दस्ता उड़ी सेक्टर के रास्ते कश्मीर में घुसपैठ की फिराक में है। इसके आधार पर सेना ने सभी अग्रिम चौकियों को अलर्ट जारी करते हुए अग्रिम इलाकों में विशेष नाके स्थापित किए थे।शनिवार को गोहालन गांव के अग्रिम छोर पर चढ़ान पोस्ट के इलाके में नाका लगाए बैठे जवानों ने स्वचालित हथियारों से लैस चार आतंकियों को भारतीय इलाके की तरफ आते देखा। जैसे ही वह नियंत्रण रेखा को पार करने लगे, जवानों ने उन्हें ललकारते हुए आत्मसमर्पण करने को कहा।घुसपैठियों की गोलीबारी पर जवानों ने जवाबी गोलीबारी की।

चौक थाना परिसर से शराब माफिया कैदी हुआ फरार

पटना सिटी (प्राकि)। मद्य निषेध विभाग की राज्य स्तरीय टीम ने चौक थाना क्षेत्र के हाजीगंज स्थित एक ट्रांसपोर्ट के गोदाम से में रेड किया था। वहां बाहर से शराब और स्पिरिट मंगवाया गया था और यहां से अन्यत्र ट्रांसपोर्ट करने के फिराक में माफिया लगा था। इसी दौरान आईबी प्रोवेशन की टीम ने छापेमारी किया और दो लोगों को शराब और स्पिरिट के साथ गिरफ्तार करते हुए चौक थाना की पुलिस को रविवार को सुपुर्द कर दिया। यहां पुलिस पदाधिकारी के द्वारा दोनों का इंट्रोगेशन कर पूछताछ किया ही जा रहा था कि इसी दौरान एक गिरफ्तार शराब माफिया कैदी पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। फरार होने वाले व्यक्ति का नाम विनोद राय बताया जाता है। इस संबंध में डीएसपी-2 डॉक्टर गौरव कुमार ने बताया कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है और इस संबंध में जो भी पुलिस पदाधिकारी या जवान लापरवाह पाए जाएंगे।

सीबीआई ने केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की शिकायत पर अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ दर्ज किया मामला

नीट पेपर लीक मामला : बवाल के बीच पहली एफआईआर, सीबीआई ने दर्ज किया मामला

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। नीट पेपर लीक के मामले ने इन दिनों देशभर में सुर्खियां बटोरीं हैं। अब खबर है कि नीट-यूजी में अनियमितताओं को लेकर केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने एफआईआर दर्ज की है। एजेंसी से जुड़े अधिकारी ने इस बात की जानकारी दी है। सीबीआई ने केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की शिकायत पर अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। शिक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि 5 मई को आयोजित की कई नीट-यूजी परीक्षा में कथित अनियमितताओ और धोखाधड़ी के मामले सामने आए हैं।

उन्होंने आगे कहा कि परीक्षा प्रक्रिया के संचालन में पारदर्शिता के लिए मामले को जांच के लिए सीबीआई को सौंपा गया है। इससे पहले बिहार पुलिस ने इस मामले में कुछ लोगों को भी गिरफ्तार किया था। वहीं, नीट पेपर लीक का कनेक्शन महाराष्ट्र में भी मिला है। पुलिस ने दो अध्यापकों से पेपर लीक मामले में पूछताछ की है। जिन अध्यापकों से पूछताछ हुई है, उन्हें नांदेड़ की आंतकरोधी स्कवॉड ने शक के आधार पर पकड़ा। बता दें कि विपक्ष और सामाजिक संगठनों ने नीट यूजी का पेपर लीक होने का आरोप लगाया और मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की थी। ऐसे में केंद्र सरकार ने नीट पेपर लीक मामले की जांच सीबीआई को सौंपी। बिहार पुलिस ने इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है, जिन्होंने पूछताछ में स्वीकार किया कि परीक्षा से एक दिन पहले ही पेपर लीक हो गया था। पुलिस अब सॉल्वर गैंग के लोगों से भी पूछताछ कर रही है।

एनटीए प्रमुख को भी बदला गया: केंद्र सरकार ने अनियमितताओं की शिकायत के बाद नीट और यूजीसी नेट समेत कई अहम परीक्षाएं कराने वाली एजेंसी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के महानिदेशक सुबोध कुमार सिंह को उनके पद से हटा दिया है। साथ ही एक पैनल का गठन किया है, जो नीट परीक्षा में हुई अनियमितताओं की जांच करेगा। बीती 5 मई को हुई नीट यूजी की परीक्षा में करीब 24 लाख छात्र शामिल हुए थे, लेकिन जैसे ही 4 जून को रिजल्ट घोषित किए गए और उसमें 1500 से ज्यादा छात्रों को ग्रेस मार्क्स देने का खुलासा हुआ तो मामला अदालत में पहुंच गया। इसके बाद एनटीए ने छात्रों को दिए ग्रेस मार्क्स हटाने और इन छात्रों की परीक्षा फिर से लेने का फैसला किया। आज इन 1500 से ज्यादा छात्रों की फिर से नीट यूजी की परीक्षा आयोजित की जा रही है। साथ ही नीट के कथित पेपर लीक मामले पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई भी चल रही है।

बिहार के बाद अब महाराष्ट्र का कनेक्शन, दो अध्यापकों से हुई पूछताछ

नई दिल्ली। नीट-यूजी पेपर लीक का मामला इन दिनों सुर्खियों में बना हुआ है। बिहार पुलिस ने इस मामले में कुछ लोगों को गिरफ्तार किया है। अब नीट पेपर लीक का कनेक्शन महाराष्ट्र में भी मिला है। पुलिस ने दो अध्यापकों से पेपर लीक मामले में पूछताछ की है। जिन अध्यापकों से पूछताछ हुई है, उन्हें नांदेड़ की आंतकरोधी स्कवॉड ने शक के आधार पर पकड़ा। पुलिस को शक है कि ये दोनों अध्यापक नीट पेपर लीक मामले में शामिल हो सकते हैं। दोनों महाराष्ट्र के जिला परिषद स्कूलों में पढ़ाते हैं। साथ ही दोनों लातूर में निजी कोचिंग सेंटर भी संचालित करते हैं। पुलिस ने दोनों से कई घंटे तक पूछताछ की और फिर जाने दिया। पुलिस ने दोनों को जरूरत पड़ने पर फिर से पूछताछ के लिए पेश होने का भी निर्देश दिया है। देश में इन दिनों नीट और यूजीसी नेट परीक्षाओं को लेकर हंगामा चल रहा है और केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा जांच की जा रही है। दरअसल नीट परीक्षा में पेपर लीक होने का शक है। वहीं यूजीसी नेट की परीक्षा सरकार ने रद्द कर दी है। सरकार का कहना है कि यूजीसी नेट का पेपर डार्कनेट पर लीक हो गया था, जिसके चलते परीक्षा के अगले दिन ही परीक्षा को रद्द करने का आदेश जारी कर दिया गया। विपक्ष और सामाजिक संगठन नीट यूजी का पेपर लीक होने का आरोप लगा रहे हैं और मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग कर रहे हैं। ऐसे में केंद्र सरकार ने नीट पेपर लीक मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी है। बिहार पुलिस ने इस मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है, जिन्होंने पूछताछ में स्वीकार किया कि परीक्षा से एक दिन पहले ही पेपर लीक हो गया था। पुलिस अब सॉल्वर गैंग के लोगों से भी पूछताछ कर रही है।

अचानक रात में गिर गया पुल का 40 फीट लंबा हिस्सा

मोतिहारी में गिरा निर्माणाधीन पुल, एक हफ्ते में तीसरी घटना

प्रात : किरण

पटना/एजेंसी। एक सप्ताह के अंदर बिहार में अब तीसरा पुल हादसा हुआ है। इस बार पूर्वी चंपारण के घोड़ासहन प्रखंड में डेढ़ करोड़ की लागत से बन रहा निमाणाधीन पुल भरभरा कर गिर गया। अब इसका वीडियो वायरल हो रहा है। लोग बिहार सरकार पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि घोड़ासहन प्रखंड अमावा से चैनपुर स्टेशन की ओर जाने वाली सड़क पर बन रहे पुल की ढलाई का काम कई दिनों से चल रहा था। शनिवार को पूल के एक हिस्से की ढलाई भी हुई थी। अचानक रात में करीब 40 फीट लंबा हिस्सा गिर गया।

पुल निर्माण में गुणवत्ता का कोई ख्याल नहीं रखा गया: लोगों का कहना है कि पुल निर्माण में गुणवत्ता का कोई ख्याल नहीं रखा गया था। पुल में इस्तेमाल की गई सामग्रियों की गुणवत्ता काफी खराब है। इसलिए अररिया के बकरा नदी पर जैसे पुल हादसा हुआ था, वैसा ही हाल यहां भी हुआ।लोगों ने कहा कि अब सवाल उठता है कि ढलाई के वक्त ही पूल ध्वस्त हो जा रहा है। इसकी गुणवत्ता क्या होगी? इसके लिए कौन जिम्मेवार है? बिहार सरकार इस मामले की जांच करे और जिम्मेदार लोगों पर कार्रवाई करे।

हादसे के विरोध में लोगों ने जमकर नारेबाजी की: इधर, पुल हादसे के विरोध में लोगों ने जमकर नारेबाजी की। गिरे हुए पुल के सामने ग्रामीण खड़े हो गए इसके बाद नारेबाजी करने लगे। उनका कहना है कि घोड़ासहन प्रखंड के अमवा से चैनपुर स्टेशन जाने वाली सड़क में 40 फीट पुल बनने का काम चल रहा था। ढलाई के कुछ घंटे बाद ही पुल ध्वस्त हो गया। उन्होंने बताया कि आरसीसी पुल का निर्माण धीरेंद्र कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा करवाया जा रहा है।

22 जून को सीवान में गिरा था पुल: सीवान के महाराजगंज अनुमंडल के पटेढ़ा और गरौली गांव के बीच गंडक नहर पर पुल अचानक गिर गया। दरअसल, शनिवार सुबह अचानक पुल का एक पाया धंसने लगा। देखते ही पुल नहर में समा गया। हादसे के बाद दो गांव के बीच आवागमन बाधित हो गया है। इलाके में हड़कंप मच गया। लोग पुल के निर्माण कार्य पर सवाल उठा रहे हैं।

18 जून को बकरा नदी पर बना पुल गिरा था: बता दें कि 18 जून को अररिया जिले सिकटी प्रखंड में बकरा नदी पर बना पुल उद्घाटन से पहले ही पुल ध्वस्त हो गया था। 182 मीटर का पुल कुल तीन हिस्सों में बना था। दो पाए के साथ दो हिस्सा नदी में समा गया।

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क निर्माण योजना के तहत बने इस पुल की लागत 7.79 करोड़ रुपये थी। 182 मीटर लंबे इस पुल का निर्माण 2021 में शुरू हुआ था। शुरूआती दौर में यह 7 करोड़ 80 लाख की लागत का था, लेकिन बाद में नदी की धारा बदलने और एप्रोच सड़क को लेकर कुल 12 करोड़ की लागत का हो गया था।

पुल गिरे, भ्रष्टाचार के गुल खिले : तेजस्वी

पटना। पटना। बिहार में पुल ढहने की घटना पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने राज्य सरकार पर हमला बोला है। नेता प्रतिपक्ष ने रविवार को सोशल मीडिया के जरिए सरकार पर निशाना साधा है। तेजस्वी ने कहा कि, पुल गिरे, भ्रष्टाचार के गुल खिले। 18 वर्षों के मुख्यमंत्री और बेचारे दो-दो उपमुख्यमंत्री तो इन सबके बारे में जानते ही नहीं है। जानकर कर भी क्या लेंगे? ज्यादा से ज्यादा क्या होगा? डबल इंजनधारी लोग कह देंगे कि पुल खुदकुशी कर रहे है या चूहे पुल कुतर रहे है। तेजस्वी यादव ने इसके साथ एक वीडियो भी शेयर किया है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे 6 दिनों में तीन पुल धराशाई हो गए हैं। बता दें कि, 18 जून को अररिया में, 22 जून को सिवान में तो वहीं आज यानी 23 जून को मोतिहारी में पुल भरभराकर गिर गया है।

यौन शोषण मामले में जदएस विधान पार्षद सूरज रेवन्ना गिरफ्तार

प्रात : किरण

हासन/एजेंसी। कर्नाटक पुलिस ने जनता दल (एस) के विधान परिषद सदस्य और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते सूरज रेवन्ना को जबरन अप्राकृतिक यौन संबंध बनाने के मामले में गिरफ्तार किया है। सूरज रेवन्ना, सेक्स वीडियो मामले में गिरफ्तार मुख्य आरोपी और पूर्व जद(एस) सांसद प्रज्वल रेवन्ना के भाई हैं। सूरज रेवन्ना को हासन जिले के होलेनरसीपुरा ग्रामीण पुलिस ने रविवार सुबह गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद शनिवार रात वह पुलिस के सामने पेश हुए थे। पुलिस ने बताया कि शनिवार रात सूरज रेवन्ना के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। जद(एस) के एक पुरुष कार्यकर्ता ने उन पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था। इस संबंध में पूछताछ के लिए उन्हें थाने बुलाया गया था। पुलिस ने सूरज रेवन्ना के खिलाफ आईपीसी की धारा 377 (अप्राकृतिक यौन संबंध), 342 (गलत तरीके से बंधक बनाना) और 506 (आपराधिक धमकी) के तहत एफआईआर दर्ज की थी। पीड़ित ने डीजीपी और हासन पुलिस अधीक्षक दोनों के कार्यालय में अपनी शिकायत भेजी थी। शिकायत की प्रति मिलने के बाद पुलिस ने मामले को क्षेत्राधिकार वाले होलेनरसीपुरा ग्रामीण थाने को स्थानांतरित कर दिया था। पुलिस ने शिकायतकर्ता से संपर्क कर उसका बयान दर्ज किया था। पुलिस ने पीड़ित की मेडिकल जांच भी कराई है।

परीक्षण परीक्षण में इसरो ने लैंडिंग इंटरफेस और तेज गति में विमान की लैंडिंग की स्थितियों की जांच की

इसरो का कीर्तिमान, दोबारा इस्तेमाल हो सकने वाले विमान की तकनीक का तीसरा परीक्षण भी सफल

प्रात : किरण

बंगलूरू/नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने रविवार को बताया कि उसने अपनी रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल तकनीक (प्रक्षेपण यान को दोबारा इस्तेमाल इस्तेमाल करने की तकनीक) का तीसरी बार सफल परीक्षण किया। इसरो ने बताया कि इस बार ज्यादा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में प्रक्षेपण यान का परीक्षण किया और वह सभी मानकों पर खरा उतरा। इस परीक्षण में इसरो ने लैंडिंग इंटरफेस और तेज गति में विमान की लैंडिंग की स्थितियों की जांच की। इस परीक्षण के साथ ही इसरो ने आज के समय की सबसे अहम तकनीक में से एक को हासिल करने की तरफ मजबूती से कदम बढ़ा दिया है।

रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल तकनीक का तीसरा सफल परीक्षण: इसरो ने रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल का तीसरा और अंतिम परीक्षण कर्नाटक के चित्रदुर्ग में एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज में रविवार सुबह 7.10 बजे किया गया। इससे पहले इसरो रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के दो सफल परीक्षण कर चुका है। तीसरे परीक्षण में प्रक्षेपण यान को ज्यादा ऊंचाई से छोड़ा गया और इस दौरान तेज हवाएं भी चल रहीं थी, इसके बावजूद प्रक्षेपण यान पुष्पक ने पूरी सटीकता के साथ रनवे पर सुरक्षित लैंडिंग की।

चिनूक हेलीकॉप्टर से हवा में छोड़ा गया प्रक्षेपण यान पुष्पक: परीक्षण के दौरान वायुसेना के चिनूक हेलीकॉप्टर से प्रक्षेपण यान पुष्पक को साढ़े चार किलोमीटर की ऊंचाई से छोड़ा गया। इसके बाद प्रक्षेपण यान पुष्पक ने स्वायत तरीके से रनवे पर सफल लैंडिंग की। लैंडिंग के दौरान यान की गति करीब 320 किलोमीटर प्रतिघंटे थी। बता दें कि एक कमर्शियल विमान की लैंडिंग के वक्त स्पीड 260 किलोमीटर प्रतिघंटे और एक लड़ाकू विमान की गति करीब 280 किलोमीटर प्रतिघंटे होती है। लैंडिंग के वक्त पहले ब्रेक पैराशूट की मदद से प्रक्षेपण यान की गति को घटाकर 100 किलोमीटर प्रतिघंटे पर लाया गया और फिर लैंडिंग गीयर ब्रेक की मदद से रनवे पर विमान को रोका गया।

तकनीक की मदद से अंतरिक्ष मिशन की लागत घटेगी: परीक्षण के दौरान यान के रूडर और नोज व्हील स्टीयरिंग सिस्टम की भी कार्यक्षमता की जांच की गई। भविष्य में प्रक्षेपण यान को अंतरिक्ष में भेजने और उसे वापस सुरक्षित धरती पर उतारकर फिर से अंतरिक्ष में भेजने के लिहाज से यह तकनीक बेहद अहम है। इस तकनीक की मदद से इसरो की लागत में काफी कमी आएगी क्योंकि किसी भी अंतरिक्ष मिशन में प्रक्षेपण यान की लागत काफी ज्यादा होती है और अभी एक बार इस्तेमाल होने के बाद यान को दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जाता। अब रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल तकनीक की मदद से अंतरिक्ष में बढ़ रहे कचरे की समस्या से भी निपटा जा सकेगा।

रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के लैंडिंग परीक्षण के दौरान यान में मल्टी-सेंसर फ्यूजन का उपयोग किया गया, जिसमें इनर्शियल सेंसर, रडार अल्टीमीटर, फ्लश एयर डेटा सिस्टम, स्यूडोलाइट सिस्टम और एनएवीआईसी जैसे सेंसर शामिल हैं। इसरो का कहना है कि इस परीक्षण में भी पिछले परीक्षणों के दौरान इस्तेमाल की गई यान की बॉडी और उड़ान प्रणालियों का फिर से इस्तेमाल किया गया, जो इसरो की डिजाइन क्षमता को दर्शाता है।विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी) के नेतृत्व में इस मिशन में इसरो के अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (एसएसी), इसरो टेलीमेट्री, ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क (आईएसटीआरएसी) और सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी), श्रीहरिकोटा भी शामिल रहे। साथ ही वायुसेना के तकनीकी विभाग के साथ ही आईआईटी कानपुर, नेशनल एयरोस्पेस लैबोरेट्री, इंडियन एयरोस्पेस इंडस्ट्रियल पार्टनर्स, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया और एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने भी अहम सहयोग किया।

पेपर लीक, रद्द या स्थगित होना बन गई है भाजपा सरकार की कार्यशैली : कांग्रेस

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने रविवार को कहा कि बड़ी परीक्षाओं को पेपर लीक के कारण रद्द करना मोदी सरकार की कार्यशाली बन गई है लेकिन पेपर रद्द करना और अधिकारियों को बदलना इस समस्या का समाधान नहीं है इसलिए इस दिशा में भेदभाव रहित तरीके से काम करने और सबके हित कदम उठाने की जरूरत है। श्री खड़गे ने कहा, नीट घोटाले में ज़िम्मेदारी सरकार के शीर्ष अधिकारियों के इर्दगिर्द आकर रुकती है। नौकरशाहों में फेरबदल करना भाजपा द्वारा बर्बाद शिक्षा प्रणाली की समस्या का समाधान नहीं है। एनटीए को एक स्वायत्त निकाय के रूप में पेश किया गया था लेकिन वास्तव में इसे भाजपा तथा आरएसएस के कुटिल हितों की पूर्ति के लिए बनाया गया था। छात्रों को न्याय दिलाने के लिए मोदी सरकार को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, नीट-पीजी परीक्षा स्थगित कर दी गई है। पिछले 10 दिनों में चार परीक्षाएं या तो रद्द या स्थगित की गई हैं। पेपर लीक, भ्रष्टाचार, अनियमितताएं और शिक्षा माफिया ने हमारी शिक्षा प्रणाली में घुसपैठ कर ली है। देर से की गई लीपापोती की कवायद का अब कोई फायदा नहीं है क्योंकि अनगिनत युवा इससे पीड़ित हैं।

श्रीमती वाड्रा ने कहा, नीट-पीजी पेपर लीक, नीट-पीजी रद्द, यूजीसी-नेट रद्द, सीएसआईआर-नेट रद्द। आज ये देश की कुछ सबसे बड़ी परीक्षाओं का हाल है। भाजपा राज में समूची शिक्षा का ढाँचा माफियाओं-भ्रष्टाचारियों के हवाले हो चुका है। लालची और चाटुकार किस्म के अयोग्य लोगों के हाथ में देश की शिक्षा और बच्चों का भविष्य सौंप देने की राजनीतिक जिद और अहंकार ने पेपर लीक, परीक्षा रद्द, कैंपसों से पढ़ाई-लिखाई का विलोप और राजनीतिक गुंडागर्दी को हमारी शिक्षा- व्यवस्था की पहचान बना दिया है। हालत ये हो गई है कि भाजपा सरकार साफ-सुथरे ढंग से एक परीक्षा तक नहीं करा सकती। उन्होंने कहा, आज युवाओं के भविष्य के सामने भाजपा सरकार एकमात्र सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़ी हो चुकी है। देश के काबिल युवा अपना सबसे कीमती समय, सारी ऊर्जा भाजपा के भ्रष्टाचार से लड़ने में गवां रहे हैं और मजबूर मोदी जी सिर्फ तमाशा देख रहे हैं।

राहुल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, अब नेट-पीजी भी स्थगित! यह नरेन्द्र मोदी के राज में बर्बाद हो चुकी शिक्षा व्यवस्था का एक और दुर्भाग्यपूर्ण उदाहरण है। भाजपा राज में छात्र अपना करियर बनाने के लिए पढ़ाई नहीं, अपना भविष्य बचाने के लिए सरकार से लड़ाई लड़ने को मजबूर हैं।

संक्षिप्त खबरें

महिला से झांसे में लेकर एटीएम कार्ड बदल लिया

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत नासरीगंज में एटीएम से रुपए निकाले के दौरान दो बदमाशों ने झांसे में लेकर कार्ड बदल लिया। उसके बाद दो बार में 90,680 रुपए निकाल लिया। नौबतपुर के कालापुर धोबिया के मुल निवासी लवली सिंह नासरीगंज में रहती है। थाना में दिए आवेदन में बताया कि एटीएम से रुपए निकाले के दौरान दो युवक अंदर आ गए और बातों में उलझाकर कार्ड बदल लिया और हमें पता नहीं चल पाया।जब खाते से चालीस हजार रुपए निकालने और पचास हजार रुपए की खरीदारी करने की मैसेज आया।तब जानकारी हुई।पुलिस छानबीन कर रही है।

पति व सास पर मारपीट करने का आरोप

पटना सिटी (प्राकि)। मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के दीप नगर की रहने वाली महिला ज्योति देवी ने ससुराल पक्ष के लोगों पर मामला दर्ज कराया है। इसमें पति चंदन कुमार, सास, देवर सहित परिवार के अन्य पर मारपीट कर घायल करने का आरोप लगाया गया है। पत्नी का आरोप है कि पति ने जेनरेटर के हैंडिल से प्रहार कर जख्मी कर दिया है। पति का भाई शरीर पर डीजल डाल कर बोला कि इसे छोड़ना मत, मार डालना है। महिला किसी प्रकार जान बचा कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस के आने के पहले ही अभियुक्तगण सोने का चेन और एक लाख रुपया लेकर भाग निकले।

इदारे सरिया में बैठक कर मुस्लिमों की मौजूदा परिस्थिति पर हुई चर्चा

पटना सिटी (प्राकि)। सुल्तानगंज स्थित इदारे सरिया में स्थित रईसूल कलम सेमिनार हॉल में मौजूदा परिस्थिति में मुसलमान क्या करे, इसे लेकर रविवार को बैठक की गई। पूर्व सांसद मौलाना गुलाम रसूल बलियावी की अध्यक्षता में हुई बैठक में शामिल लोगों ने कहा कि सियासी पार्टियां मुसलमानों का इस्तेमाल वोट बैंक के तौर पर करती है। अध्यक्ष ने बताया कि बैठक में यह फैसला लिया गया है कि इसके लिए एक कमेटी गठित हो। यह प्रदेश में संगठन तैयार करेगी। राजनीतिक सहभागिता के लिए संघर्ष करना होगा। बैठक में राज्य के विभिन्न जिलों से आए प्रतिनिधिगण शामिल हुए। इन लोगों ने भी सत्ता में हिस्सेदारी के लिए संघर्ष में सहयोग करने की बात कही।

प्लेटफार्म नंबर 3 से अंग्रेजी शराब बरामद

दानापुर खगौल रेल थाना के अंतर्गत रेल स्टेशन पर विशेष चेकिंग के क्रम में प्लेटफार्म नंबर 3 पर मध्य फुट ओवर ब्रिज के नीचे लावारिस एवं संदिग्ध अवस्था में एक पिठ्ठू बैग पाया गया जिसे तलाशी लेने पर उसमें अंग्रेजी शराब रेड रशियन ग्रैंड बोदका 40 पीस बरामद किया जिसका कुल मात्रा 7.200 लीटर अंग्रेजी शराब प्लेटफार्म से लावारिस हालत में बरामद किया गया इस संबंध में जीआरपी थाना अध्यक्ष सुधीर कुमार सिंह ने बताया की अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज कर ली गई है

शिक्षकों को ऑनलाइन उपस्थिति को मोबाइल व डाटा को राशि दें

पटना सिटी (प्राकि)। सामाजिक एवं शैक्षिक कार्य के लिए समर्पित संस्था शिव श्याम फाउंडेशन के अध्यक्ष शिव श्याम कुमार ने मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री एवं अपर मुख्य सचिव से शिक्षकों को ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करने को तत्काल एंड्राइड मोबाइल देने की मांग की है। साथ ही डाटा क्रय के लिए समुचित राशि भी उपलब्ध कराने की मांग की है। ज्ञातव्य है कि 25 जून, 24 से शिक्षकों को एंड्रॉयड मोबाइल के माध्यम से उपस्थिति दर्ज करने को आदेशित किया गया है। लेकिन अब तक किसी भी शिक्षक को न तो एंड्राइड दिया गया है, न ही डाटा क्रय को राशि दी गई है। फाउंडेशन मांग करती है कि दिनांक - 24 जून को कैम्प लगा कर सभी शिक्षक को एंड्रॉयड प्रदान किया जाए एवं डाटा क्रय को राशि उपलब्ध कराया जाय, ताकि शिक्षक अपनी उपस्थिति ऑनलाइन दर्ज कर सकें।

कल सुबह गोलियों से थर्राया जल्लाद रोड, जमीन ब्रोकर की गोली मार हत्या

पुलिस सीसीटीवी फुटेज को खंगाली, जमीनी विवाद या पुरानी रंजिश की आशंका

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आलमगंज थाना क्षेत्र के जल्ला रोड के माल्य महादेव के दक्षिण मोड़ पर अपराधियों ने जमीन कारोबारी अरुण कुमार की गोली मार हत्या कर दी। घटना रविवार की अल सुबह करीब पांच बजे हुई। घर के पास ही जमीन ब्रोकर 45 वर्षीय अरुण कुमार सुबह घर के पास ही टहलने के दौरान गोली मारी गई। हत्या का कारण स्पष्ट नहीं है। पुलिस का कहना है कि जमीन को लेकर चल रहे विवाद या फिर आपसी रंजिश में अपराधियों ने घटना को अंजाम दिया होगा। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि सुबह लगभग पांच बजे अरुण को फोन आया। इसके बाद वह घर से कुछ ही दूर निकला था। इस दौरान पूर्व से घात लगाए दो की संख्या में रहे अपराधियों ने अरुण को घेर लिया और ताबड़तोड़ गोली बरसाना शुरू कर दिया। घटना को अंजाम देने के बाद दोनों अपराधी बाइक से हथियार लहराते हुए भाग निकले। गोलियों की आवाज सुन कर घर से परिवार के सदस्य और आसपास के लोग बाहर निकले। खून से लथपथ सड़क पर गिरे अरुण को इलाज के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया। यहां जांच के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। इसी बीच सूचना पाकर मौके पर एएसपी शरथ आरएस और थानाध्यक्ष राजीव कुमार पुलिस पदाधिकारी और बल के साथ पहुंचे। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दिया। मृतक के पिता मदन मोहन प्रसाद का कहना है कि घर के पास खाली विवादित जमीन के मालिक मंतोष महतो के साथ भी बेटा अरुण का विवाद चल रहा था। पटना नगर निगम के महापौर के चुनाव में दूसरे प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार करने को लेकर वर्तमान महापौर के पुत्र से झगडा के बाद धमकी भी दी गई थी। एएसपी शरथ आरएस ने बताया कि अज्ञात अपराधियों ने जमीन कारोबारी अरुण की गोली मार हत्या की है। हत्या का कारण अभी पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस घटना से जुड़े हर बिंदु पर छानबीन कर रही है। जल्द ही हत्याकांड का उद्भेदन होगा। घटनास्थल के आसपास में लगे सीसीटीवी के फुटेज को पुलिस ने खंगाला है। घटनास्थल से पुलिस ने करीब आधा दर्जन खोखा भी जब्त किया है। अरुण कोदायां और सीने में दो, गला के उपरि भाग, सीना, पीठ से लेकर ठेहुना तक में करीब आधा दर्जन गोली मारी गई है। सिटी एसपी भारत सोनी भी मृतक के घर पहुंच कर पिता व परिजनों से पूछताछ की है। उन्होंने घटनास्थल का भी निरीक्षण किया है। दूसरी शाम में मेयर प्रत्याशी रहीं के पति बिट्टू सिंह भी अरुण सिंह के घर पहुंचे और घटना की जानकारी लेने के साथ ही परिजनों को ढांढस बंधाने का काम किया। घटनास्थल स्थल के आसपास पुलिस बल की तैनाती की गई है। पुलिस घटना के बाद अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए टीम बना कर छापेमारी शुरू कर दी है। अरुण चार भाइयों में छोटा था, जबकि तीन बहन में संगीता, गीता और बबीता है। अरुण के परिवार में पिता मदन मोहन प्रसाद, मां उषा देवी, पत्नी आशा देवी, एक बेटा आरब और बेटी आराध्या है।

सीबीआई ने नीट-2024 परीक्षा में अनियमितताओं को ले मामला किया दर्ज

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के निदेशक से प्राप्त लिखित शिकायत के आधार पर एक आपराधिक मामला दर्ज किया। प्राथमिकी में दर्ज आरोपों में कहा गया है कि नीट (ठएएळ वऋ) 2024 परीक्षा, राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) द्वारा 5 मई 2024 को 571 शहरों में 4,750 केंद्रों पर आयोजित की गई थी, जिसमें विदेश के 14 शहर भी शामिल थे, इसमें 23 लाख से अधिक उम्मीदवार परीक्षा में शामिल हुए। आगे शिकायत में आरोप है कि ठएएळ (वऋ) 2024 परीक्षा के आयोजन के दौरान कुछ राज्यों में कुछ अलग-अलग घटनाएं हुईं। इसलिए, शिक्षा मंत्रालय ने सीबीआई से कथित अनियमितताओं की पूरी श्रृंखला की व्यापक जांच करने का अनुरोध किया है, जिसमें षड़यंत्र, धोखाधड़ी, परनामधारण, विश्वासघात एवं उम्मीदवारों, संस्थानों तथा मध्यस्थ व्यक्तियों द्वारा सबूतों को नष्ट करना एवं साथ ही अनियमितताओं का प्रयास करना भी शामिल है। मंत्रालय ने, परीक्षा के आयोजन से जुड़े लोक सेवकों की भूमिका, यदि कोई हो, एवं घटनाओं के समस्त पहलुओं व व्यापक षड़यंत्र की भी जांच हेतु सीबीआई से अनुरोध किया है।

सीबीआई ने तदनुसार एक आपराधिक मामला दर्ज किया एवं जांच शुरू की है। मामले की उच्चतम प्राथमिकता पर जांच हेतु सीबीआई ने विशेष टीमों का गठन किया गया है। विशेष सीबीआई टीमें, पटना और गोधरा भेजी जा रही हैं जहां स्थानीय पुलिस ने इस संदर्भ में मामले दर्ज किए हैं।

नेहरूचक में गोलीबारी मामले में दो नामजद व अज्ञात पर एफआईआर

बकाया रकम मांगने पर मारपीट व धमकी, मामले दर्ज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आलमगंज थाना क्षेत्र के नेहरूचक में शनिवार हुए गोलीबारी के मामले में पुलिस ने दो लोगों को नामजद किया है। इसमें पुरानी सिटीकोर्ट के वैभव कुमार उर्फ हर्ष के बयान पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज की है। पुलिस को सौंपे आवेदन में वैभव ने बताया है कि दोपहर बड़ी पटनदेवी गड़हा मोड़ की ओर से वह बाइक से आ रहा था। उस वक्त मोड़ पर नीले रंग की बाइक पर सवार तीन युवकों ने हर्ष के बाइक में धक्का मार दिया। इससे हर्ष की बाइक का लाइट टूट गया। हर्ष जब धक्का मारने वाले युवकों को बाइक बनवाने के लिए बोला तो वे सब उसके साथ मारपीट करने लगे। युवकों ने अपने अन्य साथियों को भी वहां पर बुला लिया। इस दौरान दो बाइक पर सवार छह युवक पहुंचे और जान मारने की नीयत से गोलीबारी करने लगे। पुलिस ने बताया कि फायरिंग करने वालों की पहचान दुर्गा चरण लेन के रहने वाले अंशु कुमार और वरुण कुमार को नामजद किया गया है। अन्य अज्ञात के खिलाफ भी प्राथमिकी में जिक्र है।

मारपीट व धमकी का आरोप

बकाया रकम मांगने पर मारपीट,

बकाया सात लाख रुपये मांगने पर मारपीट, गाली-गलौज एवं धमकी दिए जाने का मामला आलमगंज थाना में दर्ज कराया गया है। दादरमंडी का रहने वाला आदित्य आनंद ने पुलिस को बताया कि भागवत नगर निवासी उपेंद्र कुमार अक्टूबर, 2024 में बतौर कर्ज कारोबार के लिए सात लाख रुपया लिया था। उसके द्वारा दिया गया चेक भी बाउंस हो गया। आरोप है कि गुलजारबाग स्टेशन से घर जाने के दौरान उपेंद्र कुमार व रौशन कुमार ने दो अन्य अज्ञात के साथ मिल कर मारपीट कर धमकी दिया। पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है।

अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल शूटिंग प्रतियोगिता का समापन समारोह

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर । अखिल भारतीय रेलवे सुरक्षा बल शूटिंग प्रतियोगिता का आयोजन 19 जून से 22 जून तक बिहार रेजीमेंट सेंटर दानापुर के फायरिंग रेंज पर किया गया जिसमें पूरे भारतवर्ष से विभिन्न क्षेत्रीय रेलों के रेलवे सुरक्षा बल के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें राइफल, पिस्टल एवं कार्बाइन की विभिन्न फायरिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का समापन समारोह अधिकारी क्लब महिंद्रू घाट पटना में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि महाप्रबंधक पूर्व मध्य रेल श्री तरुण प्रकाश द्वारा विजेताओं को पदक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर पूर्व मध्य रेल के प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त श्री अमरेश कुमार सहित रेलवे सुरक्षा बल के मुख्यालय एवं मंडलों के अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित थे ।

इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ टीम का खिताब दक्षिण रेलवे ने विजेता जीता जबकि रेलवे सुरक्षा विशेष बल (फ्धरऋ) की टीम उपविजेता रही। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर रेलवे के प्रधान आरक्षी राजेश यादव कार्बाइन एवं राइफल प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ फायरर घोषित किए गए।

बुजुर्ग काया के बीच धड़कते युवा दिल के प्रतिमूर्ति थे बनवारी बाबा : नन्द कुमार गौतम

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम :- गोपाल विद्यार्थी` बीते शनिवार के शाम बिक्रम के निसरपूरा निवासी 95 वर्षीय बनवारी बाबा का निधन हो गया` उनके निधन की खबर से बिक्रम वासियों में शोक व्याप्त है, वे वृद्ध होने के बावजूद भी युवाओं को धर्म व सत्कर्मों के लिए सदैव प्रेरित करते रहते थे। जानकारी के मुताबिक वे बीते कई महीनों से बीमार चल रहे थे। वहीं उनके निधन पर बिक्रम के असपुरा निवासी दैनिक हिन्दुस्तान के वरिष्ठ पत्रकार नंद कुमार गौतम ने शोक व्यक्त किया है` सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के माध्यम से श्री गौतम ने कहा कि बिक्रम क्षेत्र के बुजुर्गजनों मे एक बनवारी सिंह उर्फ बनवारी बाबा को जानता तो वर्षों पूर्व से था। लेकिन उनसे आत्मीय निकटता बढ़ी थी ट्रामा सेंटर के आंदोलन के दौरान उनके जीवन को निकट से झांकने परखने का मौका मिला था मुझे। उन्होंने कहा है कि जीवन के नौ दशक गुजारने वाले 93 - 94 साल के बुजुर्ग में इस तरह का युवा जोश और जज्बा मैनें पहली बार देखा था। ट्रामा सेंटर चालू करने को लेकर चल रहे आंदोलन के क्रम मे बनवारी बाबा जैसे ही धरना स्थल पर पहुंचते, धरनार्थियों में एक नए उत्साह ,ऊर्जा का संचार हो जाता था। अपनी बीमारी के पूर्व जबतक बनवारी बाबा धरनास्थल पर आते रहे, तबतक वहां पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी और बीमारी के वजह से जैसे ही उनका आगमन बंद हुआ, धरनास्थल पर मायूसी और मुर्दागनी के बादल छाने लगे। आगे नन्द कुमार गौतम ने कहा कि बनवारी बाबा के जुबां से मैने बिक्रम की इतिहास की अनछुए पहलुओं की जानकारियां हासिल की थी। कैसे अंग्रेज ह्यटामील्ह बिक्रम हवाई अड्डे से निकलकर नहर में कूद -कूदकर स्नान करते थे` बिक्रम में 42 की अगस्त क्रांति के दौरान थाने पर झंडा. फहराने के क्रम में हुए तीन शहीदों की आंखों देखी कथा भी वे सुनाए थे। 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ था। आजादी की घोषणा के वक्त ट्रैनिंग कालेज , बिक्रम के प्राचार्य बख्शी साहब थे। बनवारी बाबा बिक्रम स्थित उनके आवास पर हम उम्र लड़कों के साथ रेडियो पर आजादी के समाचार सुनने जा पहुंचे थे, क्योंकि बिक्रम में बख्शी साहब के पास ही रेडियो हुआ करता था। श्री गौतम ने उनके जीवन की सुनी हुई कहानियो के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि बनवारी बाबा ने मुझे बताया था कि अपने गांव निसरपुरा से कई कोस की दूरी तय कर अराप गांव के मिडिल स्कूल पैदल पढ़ने जाया करते थे। वह भी खाली पैर, जूते नहीं थे। वे बिहार सरकार में पंचायती राज पदाधिकारी की नौकरी से वर्षों पूर्व सेवा निवृत्त होकर घर आए थे।वह धार्मिक और सामाजिक कार्यों में निष्ठापूर्वक भाग लेते रहे थे। बिक्रम बाजार के बच्चा -बच्चा उन्हें जानता पहचानता था। श्री गौतम ने बिक्रम के धरती पर दीर्घायु जीवन जीनेवाले उक्त प्रकृति प्रेमी , यौवन प्रेमी इतिहास पुरुष आदरणीय बनवारी बाबा को नमन करते हुए श्रद्धांजलि दी है ।

चौक थाना परिसर के मंदिर स्थापना दिवस पर अखंड कीर्तन

पटना सिटी (प्राकि)। चौक थाना परिसर में स्थापित शिव मंदिर का छठा स्थापना दिवस श्रद्धा एवं भक्तिमय माहौल में आयोजित किया गया। इस दौरान भजन-कीर्तन, रुद्राभिषेक सहित अन्य धार्मिक अनुष्ठान किया गया। आयोजन में बड़ी संख्या में श्रद्धालु, शांति समिति के सदस्यगण व थाना परिवार के लोगों ने भाग लिया। भजन में डीएसपी अशोक कुमार पांडेय, मीना पांडेय ने भी भाग लिया। आचार्य मधुसूदन मिश्र की देखरेख में दो दिनों से चल रहे अखंड कीर्तन का समापन हुआ। भगवान शिव का रुद्राभिषेक का अनुष्ठान दरोगा श्रवण कुमार व पत्नी सोनाली सिन्हा ने किया। मौके पर पार्षद मुन्ना जायसवाल, प्रफुल्ल पांडेय, राजेश शुक्ला, संजीव यादव, ओमप्रकाश पासवान, शशिकांत शुक्ला, मानस कपूर, वकील राय, इंद्रराज आदि मौजूद थे।

जीएसटी में राहत सरकार की सकारात्मक सोच को दशार्ती है, जिससे व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा मिलेगा

व्यापारियों ने प्रधानमंत्री मोदी और वित्त मंत्री सीतारामन को जीएसटी में राहत के लिए करी सराहना

प्रात :किरण संवाददाता

कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) बिहार चेयरमैन राजेश गुप्ता व प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन द्वारा जीएसटी में किए गए महत्वपूर्ण घोषणाएं केंद्रीय सरकार और जीएसटी काउंसिल का व्यापार करने में आसानी प्रदान करने की दिशा में बड़ा सकारात्मक कदम है। श्री वर्मा ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन के नेतृत्व की सराहना की और आशा व्यक्त की कि जीएसटी कराधान को और अधिक सरल और तर्कसंगत बनाया जाएगा। कैट बिहार के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश कुमार नंदन ने कहा कि इन राहतों से व्यापारियों को भारी वित्तीय बोझ से मुक्ति मिलेगी और यह सरकार की व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करने के लिए अधिक से अधिक कदम उठाने की सोच को भी दशार्ता है। कोषाध्यक्ष प्रिंस कुमार राजू ने कहा कि ब्याज और पेनल्टी में छूट, इनपुट टैक्स क्रेडिट की समय सीमा का विस्तार और मुकदमेबाजी और पूर्व-डिपॉजिट आवश्यकताओं में कमी से करदाताओं को बहुत जरूरी राहत मिलेगी। ये उपाय अनुपालन को बढ़ावा देंगे और व्यापारिक समुदाय, विशेष रूप से एमएसएमई को समर्थन देंगे। आवश्यक सेवाओं की लागत को कम करने और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त छूट और सिफारिशें आर्थिक वृद्धि और करदाता समर्थन के प्रति एक संतुलित और विचारशील दृष्टिकोण को दशार्ती हैं। कैट महिला अध्यक्ष श्रीमती रुची अरोड़ा ने कहा कि जीएसटी काउंसिल ने छात्रों और कामकाजी पेशेवरों के लिए जीवन यापन की लागत को कम करने के लिए आवास सेवाओं से संबंधित कुछ छूटों की सिफारिश की है, जिससे छात्रों और कामकाजी पेशेवरों को राहत मिलेगी। कैट बिहार अध्यक्ष अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि कैट ने लगातार पहले तीन वर्षों के दौरान जीएसटी कार्यान्वयन के तहत उठाए गए उच्च मांगों के लिए कुछ प्रकार की माफी या समझौते का आग्रह किया था कैट बिहार उपाध्यक्ष रवि गुप्ता ने कहा कि देश भर के एमएसएमई और व्यापारी उच्च मांगों के मामलों में अपील के लिए नहीं जा सके क्योंकि अपील दायर करने से पहले पूर्व-डिपॉजिट की अनिवार्य आवश्यकता थी। जीएसटी काउंसिल ने अब जीएसटी के तहत अपील दायर करने के लिए आवश्यक पूर्व-डिपॉजिट की मात्रा को कम करने की सिफारिश की है। यह करदाताओं को महत्वपूर्ण वित्तीय राहत प्रदान करेगा और किसी भी अनिश्चितता को समाप्त करेगा। कैट शाहाबाद प्रभारी बबल कश्यप ने बताया कि जीएसटी काउंसिल ने 1 जुलाई 2017 से अधिकृत संचालन के लिए एसईजेड इकाई/डेवलपर द्वारा आयात पर लगाए गए मुआवजा उपकर को छूट देने की सिफारिश की है। इससे एसईजेड उत्पाद लागत-प्रतिस्पर्धी बनेंगे।

एक युवक को हुआ अपहरण

दानापुर थाना क्षेत्र के अंतर्गत डिफेंस कॉलोनी। के रहने वाला तीन दिन पहले बी फ्रार्मा का परीक्षा देने सिवान निकला आशु सिंह रहस्यमय तरीके से लापता है। लापता होने की खबर मिलते ही शाहपुर डिफेन्स कॉलोनी निवासी आशु के पिता भाजपा नेता राजेश सिंह समेत परिजन परेशान हो उठे। देखते ही देखते बात फैल गई। बताया जाता है कि शाहपुर थाना क्षेत्र के डीफेंस कालोनी निवासी आशु की मां ज्योति सिंह ने रविवार को सुबह में अपने पति राजेश को बताई कि शनिवार को रात में आशु ने फोन किया था।वह डरा हुआ था और बताया कि उसको कुछ युवकों ने अपहरण कर गोला रोड इलाके में डा दुखन राम डीएवी पब्लिक स्कूल के आसपास रखें हुए हैं। उसके बाद अपने लोगों को फोन करते हुए दानापुर थाना पहुंचे। सूचना पाकर पुलिस कार्रवाई में जुट गई। सूचना पाकर पूर्व विधायक आशा सिन्हा पहुंची। उसके बाद जल्द बरामदगी की बात करते हुए आक्रोशित लोगों ने दानापुर गांधी मैदान मार्ग को बीबीगंज मोड़ के पास जाम कर दिया।जाम की खबर पाकर एएसपी दीक्षा दानापुर थाना पहुंची। उसके बाद पूर्व विधायक अपने कार्यकताओं के साथ थाना पहुंची। छानबीन में जुटी पुलिस ने गोला रोड में बताए गए लोकेशन के आधार पर एक अपार्टमेंट में छापेमारी की गई।

बलिदान दिवस के रूप में मनाया गया डॉ श्यामा प्र मुखर्जी की पुण्यतिथि

अखंड भारत व अखंड कश्मीर ही था उनका सपना

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न मंडलों में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि को बलिदान दिवस के रूप में मनाया गया। इस दौरान उनके तैलचित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। मीडिया प्रभारी प्रदीप काश ने बताया कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य के साथ साथ प्रखर शिक्षाविद् थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में 1934 से 1938 तक कुलपति रहे। वे विश्व के सबसे युवा कुलपति थे। उन्होंने 1950 में जम्मू-कश्मीर के परमिट व्यवस्था अनुच्छेद 370 को खत्म करने की मांग की। विरोध के कारण शेख अब्दुल्ला की सरकार ने 11 मई, 1953 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया। 23 जून, 1953 को जम्मू-कश्मीर के जेल में रहस्मय तरीके से उनका निधन हो गया। उनका कहना था कि कोई भी राष्ट्र अपनी ऊर्जा से सुरक्षित रह सकता है। देश के संसाधनों का उपयोग कर देश को सशक्त बनाया जा सकता है। एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नही चलेगा। पांच अगस्त, 2019 को धारा 370 को हटाया गया। उनके बलिदान दिवस पर आज हम उनके सपनों को साकार कर पाने में जितनी खुशी और संतोष होता है।उनके सपनों को साकार करने के लिए करोड़ों कार्यकर्ता मेहनत कर संसद में 2014, 2019 और 2024 में तीसरी बार केंद्र में भाजपा की सरकार बनाया। पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में धारा 370 को हटा कर उनके सपनों को साकार किया गया। कार्यक्रम चौक मंडल, पश्चिम द्वार मंडल, अगमकुआं मंडल, गायघाट मंडल, सती सत्यवान मंडल व लखन विद्रोही मंडल में मनाया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विनय केसरी, नवल किशोर सिन्हा, अमित कानोडिया, संजीव यादव, संजय सिंह, महेश पासवान, अशोक भारती, अखिलेश मेहता, हरेंद्र चंद्रवंशी, संतोष विद्रोही, मनोज यादव, विनय कुमार, जितेंद्र कुमार जीतू, अनुज शर्मा आदि सक्रिय थे।

राज्य के दो स्वास्थ्य केंद्रों का हुआ राज्यस्तरीय एनक्यूएएस प्रमाणीकरण

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। राज्य में नेशनल क्वालिटी एश्योरेंस (एनक्यूएएस) प्रमाणीकृत स्वास्थ्य केंद्रों में फिर बढ़ोतरी हुई है। इस बार शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, माता चौक (पूर्णिया) और हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, धनुषी (वैशाली) को राज्यस्तरीय एनक्यूएएस प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। दोनों ही स्वास्थ्य केंद्रों को क्रमशः 87 और 78 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। इन केंद्रों के राष्ट्रीय प्रमाणीकरण के लिए अब आवेदन समर्पित किया जाएगा। राज्य के एनक्यूएएस असेसर डॉ धनंजय ने बताया कि निचले पायदान के स्वास्थ्य केंद्रों का प्रमाणीकरण होना सीधे तौर पर सूबे में बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ होने का संकेत है। इसका बड़ा फायदा एक ऐसे समुदाय को होगा जो सुदूर क्षेत्रों में रहते हैं। राज्य स्वास्थ्य के इंडिकेटरों में भी इससे व्यापक वृद्धि होगी। पांच और स्वास्थ्य केंद्र को मिल सकता है एनक्यूएएस प्रमाणीकरण जून माह में ही राज्य के पांच जिलों के पांच अन्य स्वास्थ्य केंद्रों के एनक्यूएएस प्रमाणीकरण के लिए असेसमेंट कार्य किया जा रहा है। जिन पांच स्वास्थ्य केंद्रों ें असेसमेंट कार्य किया जा रहा है उनमें पटना जिला का संदलपुर यूपीएचसी, पूर्णिया का रानीपतरा एपीएचसी, मुजफ्फरपुर का यूपीएचसी कन्हौली, बक्सर का सीएचसी सिमरी, बेगूसरास का यूपीएचसी तेलिया पोखर आदि शामिल है। पहले चरण में इन सभी स्वास्थ्य केंद्रों का राज्य स्तरीय प्रमाणीकरण किया जाएगा। एनक्यूएएस प्रमाणपत्र के लिए न्यूनतम अर्हता है 70 प्रतिशत अंक अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं का एनक्यूएएस के चेक लिस्ट के अनुसार मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाता है। पहले राज्यस्तरीय टीम द्वारा अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं का निरीक्षण कर वहां उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी एकत्रित की जाती है। एकत्रित जानकारी के आधार पर संबंधित अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं के लिए अंक प्रदान किया जाता है। 70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त होने पर सम्बंधित अस्पताल को राज्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा राज्य स्तरीय एनक्यूएएस प्रमाणपत्र जारी किया जाता है। उसके बाद संबंधित अस्पताल राष्ट्रीय एनक्यूएएस प्रमाणपत्र के लिए पात्र बन जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर एनक्यूएएस प्रमाणपत्र के लिए आवेदन करने पर नेशनल टीम द्वारा फिर से अस्पताल का निरीक्षण किया जाता है। इस मूल्यांकन के आधार पर स्वास्थ्य केंद्र को फिर से प्रत्येक मानकों में 70 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करना होता है। तभी उसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रमाणीकृत होगा।

अभा मारवाड़ी महिला समिति का राज्य कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला समिति की सिटी शाखा द्वारा रविवार को गुरु गोविंद सिंह लिंक पथ एक होटल के परिसर में प्रथम प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक का आयोजन किया गया। इसमें 20 शाखाओं से सौ से अधिक सदस्यों की उपस्थिति हुई। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती अंजू सरावगी, राष्ट्रीय सचिव श्रीमती निशा मोदी, प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती सुमन सराफ, प्रांतीय सचिव ज्योति सुंदरका, प्रांतीया कोषाध्यक्ष श्रीमती सोनी सरावगी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती मीना गुप्ता, राष्ट्रीय अंचल उपाध्यक्ष श्रीमती मीना तोदी, निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती नीना मोटवानी, सिटी शाखा अध्यक्ष श्रीमती विनीता डोकानिया की उपस्थिति में बैठक की कार्रवाई शुरू हुई। बैठक में अहम मुद्दे पर चर्चा एवं राष्ट्रीय आचार द्वारा दिशा-निर्देश दिया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष के द्वारा चार प्रोजेक्ट कराए गए। इसमें एक जरूरतमंद महिला को सब्जी बेचने के लिए ठेला प्रदान कराया गया। आरपीएम कॉलेज को व्हीलचेयर प्रदान किया गया, एक बेहद गरीब महिला दुर्गा देवी को जीविकोपार्जन के लिए सिलाई मशीन प्रदान की गई और संध्या कुमारी नामक एक जरूरतमंद लड़की को स्कूल जाने के लिए साइकिल दी गई।

महाप्रबंधक ने दानापुर एवं पटना जं. स्थित रनिंग रूम एवं क्रू लॉबी व लॉन्ड्री का किया गया निरीक्षण

हाजीपुर। महाप्रबंधक तरूण प्रकाश द्वारा दानापुर स्थित रनिंग रूम एवं क्रू लॉबी एवं पटना जं. स्थित क्रू लॉबी का निरीक्षण किया गया । इस दौरान उन्होंने क्रू लॉबी एवं रनिंग रूम में उपस्थित लोको पायलट से संरक्षा से जुड़े विविध पहलुओं से अवगत हुए। विशेष रूप से रढअऊसे बचाव एवं सिगनलिंग के संबंध में उन्होंने पूछताछ की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने रनिंग रूम में उपस्थित सुविधाओं एवं स्वच्छता का भी जायजा लिया एवं रनिंग रूम में उपस्थित के रनिंग कर्मचारियों से इस संबंध में फीडबैक भी लिया। ट्रेनों में यात्रियों को और बेहतर लिनन सेवा उपलब्ध कराने हेतु कई कदम उठाए गए हैं ।इसी क्रम में आज महाप्रबंधक महोदय द्वारा दानापुर मैकेनाइज्ड लॉन्ड्री का निरीक्षण किया गया ।

मुख्यमंत्री ने निमार्णाधीन फोर लेन पथ परियोजना की प्रगति का लिया जायजा, निर्माण कार्य में तेजी लाने का दिए निर्देश

मीठापुर-महुली फोरलेन का निर्माण कार्य दिसंबर तक होगा पूरा

- यह पथ बौद्ध तीर्थ स्थलों गया एवं राजगीर को फोर लेन सड़क संपर्कता भी प्रदान करेगा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

सीएम बोलें- निर्माण कार्य पूर्ण होने से पटना शहर में जाम की समस्या से निजात मिलेगी

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को निमार्णाधीण मीठापुर-सिपारा-महुली-पुनपुन फोर लेन पथ परियोजना की प्रगति का जायजा लिया। निमाणाधीन मीठापुर-सिपारा-महुली-पुनपुन फोर लेन पथ परियोजना के निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्य की प्रगति की जानकारी ली। इस दौरान उन्हें बताया गया कि पटना के मीठापुर से सिपारा, परसा और महुली होते हुए पुनपुन तक फोर लेन पथ का निर्माण कार्य तेजी से किया जा रहा है। इस पथ की लंबाई 11 किलोमीटर है, जिसमें 7.5 किलोमीटर फोर लेन एलिवेटेड पथ शामिल है। निर्माण कार्य 2 फेज में किया जा रहा है। पहले फेज के निर्माण कार्य के अंतर्गत सिपारा-परसा-महुली फोर लेन की लंबाई 6.7 किलोमीटर है, जिसमें 5.4 किलोमीटर एलिवेटेड पथ है। सिपारा के पास इस पथ को पटना न्यू बाइपास (एन0एच0-31) में फोर लेन संपर्क पथ से इसे जोड़ा जा रहा है। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया है कि पहले फेज के निर्माण कार्य को इस वर्ष के दिसंबर माह के पूर्व पूर्ण करें। फेज-2 के निर्माण कार्य के अंतर्गत मीठापुर-सिपारा तथा महुली-पुनपुन फोर लेन पथ का निर्माण कार्य किया जा रहा है। इसकी कुल लंबाई 4.3 किलोमीटर है, जिसमें मीठापुर से सिपारा तक 2.1 किलोमीटर एलिवेटेड पथ है। इसका निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर मीठापुर-महुली एलिवेटेड पथ से संपतचक पथ को भी जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने निर्देश देते हुये कहा कि मीठापुर-सिपारा-महुली-पुनपुन फोर लेन पथ परियोजना के निर्माण कार्य में तेजी लायें और जल्द पूर्ण करें। मीठापुर-सिपारा-महुली-पुनपुन फोर लेन पथ का निर्माण कार्य पूर्ण होने से पटना शहर में जाम की समस्या से निजात मिलेगी तथा पुनपुन एवं संपत चक क्षेत्रों से आवागमन सुविधाजनक हो जायेगा। यह पथ पुनपुन में पटना-गया-डोभी (एनएच-83) से जुड़ता है, जिससे पटना एवं गया के बीच आवागमन में काफी सुविधा हो जायेगी। यह पथ बौद्ध तीर्थ स्थलों गया एवं राजगीर को फोर लेन सड़क संपर्कता भी प्रदान करेगा। ये रहें मौजूद : निरीक्षण के दौरान जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी, सांसद संजय कुमार झा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, पथ निर्माण विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, मुख्यमंत्री के सचिव अनुपम कुमार, पटना प्रमण्डल के आयुक्त कुमार रवि, मुख्यमंत्री सचिवालय के विशेष सचिव डॉ चन्द्रशेखर सिंह, पटना के जिलाधिकारी शीर्षत कपिल अशोक सहित अन्य वरीय अधिकारी एवं अभियंतागण उपस्थित थे।

नीट में बड़े लेवल पर धांधली हुई, एनटीए के डीजी को हटाने से कुछ नहीं होगा : अखिलेश

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बोलें- छात्रों के मेरिट के साथ न्याय होना चाहिए

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) की ओर से आयोजित नीट में कथित धांधली को लेकर छात्रों में आक्रोश देखने को मिल रहा है। परीक्षा को फिर से कराने की मांग को लेकर छात्र संघर्ष कर रहे हैं। इस मामले में छात्रों को विपक्षी दलों का भी साथ मिला है। मुख्य विपक्षी कांग्रेस इस मुद्दे पर केंद्र सरकार को लगातार निशाने पर ले रही है। केंद्र सरकार ने पूरे मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी है और एनटीए के डीजी को पद से हटा दिया है। एनटीए के डीजी को पद से हटाए जाने के बाद बिहार कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद अखिलेश प्रसाद सिंह ने प्रतिक्रिया दी है। अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि इसका मतलब साफ है कि परीक्षा में बड़े लेवल पर धांधली हुई है। हमलोग जो कह रहे थे, वह साबित हो गया। लेकिन, केवल एनटीए के डीजी को हटाने से कुछ नहीं होगा। इस धांधली की जांच करके जितने लोगों की संलिप्तता है, उन सबको दंड देना चाहिए, ताकि फिर से इस तरह की घटना ना हो। पढ़ने-लिखने वाले छात्रों के मेरिट के साथ न्याय होना चाहिए। बिहार के मोतिहारी में पुल गिरने पर प्रतिक्रिया देते हुए उन्होंने कहा कि यह हर रोज की कहानी है। जिस तरह से कॉन्ट्रैक्टर नियुक्त होते हैं और सरकार में काम कर रहे मंत्री, अफसर से उनका संबंध होगा तो इस तरह के काम होते रहेंगे, बिहार के लोगों को देखना चाहिए। बता दें कि मोतिहारी के घोड़ासहन प्रखंड में अमवा से चैनपुर स्टेशन जाने वाली सड़क पर बन रहा पुल शनिवार की रात ध्वस्त हो गया था। इस पुल को करीब डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बनाया जा रहा था।

परिवार नियोजन को लेकर 27 जून से चलेगा जागरूकता अभियान : मंगल

27 जून से लेकर 10 जुलाई तक चलेगा सामुदायिक उत्प्रेरण पखवाड़ा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि परिवार नियोजन सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराकर अवांछित गर्भधारण वृद्धि में कमी की जा सकती है। इससे मातृ मृत्यु दर एवं नवजात स्वास्थ्य पर होने वाले प्रतिकूल प्रभाव को भी कम किया जा सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए 11 जुलाई को मनाए जाने वाले विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर आम लोगों को 27 जून से लेकर 31 जुलाई तक विभिन्न कार्यक्रमों के तहत परिवार नियोजन सेवाओं पर जागरूक किया जाएगा। राज्य में 27 जून से लेकर 10 जुलाई तक सामुदायिक उत्प्रेरण पखवाड़ा का आयोजन होगा। वहीं 11 जुलाई से लेकर 31 जुलाई तक जनसंख्या स्थिरता पखवाड़ा का आयोजन होगा। इस वर्ष जनसंख्या स्थिरता पखवाड़ा का थीम विकसित भारत की नई पहचान, परिवार नियोजन हर दंपति की शान रखा गया है।

श्री पांडेय ने कहा कि इस दौरान पूरे राज्य में जनसंख्या स्थिरीकरण के प्रति लोगों के बीच जागरूकता उत्पन्न करने, परिवार नियोजन कार्यक्रम अंतर्गत उपलब्ध सेवाओं की जानकारी आमजन तक पहुंचाने तथा योग्य दंपतियों को इच्छित सेवा प्रदान करने पर विशेष बल दिया जाएगा। जनसंख्या स्थिरता पखवाड़ा के दौरान अन्य विभागों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से जिला एवं प्रखंड स्तर पर बैठक भी आयोजित किए जाएंगे। इससे समुदाय स्तर पर आम लोगों को परिवार नियोजन सेवाओं के बारे में जागरूक करने में आशा, आंगनबाड़ी सेविका, जीविका दीदी एवं विकास मित्र आदि भागीदारी सुनिश्चित कर सकेंगे। श्री पांडेय ने कहा कि पखवाड़े के दौरान जनसंख्या स्थिरीकरण की जरूरत, सही उम्र में शादी,पहले बच्चे में देरी, बच्चों के बीच सही अंतर एवं छोटे परिवार के लाभ के बारे में आमजनों को जानकारी दी जाएगी। वहीं आमजनों में जागरूकता बढ़ाने के लिए ई-रिक्शा(सारथी) के माध्यम से राज्य स्वास्थ्य समिति के दिशा-निर्देश में रूट चार्ट के मुताबिक प्रत्येक प्रखंड में 5 दिन(27 जून से 10 जुलाई के बीच) प्रचार-प्रसार भी किया जाएगा। साथ ही जुलाई माह में परिवार नियोजन सेवाओं की महत्ता को बढ़ाने के लिए सास-बहू-बेटी सम्मलेन का आयोजन आंगनबाड़ी केन्द्रों, स्वास्थ्य उपकेंद्रों एवं शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर किए जाएंगे।

अपराधी कितना भी बड़ा हो उसे बख्शा नहीं जाएगा : विजय

- हर्ष राज के परिजनों से मिले उप मुख्यमन्त्री, कार्रवाई का दिया भरोसा
- बोलें-अपराधियों को स्पीडी ट्रायल कर दिलाई जाएगी सजा

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा वैशाली के मझौली पंचायत निवासी अजित कुमार के पैतृक घर पहुंच कर शोकसंतप्त परिजनों से मिलकर सांत्वना व्यक्त की। उन्होंने परिजनों को ढाढ़स बंधाते हुए कहा कि सरकार अपराधियों पर स्पीडी ट्रॉयल कर सजा दिलाएगी। वैशाली जिला का रहने वाला अजित कुमार के पुत्र हर्ष राज की पटना में पिछले दिनों निर्मम हत्या कर दी गयी थी। श्री सिन्हा उसके पैतृक घर ग्राम मझौली पहुँचकर शोकाकुल परिजनों से मिले तथा इस केस के स्पीडी ट्रायल हेतु आवश्यक कार्रवाई के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उप मुख्यमंत्री सिन्हा पुलिस अधिकारियों से इस मामले को जांच की प्रगति के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों से इस मामले की जांच कर अविलंब करवाई करने की निर्देश दिया। ग्रामीणों ने उप मुख्यमंत्री को बताया कि हर्ष होनहार युवक था। उसकी हत्या से गांव के लोग मर्माहत हैं। उप मुख्यमंत्री ने स्पष्ट तौर से कहा कि सरकार अपराधियों , माफियाओं पर लगाम लगाने के लिए दृढसंकल्पित है। कोई भी अपराधी कितना भी बड़ा हो उसे बख्शा नहीं जाएगा।

बिहार को शर्मसार करने का खेल बंद करें :

वहीं, उपमुख्यमंत्री ने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर हमला बोला है। श्री सिन्हा ने कहा कि संवैधानिक पद पर बैठे नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव प्रशासन को धमकी और लोगों के बीच उन्माद पैदा करने की मानसिकता के साथ फोटो और वीडियो के साक्ष्य के आधार ब्लैकमेलर की भूमिका निभाकर डराने और धमकाने का काम न करें। ऐसी भाषा आपराधिक मानसिकता का सूचक है। आपको खुली चुनौती है कि 24 घंटे के भीतर ऐसा कोई साक्ष्य है तो उसे सार्वजनिक करें लोगों के बीच भ्रम फैलाने और बिहार को शर्मसार करने का खेल बंद करें।

राजद के लिए भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार : राजीव

- हवाबाजी के बजाए पेपर लीक माफिया से संबंधों पर जवाब दे राजद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि पेपर लीक माफिया से तेजस्वी यादव के पीएस से संबंध होने की आ रही खबरों पर कुछ ठोस बताने के बजाए के राजद के नेता अभी भी बात को गोल-गोल घुमाने की कोशिश कर रहे हैं। इससे लोगों के मन में संदेह उमड़ने लगा है। राजद के भ्रष्टाचारी रवैए और उनके नेताओं की हवाबाजी से लोगों को लगने लगा है कि कुछ न कुछ गड़बड़ जरुर है। उन्होंने कहा कि ऐसे भी राजद का इतिहास गवाह है कि प्रदेश में होने वाले अधिकांश घोटालों के तार कहीं न कहीं इनके नेताओं से जरुर जुड़ जाते हैं। हकीकत में इनके लिए भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार है। इसीलिए इनके राज में राशन से लेकर सड़क तक भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते थे। याद करें तो इन्होने बाढ़ पीड़ितों को भी नहीं बख्शा था। यहां तक कि जानवरों का चारे से लेकर अलकतरा तक डकारने में इन्हें कोई परेशानी नहीं हुई।

इनके भ्रष्टाचारी रवैए के कारण ही सरकारी दफ्तरों में कोई भी काम घूस दिए बिना नहीं होता था। छात्रों से एडमिशन से लेकर पास करवाने तक के नाम पर पैसे वसूले जाते थे। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि आज भी राजद नेताओं के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया है। इनके सुप्रीमो को जहां आज भी कोर्ट के चक्कर लगाना पड़ रहा है, वहीं इनके युवराज नाबालिग रहते ही करोडपति बन गये। गरीबों का खून चूस और उनकी जमीनें लिखवाकर चौथे दर्जे की नौकरी देने वाले यह लोग अभी जनता का हक मारने की फिराक में हैं। इसीलिए जनता का ध्यान अपने भ्रष्टाचार से हटाने के लिए यह लोग सरकार के खिलाफ अनर्गल प्रलापों में व्यस्त रहते हैं। उन्होंने कहा कि राजद के नेताओं को यह समझ लेना चाहिए कि जिस तरह वह अपने युवराज की करोड़ों की संपत्ति और गरीबों की हड़पी जमीनों पर चुप्पी साधे बैठे हैं, पेपर लीक मामले में वैसा नहीं चलने वाला। सरकार की जांच में दूध का दूध और पानी का पानी होना तय है। इसलिए बेहतर होगा कि वह पहले ही मामले का खुलासा कर दें।

नीट पेपर लीक मामले में मुख्य सूत्रधार को बचाने की कोशिश : गगन

- बोलें-भाजपा और जदयू का असली चेहरा उजागर

पटना। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा है कि केन्द्र और बिहार की एनडीए सरकार का इकबाल अब पुरे तौर पर खत्म हो चुका है। भाजपा और जदयू के नेता अब लालू प्रसाद और तेजस्वी को गाली देकर अपने कुकृत्यों को नहीं छुपा सकते। चाहे देश एवं प्रदेश के लाखों छात्र-युवाओं का जीवन बर्बाद करने का मामला हो, कानून-व्यवस्था का मामला हो या विकास के नाम पर लूट-खसोट और भ्रष्टाचार का मामला हो। भाजपा और जदयू का असली चेहरा सबके सामने आ चुका है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि नीट परीक्षा में पेपर लीक मामले में जिस प्रकार मुख्य सूत्रधार को बचाने की कोशिश हो रही है। एनटीए के डीजी को बली का बकरा बना कर मामले की लीपापोती करने का प्रयास हो रहा है। पेपर लीक के अनेकों साक्ष्य सामने आने के बाद भी नीट परीक्षा को रद्द नहीं किए जाने से स्पष्ट है कि पेपर लीक मामले को सरकार का संरक्षण प्राप्त है। इस मामले में अबतक जीन लोगों की गिरफ्तारी हुई है या जिनके नाम उजागर हुए हैं उनमें से अधिकांश किसी न किसी रूप में सत्ताधारी दलों से जुड़े हुए हैं। यही स्थिति राज्य में कानून व्यवस्था को लेकर है। अब तो दिनदहाड़े व्यस्ततम इलाके में भी अपराधी बेधड़क होकर अपराध करते नजर आ रहे हैं। राजधानी पटना में तो अब दिन की शुरूआत हीं किसी न किसी की हत्या से होती है। आज भी सबेरे -सबेरे एक व्यवसाई की हत्या कर दी गई और हत्या का आरोप एक वरीय भाजपा नेता और पटना के महापौर के लड़के पर लगाया गया है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि यही स्थिति आज विकास के नाम पर हो रहे लूट-खसोट और भ्रष्टाचार से है। एक सप्ताह के अन्दर हीं तीन-तीन निमाणार्धीन पूल ध्वस्त हो गए। आज चम्पारण के घोड़ासाहन में एक निमाणार्धीन पूल के तीन पिलर ध्वस्त हो गए। इसके पूर्व सिवान के महाराजगंज में नहर के उपर बना पूल गिर गया। उसके एक दिन पहले अररिया में एक निमाणार्धीन पूल का तीन पिलर धराशाई हो गया था। पर एनडीए नेताओं का एक सूत्री कार्यक्रम केवल लालू जी और तेजस्वी जी को गाली देना रह गया है। देश और प्रदेश के लोग यह जानना चाहते हैं कि दस वर्षों से केन्द्र में और लगभग अठारह वर्षों से बिहार में भाजपा और जदयू सरकार में रहकर आखिर कब तक अपनी नाकामियों, भ्रष्ट कारगुजारियों और कुकृत्यों का ठीकरा बेशर्मी के साथ विपक्षी नेताओं पर फोड़ते रहेंगे ?

एनडीए की मजबूती के लिए हमेशा तैयार रहें रालोमो कार्यकर्त्ता: उपेन्द्र

- शाहाबाद एवं मगध क्षेत्र ब रालोमो नेताओं के साथ हुई लोकसभा चुनाव

पटना। राष्ट्रीय लोक मोर्चा बिहार प्रदेश कार्यालय में शाहाबाद एवं मगध क्षेत्र के प्रमुख पार्टी कार्यकताओं व नेताओं की बैठक पार्टी के प्रभारी प्रदेश अध्यक्ष मदन चौधरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। समीक्षा बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय लोक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व भारत सरकार के पूर्व मंत्री उपेन्द्र कुशवाहा ने संबोधित करते हुए कहा कि रालोमो के सभी कार्यकर्त्ता एनडीए की मजबूती के लिए हमेशा तैयार रहें। समीक्षा बैठक में शाहाबाद व मगध क्षेत्र में एन.डी.ए की हुई हार पर विस्तृत चर्चा हुई। जिसमे सभी कार्यकताओं ने एनडीए की हार को एनडीए गठबंधन की राष्ट्रीय बैठक में उठाने की बात राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री उपेन्द्र कुशवाहा से कही है। उक्त आशय की जानकारी देते हुए पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता राम पुकार सिन्हा ने बताया इस बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 5 एवं 6 जुलाई को पटना में दो दिवसीय राष्ट्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों, जिला अध्यक्षों, सभी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं अध्यक्षगण की बैठक आयोजित की गई है, जिसमें पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे आज की समीक्षा बैठक में पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष अंगद कुशवाहा, जंगबहादुर कुशवाहा, प्रदेश महासचिव सुभाष चंद्रवंशी, मुख्यालय प्रभारी प्रशांत पंकज, रिंकू सोनी, सुभाष कुशवाहा, ब्रजेन्द्र कुमार पप्पू, अशोक राम, पप्पू वर्मा, आर के सिन्हा, अनंत कुमार गुप्ता, रोहतास जिला अध्यक्ष कपिल कुशवाहा, अशोक मेहता, उमाशंकर सिंह, रविन्द्र राम, रोहित कुशवाहा, विन्ध्याचल सिंह कुशवाहा, ई स्मृति कुमुद, राजीव कुमार बबलू, कार्यालय सचिव अशोक कुशवाहा मौजूद थे।

दलितों के बिजली कनेक्शन काटने पर रोक लगाए सरकार : भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि बिहार में भीषण गर्मी पड़ रही है और राज्य सरकार 24 घंटे बिजली की आपूर्त्ति नहीं कर पा रही हैं। प्रचंड गर्मी से लोग परेशान है। बिहार में लू लगने से सैकड़ों लोगों की मौत हो गई है। वहीं राज्य सरकार पूरे बिहार में दलितों का बिजली कनेक्शन काट रही है। वैशाली, भोजपुर सहित दर्जनों जिलों से दलितों के बिजली कनेक्शन काटने की शिकायत मिली है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दलितों के बिजली कनेक्शन काटने की मामले में हस्तक्षेप करे और कनेक्शन काटने पर रोक लगाए। जिन दलित और गरीब परिवारों के बिजली कनेक्शन काटे गए हैं उनके घरों में कनेक्शन जोड़ा जाए और दोषी अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई करे। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि सरकार करोड़ों रुपये के बिजली बिल के बकायेदारों को बिलजी कनेक्शन नहीं काटती है। वहीं भोजपुर, हजीपुर सहित राज्य के सभी जिलों में अभियान चलाकर दलित परिवारों का कनेक्शन काटा गया है। अन्य लोगों की तरह इस प्रचंड गर्मी में गरीबों को भी बिजली की जरूरत है। उन्होंने राज्य सरकार से 24 घंटे बिजली की आपूर्त्ति सुनिश्चित करते हुए दलितों के बिजली कनेक्शन काटने पर रोक लगाने की मांग की है।

सुशासन और विकास की राजनीति से प्रभावित है बिहार की जनता : ललन

पटना। हाजीपुर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी रहे डॉ सुरेंद्र कुमार पासवान एवं सामाजिक कार्यकर्ता विमला देवी ने रविवार को जनता दल यू का दामन थामा। पार्टी के प्रदेश कार्यालय, पटना में विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन कुमार सर्राफ ने पर्ची देकर उन्हें पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण करवाया। इस मौके पर मुख्य रूप से विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, पूर्व राज्यसभा सांसद अनिल कुमार हेगडे एवं पार्टी के प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी चंदन कुमार सिंह मौजूद रहें। इस दौरान विधान पार्षद ललन कुमार सर्राफ ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सुशासन और विकास की राजनीति के बदौलत प्रत्येक बिहारवासियों के दिल में बसते हैं। जदयू के विचारधारा और नीतीश कुमार के विकासकार्यों से प्रभावित होकर सकारात्मक सोच रखने वाले लोग पार्टी का दामन थाम रहे हैं। नीतीश कुमार के प्रति बिहार की जनता का अटूट विश्वास दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है।

बागवानी को लेकर किसानों को हरसंभव मदद करेगी सरकार : मंगल

- बोलें-महोत्सव में 29.00 लाख की आम के उत्पाद की बिक्री हुई
- बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने उठाया आम महोत्सव का लुफ्त

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्वाद एवं संस्कृति की खुशबू बिखेरते आम महोत्सव, 2024 का हुआ समापन

ज्ञान भवन में आयोजित दो दिवसीय आम महोत्सव का रविवार को समापन हो गया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री ने कहा कि दो दिनों में आम के प्रति आमजनों में जो चर्चा हुई है उसका सकारात्मक परिणाम आम की खेती से लेकर उसके विपणन तक में मदद करेगा। कल राज्य से 500 किलो आम न्यूजीलैण्ड निर्यात किया गया है। किसानों को आर्थिक लाभ मिलने से आम के उत्पादन में मदद मिलेगा। दो दिनों के इस आम महोत्सव में 29.00 लाख रूप्ये से अधिक के आम, आम के पौध रोपण सामग्री तथा आम के उत्पाद की बिक्री हुई है। उन्होंने कहा कि आम के उत्पादन को क्लस्टर में बढ़ावा देने के लिए विशेष कार्य योजना एवं सुविधाएं किसानों के लिए विशेष योजना के माध्यम से विभाग लेकर आएगा। कृषि मंत्री ने कहा कि आम महोत्सव में राज्य के विभिन्न जिलों के 497 आम उत्पादक कृषकों एवं उद्यमियों के द्वारा आम एवं इसके उत्पाद के 4018 प्रदर्शों के साथ भाग लिया गया। प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न वर्गों के अलग-अलग शाखाओं का मूल्यांकन वैज्ञानिकों की कमिटी द्वारा की गई एवं प्रत्येक वर्ग के हर एक शाखा में तीन उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कृषकों एवं कलाकारों को पुरस्कृत किया गया। चयनित 45 प्रतिभागियों को प्रथम, 38 प्रतिभागियों को द्वितीय एवं 30 प्रतिभागियों को तृतीय अर्थात कुल 78 चयनित प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र के साथ क्रमशः 5 हजार रुपए, 4 हजार रुपए एवं 3 हजार रुपए पारितोषिक दिया गया। विभिन्न श्रेणियों में सबसे ज्यादा अंक पाने वाले अशोक कुमार चौधरी, पिता स्व राजेन्द्र चैधरी, तिलकपुर, सुल्तानगंज, भागलपुर को इस आम महोत्सव में आम शिरोमणि की उपाधि प्रदान की गई एवं उन्हें प्रमाण-पत्र, मोमेन्टो के साथ 10 हजार रुपए का विशिष्ट पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। पी के शाही, महाधिवक्ता, ने अपने संबोधन में कहा कि उन्हें अपार हर्ष एवं प्रसन्नता हो रही है कि राज्य में इतने प्रकार के आम के प्रभेद/प्रदर्श किसानों द्वारा लगाए गए हैं। भागलपुर और वैशाली के किसान आम पर काफी काम कर रहे हैं। अगर हमें आम को राज्य से निर्यात करना है तो हमें अन्तर्राष्ट्रीय मानक के अनुसार आम उत्पादन करना होगा। कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने कहा कि आम बिहार का गौरव है। यह बहुत खुशी की बात है कि राज्य आम उत्पादन में उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश के बाद तीसरे स्थान पर है। किसानों के द्वारा आम के आकार का छोटा होने की समस्या बतायी गयी है, जिसे कृषि विश्वविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से इस समस्या का निदान किया जायेगा।

किसानों व प्रतिभाग छात्रों को किया गया पुरस्कृत :

भागलपुर के आम उत्पादक कृषक अशोक कुमार चौधरी 35 अंकों के साथ विशिष्ट पुरस्कार आम शिरोमणि से नवाजे गये। अशोक कुमार चौधरी के द्वारा विभिन्न वर्गों में कुल 8 पुरस्कार प्राप्त किया गया, जिसमें 5 प्रथम, 1 द्वितीय एवं 2 तृतीय पुरस्कार शामिल है। आम महोत्सव में राज्य के विभिन्न जिलों के 74 विजेता कृषकों को 113 प्रदर्शों के लिए कुल राशि 4,77,000 रुपए एवं प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया। पुरस्कार प्राप्त करने में 15 पुरस्कार तथा 67,000 रुपए पुरस्कार राशि के साथ वैशाली जिला अव्वल, 14 पुरस्कार तथा 58 हजार रुपए पुरस्कार राशि के साथ भागलपुर जिला द्वितीय एवं 14 पुरस्कार तथा 57,000 रुपए पुरस्कार राशि के साथ पटना जिला तृतीय स्थान पर रहा। 05-10 साल के 66 बच्चों के बीच आम खाओ प्रतियोगिता में आदर्श राज, वैशाली ने प्रथम, वामी मेविका, पटना ने द्वितीय तथा विप्लव कुमार झा, मधुबनी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन बच्चों ने क्रमशः 9.84 सेकेण्ड, 10.3 सेकेण्ड तथा 17.83 सेकेण्ड में एक आम खाया। उन्होंने बताया कि 42 बच्चों के बीच आम फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अविराज साहनी, भट्टाचार्या रोड, पटना ने प्रथम, हर्षराज, पटना ने द्वितीय तथा रक्षित चतुर्वेदी, पटना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष आम खाओ तथा फैन्सी डेज्स प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की संख्या दुगुनी हो गई है।

चित्रकला प्रतियोगिता में 30 से अधिक स्कूलों के लगभग 300 बच्चों ने भाग :

, चित्रकला प्रतियोगिता में 30 से अधिक स्कूलों के लगभग 300 बच्चों ने भाग लिया, जिनमें समीक्षा आनन्द, माऊण्ट कार्मेल स्कूल, पटना ने प्रथम, रिद्यम, आर्मी पब्लिक स्कूल, दानापुर, पटना ने द्वितीय तथा आदित्य रंजन, राजकीय मध्य स्कूल, पटना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी विजेता बच्चों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। उन्होंने आगे बताया कि काफी संख्या में किसानों एवं आमजनों द्वारा इस दो दिवसीय महोत्सव का भ्रमण किया गया। आम महोत्सव में 20 से अधिक ताजे आम के पौधे तथा आम से प्रसंस्कृत पदार्थों के स्टॉल कृषकों कृषक उत्पादक समूहों तथा उद्यमियों द्वारा लगाये गये थे, जिनमें पतंजली फूड्स लिमिटेड, हरिद्वार, अपना खेत बागान फाउन्डेशन, सीतामढ़ी, टोकरी फ्रेश फूड प्राईवेट लिमिटेड, मैंगोलिटिका फार्मर्स प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड, भागलपुर आदि शामिल हैं। साथ ही, आम से बनी मिठाइयों एवं अन्य खाद्य पदार्थों के स्टॉल अलग से लगाए गए थे। इन स्टॉलों के माध्यम से महोत्सव में आगन्तुक ताजे आम तथा आम आधारित खाद्य पदार्थों का आनन्द ले पाए। इसके साथ ही, आम संबंधित कई सेल्फी प्वाईन्ट आकर्षण का केन्द्र रहे। बिहार के आम का राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में संभावनाओं विषय पर चर्चा भी आयोजित की गई, जिसमें आम के निर्यातक, संस्थागत क्रेता, कृषक उत्पादक समूह के प्रतिनिधि आदि शामिल हुए। साथ ही, आम के किसानों का इन क्रेतागण के साथ वन-टू-वन क्रेता-बिक्रेता वार्ता भी करायी गयी। इस आयोजन में तकनीकी सत्र भी रखा गया, जिसमें बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर एवं आई सीएआर-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू के वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने किसान बंधुओं का आम से संबंधित विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्द्धन किया, जैसे कि आम की सघन खेती, आम के बगीचों का जीर्णोद्धार, आम विपणन में आपूर्ति तथा मूल्य श्रृंखला, आम का एकीकृत कीट प्रबंधन आदि।

ये रहें मौजूद :

इस अवसर पर महाधिवक्ता पीकेशाही, सचिव, कृषि विभाग संजय कुमार अग्रवाल, कृषि निदेशक मुकेश कुमार लाल, उद्यान निदेशक अभिषेक कुमार, अपर सचिव शैलेन्द्र कुमार, संयुक्त सचिव द्वय मदन कुमार एवं मनोज कुमार, अपर निदेशक (शष्य) धनंजयपति त्रिपाठी, संयुक्त निदेशक, उद्यान राधा रमण, उप निदेशक उद्यान संजय कुमार सिन्हा, पवन कुमार, देवनारायण महतो, नितेश कुमार राय, राकेश कुमार, कृषि वैज्ञानिकगण सहित विभागीय पदाधिकारी एवं कर्मचारीगण तथा बड़ी संख्या में राज्य के सभी जिलों से आये किसान/उद्यमी और आगन्तुक मौजूद थे।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

शराब कारोबारी गिरफ्तार

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के रामपुरा गांव से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर 3 लीटर देसी शराब के साथ एक कारोबारी भोला पासवान को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार युवक के विरुद्ध आगे कार्रवाई के लिए समस्तीपुर कोर्ट भेज दी गई है। वहीं दूसरी तरफ चकमेहसी थाना क्षेत्र के अकौना गांव से पुलिस ने एक महिला शराब कारोबारी को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार कारोबारी की पहचान सुबन साहनी के पत्नी अर्चना कुमारी के रूप में हुई है। चकमेहसी थानाध्यक्ष दिव्य ज्योति कुमारी ने बताया कि गिरफ्तार महिला कारोबारी को आगे की कार्रवाई के लिए समस्तीपुर कोर्ट भेज दिया गया है।

सर्पदंश से हुई महिला की मौत

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मथुरापुर गांव में शनिवार की शाम जहरीला सांप काटने से एक महिला की मौत हो गई है। मुखिया राधा देवी ने बताया कि मृतक महिला की पहचान मथुरापुर के स्वर्गीय धमचंद प्रसाद सिंह के 65 वर्षीय पत्नी गीता देवी के रूप में हुई है

मारपीट में जख्मी युवक की ईलाज के दौरान हुई मौत

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के रतवारा गांव में मारपीट की घटना में जख्मी युवक मोहम्मद मोइन के 22 वर्षीय पुत्र मोहम्मद जुबेर का पटना में ईलाज के दौरान मौत हो गई। लोगों के मुताबिक विगत 10 दिन पूर्व गांव के ही कुछ असामाजिक तत्व के युवक घर से बुलाकर सुनसान जगह ले गया। जहां मारपीट कर उसे गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। वहीं अंधेरा होने के बाद घर के लोग उक्त युवक को खोजबीन किया। खोजबीन के दौरान हीं गांव के ही एक आम के पेड़ के नीचे बेहोशी की अवस्था में जख्मी युवक पड़ा हुआ था। लोगों ने उसे जख्मी की अवस्था में ईलाज के लिए डीएमसीएच दरभंगा ले गया। जहां ईलाज के दौरान गंभीर स्थिति को देखते हुए पटना रेफर कर दिया गया। पटना में ईलाज के दौरान शनिवार को मौत हो गई। मरतक युवक का शव रतवारा गांव में आते ही कोहराम मच गया। वहीं परिजनों ने उक्त युवक की हत्या होने की आशंका जाता रहे हैं। समाचार प्रेषण तक मिरतक युवक का शव गांव में ही रखा हुआ है। वैसे पुलिस घटना की सूचना पर पहुंचकर जांच कर रही है। वहीं प्रशिक्षु डीएसपी सह थाना अध्यक्ष नीतीश चन्द्र धारियां ने बताया कि मृतक के परिजन के द्वारा आवेदन मिलने के बाद आगे कार्रवाई किया जाएगा।

परीक्षा से पहले पेपर लीक होने से विद्यार्थी हताश

विभूतिपुर, भारत का छात्र फेडरेशन एसएफआई समस्तीपुर जिला अध्यक्ष नीलकमल ने कहा नीट परीक्षा में पेपर लीक हो जाने के कारण विद्यार्थी हताश और निराश हो जाती हैं। नीट की तैयारी करने की इच्छा नहीं करती है। केंद्र तथा राज्य की सरकार में बने मंत्री विधायक के माध्यम से पेपर लीक होता है लेकिन कोई सरकार इस पर एक्शन लेने को तैयार नहीं है। हर एग्जाम का पेपर लीक परीक्षा से पहले हो जाती है। विश्व गुरु बनने वाली यह सरकार पेपर लिक नहीं रोक सकती है और छात्राओं का भविष्य अंधकार की ओर ले जाने की कोशिश सरकार के द्वारा की जा रही है। छात्र संगठन एसएफआई मांग करती है कि नीट पेपर लिक मामला में नामजद आरोपी को तथा इसमें शामिल नेताओं को भी जेल के अंदर बंद किया जाए ताकि आने वाले भविष्य में पेपर लीक का मामला सामने नहीं आए।

अमैठी गांव में तीन लोगों पर विद्युत चोरी का मामला दर्ज

बेनीपुर(दरभंगा)। बेनीपुर प्रखंड के 11 गांव में बिजली चोरी के विरुद्ध छापामारी अभियान विद्युत अवर प्रमंडल सकरी के क्षेत्राधिकार में सहायक विद्युत अभियंता सौरव कुमार के नेतृत्व में चलाया जा रहा है। विभागीय सूत्रों के मुताबिक 21 जून को अमैठी गांव में तीन लोग मो वसीर, बुधन पासवान, कामेश्वर साह का बकाया बिल भुगतान नहीं होने पर विद्युत संबंध विच्छेद करने के बाद चोरी की बिजली जल रहा था। इन लोगों के विरुद्ध बहेड़ा थाना में एफआईआर जेई अतुल कुमार के आवेदन पर दर्ज किया गया है। वसीर पर 25907, बधन पर 32891 तथा कामेश्वर पर 31148 रुपये का जुमार्ना की राशि तय की गई है।

सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस समारोह आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस सह सम्मान समारोह का उद्घाटन शनिवार को मुख्य अतिथि मुजफ्फरपुर की मेयर निर्मला साहू , प्रसिद्ध गाइनो डॉक्टर कंचनमाला, संस्थान के पदाधिकारी द्वारा संयुक्त रूप दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर मुजफ्फरपुर शहर के विशिष्ट गण मान्य व्यक्ति शामिल हुए जिन्होंने समाजसेवा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई है।सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस पर मुजफ्फरपुर में समाजसेवा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले व्यक्तित्व को सम्मानित किया गया।इस अवसर पर संस्थान के पदाधिकारी द्वारा सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक कठपुतली कलाकार सुनील सरला को अंगवस्त्र एवं पौधा भेंट कर के सम्मानित किया गया एवं संयोजक बबली जी द्वारा विलुप्त हो रही कठपुतली के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य की प्रशंसा की।सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर मुजफ्फरपुर शहर के गणमान्य व्यक्ति में मुख्य रूप से सफल स्कूल की उषा जी,हीरालाल गुप्ता,एमजी स्कूल के निदेशक रोशन जी,संदीप जी,इनर व्हील क्लब मुजफ्फरपुर की प्रेसिडेंट रीना सिंह,रूपा सिन्हा,कठपुतली के महान कलाकार सुनील सरला,नुक्कड़ नाटक के जीतेश, राजीव जी,राहुल जी रंजीत जी,श्याम कुमार गुप्ता, डॉक्टर सैफ अली खान, डॉ कनुप्रिया , अमर त्रिशला केंद्र के रंजीत जी ,उषा जी,प्रभात सिंह, वैशाली ब्लू लाइन से संतोष जी ,अर्जुन जी,डॉ राजेश स्किन स्पेशलिस्ट ,बुनियाद केंद्र से विनोद कुमार गुप्ता जी, एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट से विनीत जी ,वृंदावन वृद्ध आश्रम से सुनील जी, पप्पू जी, पटना से रिटायर्ड डीजीपी अशोक कुमार गुप्ता जी की पत्नी आशा गुप्ता और प्रियंका गुप्ता की उपस्थिति रही।सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट की संयोजक बबली जी ने सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के द्वारा हुए कार्यों में जिन लोगों एवं संस्थान ने सहायता की उन सभी व्यक्तित्व को सम्मानित किया गया ।संस्थान की सदस्य बाहर के सहयोगी सदस्य के साथ साथ मीडिया बंधु को सम्मानित किया गया। संस्थान के तरफ से पूरे 1 साल में किए कार्यों की झलकियां प्रोजेक्टर के माध्यम से सबके सामने दिखाई गई ।सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस मुजफ्फरपुर में सम्मानित होने पर कठपुतली कलाकार सुनील सरला को चाइल्डसेफ के सचिव जयचंद्र कुमार, कठपुतली कला केन्द्र की सचिव प्रीति कुमारी,विंध्यवासनी देवी लोक कला संस्कृति मंच की सचिव लोक गायिका अनीता कुमारी, परफेक्ट सोल्यूशन सोसाइटी के सचिव अनिल कुमार ठाकुर, सरला श्रीवास युवा मंडल की अध्यक्ष सुमन कुमारी, सचिव अदिति ठाकुर,अमन चिल्ड्रेन की प्राचार्य बबीता ठाकुर, सरला श्रीवास सोशल कल्चरल रिसर्च फाउंडेशन के धीरज कुमार,सेवादार मंच के साई सेवादार अविनाश कुमार ने सोशल वर्कर फॉर वूमेन एंपावरमेंट के प्रथम स्थापना दिवस एवं संस्थान द्वारा हुए सम्मानित सरला श्रीवास सामाजिक सांस्कृतिक शोध संस्थान के संयोजक कठपुतली कलाकार सुनील सरला को बधाई व शुभकामनाएं दी।

अंचल कार्यालय में भ्रष्टाचार के खिलाफ सामूहिक इस्तीफा देंगे पंसस

प्रात : किरण संवादाता

बोचहा। अचल कार्यालय में बढ़ते भ्रष्टाचार और अधिकारियों एवं कर्मियों की कार्यशैली से आहत पंचायत समिति सदस्य और आमजन ने शनिवार को प्रखंड स्थित ई किसान भवन परिसर में बैठक की, वही बैठक को संबोधित करते हुए समिति सदस्य अनिल झा ने कहा कि प्रखंड मुख्यालय पर बिचौलिए सक्रिय हैं। बिचौलिए को ही आधिकारी जिला पार्षद, मुखिया, और पंचायत समिति सदस्य मानने लगे हैं। उन्होंने आगे कहा कि अंचल और हल्का कार्यालय पर अधिकारियों की लापरवाही की वजह से आमजनों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। हल्का कार्यालय पर अटर्नी द्वारा दाखिल खारिज, परिमारजन के लिए मोटी रकम का डिमांड किया जाता है, नहीं देने पर काम नहीं हो पाता है।,प्रखंड मुख्यालय से पंचायत स्तर तक फैला भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की बात कही।श्री झा ने कहा कि इसकी शिकायत प्रखंड विकास पदाधिकारी से की गई है, बिचौलिए पर कार्रवाई नहीं की गई तो सोमवार को जनप्रतिनिधि व आमजनों के साथ ब्लॉक मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही 15 दिनों के अंदर प्रखंड सह अंचल कार्यालय से भ्रष्टाचार खत्म हो नहीं हुई तो सभी पंचायत समिति सदस्य सामूहिक इस्तीफा देने और अमर अनशन पर बैठने की बात कही। बैठक में उपप्रमुख आसिफ नदीम फरीदी, प्रशांत कुमार, शहंशाह उर्फ डॉलर सहित अन्य थे।

राघोपुर दक्षिणी पंचायत की मनरेगा योजना में बिना काम किए ही हुई लाखों की निकासी

प्रात : किरण संवादाता

मनीगाछी(दरभंगा)। राघोपुर दक्षिणी पंचायत की मनरेगा योजना में बिना काम किए ही लाखों रुपए की निकासी का मामला सामने आया है।मृत कमला नदी की धारा से किसानों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वर्ष 20-21 में इस योजना को स्वीकृति दी गई थी। सुशील झा के खेत से मेन रोड तक मृत कमला नदी की धारा की उड़ाही की यह योजना करीब पांच सौ मीटर से अधिक लंबी है।डब्लू सी /20460648 /20-21 कोड की इस योजना की लागत 7 लाख 24 हजार 459 है। बताया जाता है कि इस योजना में इसके बतौर अभिकर्ता रोजगार सेवक द्वारा जे ई की मिली भगत से समय-समय पर बिना काम किए ही पैसे की निकासी की जाती रही है। इस बीच पूरी निकासी को अमलीजामा पहनाने के लिए योजना प्रारंभ करने के 4 वर्षों के बाद नदी के बीच में उड़ाही के नाम पर नाली का निर्माण कर शेष राशि की निकासी की योजना बनाई जा रही है। मनरेगा सूत्रों से मिली जानकारी अनुसार इस योजना में 4 लाख 18 हजार 692 रुपए का भुगतान किया जा चुका है लेकिन उड़ाही के नाम पर महज नाली का निर्माण कर पानी के प्रवाह को निरंतर जारी रखने के लिए कहीं भी किनारे की साफ सफाई का काम नहीं किया गया है जो यहां की तस्वीरें बयां करती हैं।इस संबंध में पी ओ राजेश रौशन ने बताया कि ऑन गोइंग इस योजना को पूरा करने का निर्देश दिया गया है। जांच में प्राक्कलन के अनुरूप काम नहीं किए पर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

अधजले शव की हुई पहचान : प्रेम-प्रसंग में सन्नी की हत्या, अलग-अलग जाति होने के कारण नहीं हुई शादी

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के मोहनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत डुमरी दक्षिणी पंचायत में शुक्रवार की सुबह मिले अधजले अवस्था में मिले युवक के शह्नव की पहचान कर ली गयी है। मृतक के पिता वैशाली जिला के गंगाब्रिज थानांतर्गत नवादा खुर्द निवासी अमोद चौधरी ने मृतक युवक की पहचान अपने पुत्र सन्नी कुमार के रूप में की है। उन्होंने मोहनपुर पुलिस को बताया कि मृतक उनका 19 वर्षीय पुत्र सन्नी कुमार था। सन्नी की हत्या प्रेम प्रसंग में वैशाली जिला के गंगाब्रिज थानांतर्गत सहदुल्लापुर निवासी मंटू सिंह ने करायी है। मृतक का मंटू सिंह की पुत्री के साथ बहुत दिनों से प्रेम प्रसंग चल रहा था। मृतक के पिता ने मोहनपुर थाना में प्राथमिकी दर्ज करने के लिए आवेदन भी दिया है। इसमें चार लोगों को नामजद किया है। जिसमें वैशाली जिला के सहदुल्लापुर निवासी मंटू सिंह, टुनटुन सिंह, रौशन कुमार और चंदन कुमार शामिल हैं। आवेदन में यह कहा है कि सन्नी 18 जून को आम लाने के लिए घर से बाजार गया था, लेकिन देर रात तक नहीं लौटा था। उसका दो मोबाइल स्वीच ऑफ बता रहा था। घर वाले उसकी खोज खबर ले ही रहे थे कि उन्हें 21 जून को समस्तीपुर जिले के मोहनपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत डुमरी दक्षिणी पंचायत में किसी की लाश मिलने की सूचना मिली। सूचना पर समस्तीपुर सदर अस्पताल पहुंच मृतक की अपने पुत्र के रूप में पहचान की। आवेदन में मृतक के अनुसूचित जाति का होने का भी उल्लेख किया है। मृतक के पिता ने प्राथमिकी में कहा है कि सन्नी कुमार का प्रेम संबंध सदुल्लापुर गांव की एक लड़की से था। लड़की के घर वाले इसे नापसंद करते थे। दोनों दो जातियों से होने के कारण वैवाहिक संबंध नहीं बन पा रहे थे। बीते 13 जून को आम लाने के लिए सन्नी कुमार निकला था। उसके बाद वह घर वापस नहीं आया था। घर वाले उसकी खोजबीन कर रहे थे। हफ्ते भर बाद समस्तीपुर के मोहनपुर थाना अंतर्गत दक्षिणी डुमरी में मिले शव की सूचना पर उन्होंने शिनाख्त की, तो वह शव सन्नी कुमार का पाया गया। इस संबंध में आमोद चौधरी ने मंटू सिंह, टुनटुन सिंह, रौशन कुमार एवं चंदन कुमार को नामजद आरोपित करते हुए अन्य आधे दर्जन लोगों के विरुद्ध हत्या की प्राथमिकी दर्ज करायी है।

मधुबनी जिला कमिटी भाकपा माले की बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी भाकपा माले जिला कमिटी की बैठक आज माले नगर में अबस्थित पार्टी के जिला कार्यालय मधुबनी में जिला सचिव ध्रुव नारायण कर्ण की अध्यक्षता हुई। बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी पोलित ब्यूरो के सदस्य सह जिला प्रभारी धीरेंद्र झा ने कहा कि मधुबनी और लोकसभा क्षेत्रों में इंडिया गठबंधन की हार चिंतित करने वाला है। संबंधित सभी पार्टियों को इसकी गहरी समीक्षा करनी चाहिए।भाजपा नीत गठबंधन की लगातार जीत के कारणों का खोजबीन होना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि नीतीश जी को भाजपा ने अपहरण कर लिया और अब उनको सामने रखकर वंचितों के आरक्षण के अधिकार को छीन लिया गया है।यह एक अन्यायपूर्ण फैसला है,जिसका हर स्तर पर डटकर विरोध होना चाहिए।दलितगरीबों को अब यह बात समझनी चाहिए कि भाजपा मूलत अदानी अंबानी की मनुवादी पार्टी है। बिहार के वंचित जमात को नीतीशमोदी को घेरना चाहिए। बैठक को अन्य साथियों के अलाबे उत्तीम पासवान,,लक्ष्मण राय,श्याम पंडित,भूषण सिंह,मदन चंद्र झा,बिशंभर कामत ,शांति सहनी,कामेश्वर राम,योगनाथ मंडल,विजय कुमार दास,महाकांत यादव,योगेंद्र यादव आदि ने संबोधित किए।

समस्तीपुर मंडल कारा में छापेमारी नहीं मिला कोई भी आपत्तिजनक सामान

प्रात : किरण संवादाता

समस्तीपुर मंडल कारा में रविवार की सुबह सदर एसडीओ दिलीप कुमार, सदर एसडीपीओ-1 सह एएसपी संजय कुमार पांडेय व सदर-2 एसडीपीओ विजय महतो के नेतृत्व में छापेमारी की गई। घंटो तक चली छापामारी के दौरान जेल से कोई भी आपत्तिजनक सामान बरामद नहीं हुआ। इस मंडल कारा के सभी वार्ड व हॉस्पिटल की छापामारी गई है। कड़ी चौकसी के बीच हुई छापामारी से बंदियों में हड़कंप मच गया। इस दौरान कई थानों के थानाध्यक्ष व जवान भी मौजूद रहे। जांच को लेकर सदर अनुमंडल पदाधिकारी दिलीप कुमार ने बताया कि जेल के अंदर किसी भी प्रकार की होने वाली आपराधिक घटनाओं के लिए साजिश तथा अन्य किसी अवैध गतिविधि को चेक किया गया है। उन्होंने बताया कि आज की छापामारी में फिलहाल किसी भी प्रकार की कोई संदिग्ध सामग्री या आपत्तिजनक वस्तु बरामद नहीं हुई है। इस दौरान जेल अधीक्षक को जेल परिसर में निगरानी रखने के साथ कई महत्त्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए गए। जिससे किसी प्रकार की अवैध व आपराधिक गतिविधियों की साजिश या अन्य प्रकार की गतिविधि जेल परिसर में नहीं हो सके। प्रशासन की ओर से आगे भी जेल परिसर में आकस्मिक रूप से छापामारी और चेकिंग जारी रहेगी।

विद्युत चोरी के आरोप में दो लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे रहिका थाना क्षेत्र के ग्राम सतलखा गांव निवासी भुजूगी मंडल के पुत्र रॉबिन मंडल तो वही चंद्रसेनपुर गांव निवासी हरिनंदन चौधरी के पुत्र हित नारायण चौधरी के घर गुप्त सूचना के आधार पर विद्युत विभाग छापेमारी दल के द्वारा छापेमारी किया गया तो पाया गया की चंद्रसेनपुर गांव के हित नारायण चौधरी के द्वारा मीटर को काटकर इनकमिंग तार से मीटर को हटा दिया गया था एवं इनकमिंग तार को बाईपास कर विद्युत प्रयोग किया जा रहा था जिससे नार्थ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड को लगभग 04 हजार सात रुपए का राजस्व की छती हुई।वही निवासी रॉबिन मंडल बिना विद्युत कनेक्शन लिए एलटी लाइन से टोका फंसा कर विद्युत ऊर्जा चोरी कर रहा था जिसे राजस्व की छती 19हजार 04 सौ 90रुपए हुई है। तथा दोनों व्यक्तियों के द्वारा विद्युत के संबंध में किसी प्रकार का कोई कागजात प्रस्तुत नहीं करने पर रहिका थाना में प्राथमिकी दर्ज किया गया।उक्त जानकारी रहिका थानाध्यक्ष रविंद्र कुमार ने दी तथा उन्होंने यह भी कहा कि प्राथमिकी दर्ज कर ली गई है और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय संप्रभुता के आदर्श पुरुष थे, हमें उनपर गर्व है : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा देश की संप्रभुता को अक्षुण्ण रखने के लिए भारत माता की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों की लंबी सूची है लेकिन डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस प्रकार से आजाद कश्मीर में भारती हितों एवं मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी वह इतिहास के पन्नों में अमिट निशानी छोड़ दिया। अच्छे अर्थों में डा मुखर्जी भारतीय संप्रभुता के आदर्श पुरुष है जिनके उपर हर भारतीय को गर्व है। महान स्वतन्त्रता सेनानी एवं मां भारती के लाल डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर अपने आवासीय कार्यलय प्रकोष्ठ में अयोजित श्रद्धांजली सभा में सांसद डा गोपाल जी ठाकुर ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उपरोक्त बातें कही। सांसद डा ठाकुर ने डा मुखर्जी के योगदानों की चर्चा करते करते हुए कहा कि एक देश एक विधान की जिस अवधारण की उन्होनें परिकल्पना कर आवाज बुलंद की आज देश के यशश्वी प्रधनमंत्री नरेंद्र भाई मोदी की सरकार में वह कल्पना हकीकत में साकार हुआ है। डा मुखर्जी के व्यक्तिव की चर्चा करते हुए संसद डा ठाकुर ने कहा की उन्होंने विश्व के सबसे कम उम्र में कलकता यूनिवर्सिटी का कुलपति बन कर अपनें ओजस्वी होने का परिचय दिया था वहीं नेहरू जिससे मामूली सी बात पर मतभिन्नता के कारण सरकार से इस्तीफा देकर यह साबित कर दिया था की वे अपने सिद्धांतो की रक्षा के लिए शासन सत्ता को भी ठोकर मार सकते है। श्रृद्धांजलि सभा में अन्य सभी वक्ताओं ने डा मुखर्जी के आदर्शो पर चलने का संकल्प व्यक्त किया। इस मौके पर लोकसभा सह प्रभारी प्रफुल्ल कुमार ठाकुर तारडीह मंडल अध्यक्ष मध्य आजाद बेनीपुर मंडल अध्यक्ष रजनीश झा जिला महामंत्री अभयानंद झा मनीष मिश्रा प्रेम कुमार मिश्रा उर्फ रिंकू, जदयू नेता रविंद्र यादव, नटवर झा, भरत यादव,उमेश चौधरी, रामज्ञा चौधरी,सोनू ठाकुर,सुधीर रंजन वर्मा सहित अन्य नेता व कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। वही भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष जीवछ सहनी के अध्यक्षा में श्रद्धांजलि कार्यकर्म का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बिहार सरकार के मंत्री हरि सहनी, राज्यसभा सांसद धर्मशीला गुप्ता,पूर्व विधानपर्षद अर्जुन सहनी,अभय झा ,अंकुर गुप्ता ,ज्योति कृष्ण झा लवली ने विचार व्यक्त किया।

हम सभी को श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताएं रास्ते पर चलना चाहिए : पप्पू सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)।अलीनगर विधानसभा के दसौत गांव में भारतीय जनता पार्टी की ओर से जनसंघ के संस्थापक सदस्य श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह के नेतृत्व में दर्जनों कार्यकताओं ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किया। सभा को संबोधित करते हुए पप्पू सिंह ने बताया कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत माता के महान सपूत थे। स्वतंत्रता आंदोलन में देश को आजाद करवाने के लिए उन्होंने बढ़चढ़ कर भाग लिया। स्वतंत्र भारत में वे पहले एकमात्र ऐसे नेता थे जिन्होंने जम्मू कश्मीर में धारा 370 लगाए जाने का विरोध किया और नेहरू कैबिनेट से इस्तीफा तक दे दिया। वे जहां हिंदू महासभा के बैनर तले देशभर में हिंदू समाज को एक करने का काम कर रहे थे तो वही बाद के दिनों में जनसंघ की स्थापना कर देश को कांग्रेस शासन से मुक्ति दिलाने का अभियान सदन से लेकर सड़क तक चला रहे थे। उन्होंने आगे कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जो सपना देखा था उसे बाद के दिनों में अटल बिहारी वाजपेई और लालकृष्ण आडवाणी ने आगे बढ़ाया। हम सभी को श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताएं रास्ते पर चलना चाहिए और अपने समाज को एकत्रित कर विकास कार्यों पर अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए. इस मौके पर जिला मीडिया प्रभारी लालकांत झा, पुरुषोत्तम झा, मंडल प्रभारी विकाश प्रसाद, संयोजक लाल मुखिया, मदन साहू, संजय पासवान, रामबाबू, विपिन सिंह, शिवशंकर साहू, अवधेश सिंह, प्रमोद झा, पप्पू महतो, श्रवण झा, देबू सहनी, रमेश नारायण ठाकुर, आनंद चौधरी, सरपंच रामनाथ सहनी, बलराम झा, अनिल चौधरी, अंकित कुमार, कुंदन सिंह समेत कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

केवट रामायण का एक खास पात्र है : देवी प्रतिभा

गोलमा में हो रहे श्री श्री 1008 महा विष्णु यज्ञ में श्रीराम कथा के सातवें दिन सच्ची भक्ति का प्रसंग

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। प्रखंड के गोलमा में हो रहे श्री श्री 1008 महा विष्णु यज्ञ में आयोजित श्रीराम कथा के सातवें दिन अयोध्या धाम के प्रसिद्ध कथा वाचिका देवी प्रतिभा जी ने निषाद राज केवट का प्रभु श्रीराम के प्रति सच्ची भक्ति और स्नेह का मार्मिक प्रसंग प्रस्तुत कर श्रोताओं का दिल जीत लिया। कहा कि केवट भोई वंश का था और मल्लाह का काम करता था। केवट रामायण का एक खास पात्र है, जिसने प्रभु श्रीराम को वनवास के दौरान माता सीता और लक्ष्मण के साथ अपने नाव में बिठा कर गंगा पार कराया था। देवी प्रतिभा जी ने कहा कि प्रभु श्री राम वन जाने के क्रम में गंगा किनारे पहुंचे तो उन्होंने केवट को आवाज देते हुए कहा नाव किनारे ले आओ उस पार जाना है। श्रीराम ने केवट से नाव मांगी, पर वह नाव नहीं लाया और कहने लगा मैंने तुम्हारा मर्म जान लिया है। तुम्हारे चरण कमलों की धूल के बारे में सब लोग कहते हैं कि उनके चरण के धूल में नारी बना देने वाली कोई जड़ी है। इसलिए पहले पांव धुलवाओ, फिर नाव पर चढ़ाऊंगा। केवट प्रभु श्रीराम का अनन्य भक्त था। अयोध्या के राजकुमार केवट जैसे सामान्यजन का निहोरा कर रहे हैं। यह समाज की व्यवस्था की अद्भुत घटना है। केवट चाहता है कि वह अयोध्या के राजकुमार भगवान श्रीराम को छुए। उनका सान्निध्य प्राप्त करें। उनके साथ नाव में बैठकर अपना खोया हुआ सामाजिक अधिकार प्राप्त करें। अपने संपूर्ण जीवन की मजूरी का फल पा जाए। राम वह सब करते हैं, जैसा केवट चाहता है। उसके श्रम को पूरा मान-सम्मान देते हैं। केवट राम राज्य का प्रथम नागरिक बन जाता है। राम त्रेता युग की संपूर्ण समाज व्यवस्था के केंद्र में हैं, इसे सिद्ध करने की जरूरत नहीं है। उसके स्थान को समाज में ऊंचा करते हैं। राम की संघर्ष और विजय यात्रा में उसके दाय को बड़प्पन देते हैं। त्रेता के संपूर्ण समाज में केवट की प्रतिष्ठित करते हैं। कथा के बीच बीच में प्रसंग आधारित संगीतमय भजन कीर्तन से श्रोता भावविभोर हो गया। इधर यज्ञशाला के परिक्रमा करने वाले श्रद्धालुओं की लगातार भीड़ उमड़ रही है। रात्रि में प्रस्तुत वृंदावन के रासलीला को देखने के लिए दर्शकों की भारी भीड़ जुट रही है।

मातृ दिवस पर प्रमाण पत्र वितरण

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत पटपरा दक्षिण स्थित कुशल युवा कार्यक्रम द्वारा मातृ दिवस के अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता में सफल अभ्यर्थियों के बीच प्रमाण पत्र वितरण किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि राम प्रमोद राय के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन विनय कुमार कर रहे थे। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में सफल अभ्यर्थी स्वाति कुमारी, भव्या कुमारी, बिट्टू कुमार, रौशन कुमार, रूबी कुमारी, ऋषिका कुमारी, काजल कुमारी, सुष्मिता कुमारी, निशा कुमारी, संजना कुमारी, रुचि कुमारी को स्वर्ण पदक, सोनी कुमारी, सुष्मिता कुमारी,औ पल्लवी कुमारी, नीतीश कुमार, निशा कुमारी, साक्षी कुमारी, अंशु कुमारी, सोनी कुमारी, काजल कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, रवि किशन को रजत पदक एवं अरविंद कुमार, रौशनी कुमारी, संगीता कुमारी, प्रिया कुमारी, रौशनी कुमारी, प्रियंका कुमारी, कोमल कुमारी, सोनू कुमारी, नगीना कुमारी, मोहम्मद अरमान को कांस्य पदक व प्रमाण पत्र दिया गया। मौके पर हाई स्कूल बेलसंडी तारा के प्राचार्य राम प्रमोद राय, दीपक कुमार, विकास कुमार, अनीश कुमार, रजनीश कुमार, संजीव कुमार, विनोद कुमार, तेजपाल सिंह, प्रभु नारायण झा आदि मौजूद थे। कार्यक्रम के सफल संचालन में यशराज, शिवम कुमार, पूजा कुमारी, सुजीत कुमार, बच्चा लाल, यशवंत कुमार, सूरज झा महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। निर्देशक बैजनाथ कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

संक्षिप्त खबरें

ई रिक्शा चालक ने एक युवक को मारी टक्कर

जमुई [झाझा] भीठरा से अपने घर बेलाटांड पैदल आ रहे एक युवक को एक तेज रफ्तार ई रिक्शा चालक के द्वारा टक्कर मार देने से युवक घायल हो गया। जिसे लोगों की मदद से इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां घायल युवक का इलाज किया गया। घायल युवक की पहचान बेलाटांड गांव के रहने वाले संतोष कुमार के रूप में हुई है। घायल युवक ने बताया कि भीठरा में मै अपने रिश्तेदार के यहां से वाहन की तलाश के लिए पैदल ही निकलकर आ रहा था कि तभी सामने से आ रही एक तेज रफ्तार ई रिक्शा ने मुझे जोरदार टक्कर मार दिया जिससे मै घायल हो गया। जबतक हल्ला कर ई रिक्शा चालक को पकड़ने की कोशिश किया तबतक ई रिक्शा चालक फरार हो गया।

समस्या : लाखों खर्च के बाद भी नहीं मिल रहा कुएं का पानी, जल जीवन हरियाली के तहत हुआ है जीर्णोद्धार

एक कुआं के जीर्णोद्धार में लग रही है 60 से 70 हजार की राशि

- कुएं का ऊपरी भाग चकाचक, अंदर में गाद

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर /जमुई जल संरक्षण के लिए कुएं का जिंदा रहना काफी महत्वपूर्ण है। खासकर वहां जहां जलस्तर लगातार गिरता जा रहा है।गिद्धौर प्रखंड में कुएं के संरक्षण के लिए जल जीवन हरियाली योजना के तहत पंचायती राज विभाग,पीएचडी आदि विभागों के द्वारा कुआं जीर्णोद्धार कार्य हुआ है। कुओं की सफाई से लेकर डेंटिंग पेंटिंग तक हुई लेकिन इसके बाद कुएं को लावारिस छोड़ दिया गया। अब हालात यह है कि 2 साल पहले जिस कुएं का जिर्णोद्धार हुआ।वह कुआं गाद से भरा हुआ है।दरअसल कुएं के जीर्णोद्धार के बाद कुएं की देखरेख नहीं हुई और उसे लावारिस छोड़ दिया गया। जीर्णोद्धार के बाद कुएं में जाली लगाकर ऐसा छोड़ा गया कि कभी उपयोग ही नहीं हुआ। उपयोग नहीं होने के चलते यह कुएं फिर से गाद से भर गए हैं। कुएं के आसपास भी कचरा का अंबार है। अधिकतर कुएं में पानी बचा भी नहीं है। कुल मिलाकर पहले यही कुआं जीवनदायनी हुआ करता था। लेकिन लाखों खर्च के बाद भी इसका पानी पीने लायक ही नहीं रहा है। कुआं के जीर्णोद्धार में किया गया है खानापूर्ति दरअसल जिस विभाग के द्वारा कुआं का जीर्णोद्धार किया गया है।उसके द्वारा इसमें जमकर खानापूर्ति किया गया है अधिकांश कुंओं से गाद नहीं निकाला गया है। सिर्फ बाहर से रंग- रोगन कर छोड़ दिया गया।स्थानीय लोगों की माने तो कुआं उड़ाही के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति कर छोड़ दिया गया है। इस योजना में कुछ ऐसे कुआं को भी शामिल किया गया है। जिसका प्रयोग सिर्फ खास मौके पर ही किया जाता है।कुएं का प्रयोग शादी विवाह व दशकर्म में ही की प्रयोग होता है। प्रखंड में कुएं की स्थिति अब भी पहले जैसा पीएचईडी,पंचायती राज विभाग द्वारा जिन कुएं की सफाई में न्यूनतम 60 हजार खर्च किया जाना था। इतनी भारी भरकम राशि से जीर्णोद्धार होने के बाद भी प्रखंड में कुएं की स्थिति अब भी पहले जैसा ही है। वही कुएं में पानी नहीं रखने के कारण कुएं के आसपास गंदगी का अंबार लगा हुआ है। लोग कुएं के बजाय पानी के लिए दूसरे के दरवाजे पर आश्रित हो रहे हैं या फिर नल जल योजना के तहत किया जा रहे जलापूर्ति के लिए सुबह तथा शाम का इंतजार कर पानी ले रहे हैं। जीर्णोद्धार के बाद एक बाल्टी पानी भी नहीं निकला आमजन इस योजना को लेकर असंतुष्ट हैं।कोल्हुआ एवं सेवा क्षेत्र के विमल मिश्रा,इन्द्रदेव साव,मुश्ताक अंसारी,लक्ष्मण साह,विपिन कुमार बताते हैं कि सरकार की महत्वपूर्ण योजना जल जीवन हरियाली के तहत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में कुआं उड़ाही व जीर्णोद्धार का काम खानापूर्ति बनकर रह गया है।इस योजना के तहत प्रखंड में दर्जनों कुओं की उड़ाही व जीर्णोद्धार के साथ-साथ सोख्ता का निर्माण किया जाना था। लेकिन जिन कुंओं का जीर्णोद्धार और सोख्ता का निर्माण किया गया है उसमें खानापूर्ति की गई है।पंचायत में जिस कुएं का जीर्णोद्धार हुआ है। उसकी हालत यह है कि उस कुएं से 2 साल में एक बाल्टी पानी भी नहीं निकला है। हालांकि इक्के दुक्के कुएं का जीर्णोद्धार हुआ तो हुआ भी संवेदक की लापरवाही की भेंट चढ़ गया। गर्मी प्रचंड रूप में है लेकिन अब तक कुएं की स्थिति ज्यों का त्यों है। लोग कुएं का पानी प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं।

शादी के पहली वर्षगांठ पर किया वृक्षारोपण

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा घैलाढ़ः मधेपुरा सदर प्रखंड क्षेत्र के भेलवा में समाजसेवी मुकेश कुमार मुन्ना व रूबी कुमारी ने अपनी शादी की पहली सालगिरह पर फलदार पौधों का रोपण किया गया। मुकेश कुमार का कहना है कि वर्तमान में गर्मी के हालात ने ये एहसास करा दिया है कि पेड़ पौधे हमारे लिए कितते जरूरी हैं। अगर जीवन को सुरक्षित रखना है तो हमें पेड़ों को बचाना होगा और सघन पौधारोपण करना होगा तभी पर्यावरण का संतुलन बन सकेगा। पत्नी रूबी ने अपील करते हुए कहा हमें अपने यादगार पलो पर एक झ एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए तभी पर्यावरण संरक्षित रहेगा। इस अवसर पर पिता सत्यनारायण यादव, भाई शैलेन्द्र, संतोष(इरअढ) संजय (शिक्षक), ललित भाईज (शिक्षक) फूफाजी, बद्री यादव (फौजी) सहित अन्य मौजूद रहे।

जमीन विवाद में दो पक्षों के बीच हुई जमकर मारपीट में कुल दस लोग हुए घायल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा थानाक्षेत्र के सर्किल नंबर एक करमा गांव में जमीन विवाद में दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। मारपीट की घटना में दोनो पक्षों की ओर से एक महिला सहित कुल दस लोग घायल हो गया। मारपीट की सूचना डायल 112 की पुलिस को मिली जिसके बाद पुलिस टीम मौके स्थल पर पहुंची और सभी घायलों को इलाज के लिए रेफरल अस्पताल भेजा। वही दोनों पक्षों के परिजनों ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल लाया जहां चिकित्सक ने सभी घायलों का उपचार किया और मारपीट की घटना में सभी लोग गंभीर रूप से घायल होने के कारण बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। मारपीट की घटना में एक पक्ष से घायल के रूप में मो. हामिद,अफरीदी, सदाम तो दूसरे पक्ष से घायल में मो. तोहिद अंसारी, मुजामिल अंसारी, मो.रहूफ, इश्तियार अंसारी, तजमूल अंसारी, सरफुद्धीन अंसारी तथा जहांना खातुन के रूप में पहचान हुई है। एक पक्ष से घायल हामित ने बताया कि मेरी बहन 22 साल पहले किसी से ढेढ़ लाख रूपए में जमीन लिया जिसने पुराना केवाल दिया था। लेकिन जमीन मेरी बहन के नाम पर नही लिखा और उससे बात करते थे कि जमीन आकर लिख दो लेकिन जमीन मालिक नही आता था। जमीन दिलवाने वाले समशुद्धीन, इसमेल और रहूफ को भी कई बार बोला लेकिन हमेशा वे तीनो टाल मटोल कर देते थे। उसके बाद चुपके से रहूफ अपने बेटे के नाम वह जमीन लिखवा लिया। इसी बात को लेकर रहूफ से शिकायत किया तो दूसरे पक्ष से दर्जनभर से अधिक लोगों ने मारपीट करने लगा। दूसरे पक्ष से घायल रहूफ ने बताया कि मै अपनी जमीन की नापी करवा रहा था कि तभी पहले पक्ष से लगभग 20 से भी अधिक लोग लाठी डंडा, पत्थर चलाते हुए हमलोगों को घायल कर दिया।

दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गिद्धौर का झाझा विधायक दामोदर रावत ने किया निरीक्षण

बोले- साफ-सफाई और स्वास्थ्य सेवाओं में कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी

प्रात : किरण संवाददाता

- जांच,एक्सरे और दवाइयों की उपलब्धता बनाए रखने का दिया निर्देश

जमुई/गिद्धौर। गिद्धौर के दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की चरमराई स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को लेकर झाझा विधायक एवं बिहार सरकार के पूर्व मंत्री दामोदर रावत ने अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। जहां उन्होंने अस्पताल की प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ.अजिमा निशात को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए व्यवस्थाओं में शीघ्र सुधार करने की बात कही।विधायक दामोदर रावत ने जिला स्वास्थ्य पदाधिकारी डॉ.कुमार महेंद्र प्रताप से दूरभाष पर बात कर दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों को होने वाली असुविधाओं और सेवाओं में बरती जा रही खामियों से अवगत कराया और इसके निस्तारण हेतु निर्देश दिया।झाझा विधायक व सूबे के पूर्व मंत्री दामोदर रावत ने कहा कि अस्पताल की साफझसफाई और स्वास्थ्य सेवाओं में कोताही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। पुराने चादरों में खून के छींटे लगे हैं, उन्हें ही बार-बार बिछा दिया जा रहा है, उन्हें बदलने के लिए भी निर्देश दिया गया है। मरीजों को किसी प्रकार की असुविधा न हो,जांच, एक्सरे,दवाइयों की उपलब्धता बनी रहे, इस पर ध्यान देना है। लैब में सभी जांच हो जाए,ताकि मरीजों को बाहर न जाना पड़े, समय पर सही उपचार मिले, इन सब पर ध्यान देने के लिए अस्पताल प्रबंधन से कहा गया है। बता दें कि विगत कुछ दिनों से दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अव्यवस्था की खबरें लगातार सामने आ रही थीं, जिसके बाद अब स्थानीये विधायक दामोदर रावत द्वारा संज्ञान लेते हुए अस्पताल का निरीक्षण किया गया है। इससे यहां की कमियों में सुधार आने की उम्मीद जगी है।

हार्ट अटैक से चकाई के डीड राइटर राजेन्द्र लाल की मौत, लोगों ने शोक संवेदना व्यक्त किया

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/सोनो:-चकाई रजिस्ट्री कचहरी के वरिष्ठ डीड राइटर व समाजसेवी राजेन्द्र लाल की मौत रविवार हार्ट अटैक से हो गई।सोनो गांव निवासी डीड राइटर राजेंद्र लाल अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी , एक पुत्र और एक पुत्री समेत भरापुरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन से सोनो एवं चकाई में भीषण शोक व्याप्त है। स्वजन भी मर्माहत हैं। कई दिग्जजों ने उनके निधन पर शोक जताया है। चकाई के पूर्व विधायक श्रीमती सावित्री देवी ने डीड राइटर राजेंद्र लाल के निधन पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि उनके दिवंगत होने से समाज के एक गौरवशाली अध्याय का अंत हो गया है। सोनो एवं चकाई के एक असाधारण हस्ती के निधन से शोक संतप्त है। उन्होंने जनसेवा और निर्धनों के जीवन में सुधार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। राजेन्द्र लाल अपने आप में अलग थे और हजारों लोगों के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में चिंहित किए जाते थे। समाज को उनकी कमी हमेशा खेलेगी। उन्होंने हृदय से नमन किया। राजद के वरिष्ठ नेता व संवेदक सुरेन्द्र यादव उर्फ काजू जी ने उन्हें असाधारण समाजसेवी की संज्ञा देते हुए कहा कि हर वर्ग के लोग उनकी तारीफ के साथ उनका दिल से सम्मान करते थे। उनके निधन से मैं बेहद स्तब्ध हूं। सोनो ने एक आदर्श इंसान और काबिल डीड राइटर खो दिया है जो सार्वजनिक जीवन में गरिमा , साहस और निष्ठा का प्रतीक था। दूसरों की मदद के लिए वे हमेशा तैयार रहते थे। सोनो ,चकाई एवं झाझा के जनता की सेवा के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। मैं उन्हें कोटि- कोटि प्रणाम निवेदित करता हूं। पूर्व शाखा प्रबंधक व भाजपा वाणिज्य प्रकोष्ठ के जिला संयोजक शैलेश कुमार ने कहा कि वह मेरे लिए बेहद मूल्यवान इंसान थे। उनके निधन से मुझे गहरा सदमा और दुख पहुंचा है। इस खबर को स्वीकार करना मुश्किल है। पूरे जिले शोकाकुल है और उससे भी ज्यादा सभी संप्रदाय के लोग मर्माहत हैं। उन्होंने कहा कि दुख की इस घड़ी में उनके परिवार के प्रति मेरी संवेदना है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। ऊँ शांति। मुखिया संघ के जिलाध्यक्ष व लोहा पंचायत मुखिया जमादार सिंह , डॉ. ओम प्रकाश सिंह, त्रिपुरारी सिंह , डॉ. ब्रह्मदेव प्रसाद, जदयू के पूर्व जिलाध्यक्ष रामचरित्र मंडल,डॉक्टर एम एस परवाज लोजपा आर के प्रदेश महासचिव व चकाई विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी संजय कुमार मंडल, महेंद्र यादव, रजनीकांत मिश्र उर्फ ललन मिश्रा, ग्रामीण अमीन विनोद पांडेय, महेंद्र दास, परमेश्वर दास, मनकेश्वर शर्मा, बर्णवाल समाज के प्रखंड अध्यक्ष अवधेश कुमार बर्णवाल, मनोज बर्णवाल,प्रभु राम, अशोक सिंह, चंद्रशेखर सिंह, भाजपा नेता रंजीत सिंह सरपंच मीठु यादव, पूर्व उपसरपंच विजय कुमार यादव,साधु शरण राम आदि ने भी डीड राइटर के निधन पर शोक व्यक्त किया और गतात्मा की शांति हेतु प्रार्थना की है। ंचतत्व में विलीन, अंतिम यात्रा में उमड़ा जनसैलाब। चकाई रजिस्ट्री कचहरी में डीड राइटर राजेंद्र लाल का हार्ट अटैक से निधन हो गया।उनका अंतिम संस्कार बरनार नदी धाट पर किया गया। उन्हें मुखाग्नि उनके पुत्र सुनील ने दी। रविवार को अचानक तवियत बिगड़ गई और निधन हो गया।डीड राइटर राजेंद्र लाल की मृत्यु की खबर सुनते ही रिश्तेदार एंव शुभचिंतकों का पहुंचना लगातार सिलसिला जारी रहा है।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व. दिग्विजय सिंह की 14 वीं पुण्यतिथि आज

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड के नागी नकटी कटहरा नदी तट के तटीय क्षेत्र में बसे कुधुर पंचायत अंतर्गत पड़नेवाले नयागांव स्थित समाधि स्थल पर दिवंगत पूर्व बांका सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व. दिग्विजय सिंह दादा की 14 वीं पुण्यतिथि 24 जून को श्रद्धाभाव के साथ समाधि स्थल पर मनायी जाएगी। उक्त आशय की जानकारी स्व. दादा की पुत्री व जमुई विद्यायक श्रेयसी सिंह ने दी। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि 24 जून को नयागांव स्थित समाधि स्थल पर सोमवार की सुबह 09 बजे से इस क्षेत्र के कई दिग्गज नेताओं,बुद्धिजीवियों व समाजसेवियों एवं क्षेत्र की जनता का अपने चहेते दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि देने हेतु समाधि स्थल पर आगमन होगा।

दो गाड़ियो से विदेशी शराब, बियर के साथ दो तस्कर हुआ गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा रेलपुलिस और आरपीएफ ने बिहार में रेलमार्ग के रास्ते लाए जा रहे दो अलग अलग गाड़ियों से भारी मात्रा में विदेशी शराब के साथ केन बियर बरामद किया है।रेलपुलिस के द्वारा दी गई जानकारी अनुसार अप में आने वाली गाड़ी हावड़ा मोकामा एक्स्प्रेस के प्लेटफार्म पर लगते ही रेलपुलिस के द्वारा सर्च अभियान चलाया गया तो उक्त गाड़ी के इंजन के पीछे दूसरा साधारण बोगी से एक प्लास्टिक का झोला लावारिस स्थिति में बरामद हुआ जिसको संदेह के आधार पर सर्च किया गया तो उसमें 19 पीस केन बियर और 34 पीस अलग अलग मात्रा का विदेशी शराब बरामद हुआ। तो वही आपराधिक गतिविधि, यात्रियो की सुरक्षा को लेकर चलाए जा रहे अभियान के तहत आरपीएफ के द्वारा अप में आने वाली गाड़ी 03131 अप सियालदह गोरखपुर ग्रीष्मकालीन स्पेशल एक्स्प्रेस के कोच संख्या एस 7 से भारी मात्रा में केन बियर बरामद हुआ है। जिसमें दो शराब तस्कर की गिरफ्तारी भी हुई है। जिसके बाद आरपीएफ ने बरामद केन बियर और गिरफ्तार दोनो शराब तस्कर को रेलपुलिस को अग्रिम कार्रवाई हेतु सौंप दिया। इस संदर्भ में जानकारी देते हुए रेलथानाध्यक्ष बृंद कुमार ने बताया कि पकड़े गए शराब तस्कर की पहचान सूरज कुमार एवं बबलू कुमार के रूप में हुई है जिसके पास से 130 पीस केन बियर बरामद हुआ है। दोनो मामलों में रेलथाना में प्राथमिकी दर्ज कि गई है।

तेतरिया ने सुदामापुर को किया पराजित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/बरहट। सुदामापुर प्रीमियर लीग क्रिकेट टूनार्मेंट के आठवां मैच रविवार को डाढ़ा पंचायत के सुदामापुर मैदान में सुदामापुर टीम बनाम तेतरिया टीम के बीच खेला गया। सुदामापुर की टीम ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 12 ओवर में सभी विकेट खो कर 100 रन बनाये। इसमें सुदामापुर टीम के खिलाड़ी सक्षम ने नाबाद 20 रन, राहुल ने 15 रन, नीरज ने 11 रन का योगदान दिया। तेतरिया टीम के खिलाड़ी बादल, चिक्कू, बबलू और दिनकर ने 2-2 विकेट लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी तेतरिया की टीम ने 6 ओवर में तेतरिया टीम के बल्लेबाज चिक्कू कुमार ने 48 रन और बादल कुमार ने 32 रन का योगदान दिया। सुदामापुर टीम के खिलाड़ी राहुल कुमार और नीरज ने 1-1 विकेट लिया। इस प्रकार से तेतरिया की टीम ने मैच जीत लिया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार तेतरिया टीम के खिलाड़ी चिक्कू कुमार और प्लेयर ऑफ द सीरीज दिनकर कुमार को दिया। मुख्य अतिथि अमरेंद्र कुमार अत्री उर्फ खोखन सिंह संस्थापक सदस्य जन सुराज ने विनर और रनर टीम को मेडल देकर हौसला अफजाई किया। इस दौरान बलराम यादव, विवेक सिन्हा, जनसुराज के टीम विकास कुमार सिंह, आकाश द्वीप, परमात्मा कुमार, सदाब खान, गुडन कुमार, जनार्दन कुमार के साथ-साथ कई खिलाड़ी व दर्शक उपस्थित थे।

442 वीं यात्रा में मंच के सदस्य पहुंचा उझंडी ग्राम

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई। साईकिल यात्रा एक विचार जमुई के बैनर तले अपने निरंतर रविवारीय यात्रा के 442 वें यात्रा के क्रम में एक दर्जन सदस्यो का समूह आज जमुई नगर परिषद के उझंडी ग्राम पहुंची। जहां मंच द्वारा उक्त ग्राम के तालाब के बगल खाली स्थान पर पार्क बनाने को लेकर चलाई जा रही मुहिम को लेकर परिसर की हरा भरा करने के लिए आगे कार्य किया गया। मंच से जुड़े सदस्य मनीष कुमार ने बताया की उझंडी ग्राम के यूवाओ के साथ मिलकर पूर्व की यात्रा में कई दर्जन लकड़ी एवं छायादार पौधा लगाया गया था। जो सभी सुरक्षित है अब पेड़ भी बन रहा है। आज उस परिसर को सुंदर बनाने के लिए दो दर्जन फूल वाली पौधा लगाई गई साथ ही उझंडी ग्राम के यूवाओ द्वारा सामूहिक रूप से राशि इकट्ठा कर पूरे परिसर को जाली से घेराबंदी किया जा रहा है। इस कार्य में हर घर से किसी ना किसी प्रकार का सहयोग लिया जा रहा है ताकि पर्यावरण संरक्षण करने की आदत सभी में आए और हर गांव इससे प्रेरित होकर लुप्त होती बगीचा को पुनर्जीवित करने का सामूहिक प्रयास करें। मौके पर उपस्थित मंच के सक्रिय सदस्य लड्डू मिश्रा ने अपने फूफा जी स्वर्गीय पंडित सीताराम मिश्र (सरकार जी) के आकस्मिक निधन होने पर उनके याद में पौधे लगाए और दिव्य आत्मा को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हरेक लोगों द्वारा अपने पूर्वजों की याद में पौधारोपण करना चाहिए ताकि उनकी याद जीवन भर साथ रहे इससे न केवल पर्यावरण के प्रति संरक्षण की भावना बढ़ेगी बल्कि उनकी याद भी हमेसा प्रतिकात्मक रूप से सहेजा जा सकता है। सदस्य शैलेश भारद्वाज एव ठाकुर डुगडुग सिंह ने कहा कि आगामी मानसुन में प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ एक पौधा भी लगा दे तो हर क्षेत्र स्वस्थ बनेगा। पहले हर गांव में एक बगीचा होती थी जहां लोग स्वास्थ लाभ के सुबह शाम आते थे इससे ग्रामीण क्षेत्र में बीमारी की प्रतिशत को कम रहता है। लेकिन बगीचा लुप्त होने से गावों में भी बीमारी का फैलने लगी है। इससे बचने के लिए हर क्षेत्र में सामूहिक प्रयास से पौधारोपण करना चाहिए। इस अवसर पर राहुल राठौर,गोलू कुमार, राकेश कुमार, सीपू सिंह परिहार, ठाकुर डुगडुग सिंह, लड्डू मिश्रा, विवेक कुमार, शैलेश भारद्वाज, सचीराज पद्माकर, चंदन कुमार, रोहित कुमार, अमर, संजीव कुमार, राजा कुमार, शशि भूषण कुमार, रंजन कुमार, गुड्डू कुमार, जितेंद्र रावत, बबलू कुमार, मनीष कुमार, यशराज, पप्पू रावत, छब्बू कुमार, रुपेश कुमार, कृष कुमार सहित कई ग्रामीण थे।

छत से गिरकर छह वर्षीय बच्चा हुआ घायल

जमुई [झाझा] घर की छत से गिरकर एक छह वर्षीय बच्चा घायल हो गया जिसे इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज किया गया। घायल बच्चे की पहचान राजकुमार यादव का पुत्र दिलखुश कुमार के रूप में हुई है जो गढ़ी गांव का रहने वाला है। बच्चे के पिता ने बताया कि सुबह बच्चा छत पर सोए हुआ था पर अचानक नींद से उठा और छत से नीचे गिर गया।

केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी मनरेगा योजना में मची है लूट

चीनीकौर आहर के बांध पर एक भी वृक्ष नही,लेकिन प्रत्येक माह किया जा रहा पैसे का निकासी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई जिले के गिद्धौर प्रखंड के पतसंडा पंचायत में मनरेगा की क्रियान्वित योजनाओं में लूट की होड़ मची हुई है। इसमें प्रखंड के पदाधिकारी से लेकर पंचायत के जनप्रतिनिधि यहां तक की रोजगार सेवक की मिली भगत से पैसा को किया जा रहा है। बंदरवाट ।ताजा मामला पतसंडा पंचायत के चीनीकौर आहर के बांध पर वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत वृक्ष लगाया गया था।लेकिन आहर पे एक भी जिंदा वृक्ष नही है और प्रत्येक माह चार हजार पैसे कि निकासी किया जा रहा है।यही वजह है कि क्रियान्वित योजनाओं में योजना स्थल पर बोर्ड नहीं लगाया जा रहा है। बोर्ड नहीं लगने पर प्राक्कलन में आसानी से चोरी की जा सकती है। जबकि सरकार का स्पष्ट आदेश है कि किसी भी योजना के कार्य स्थल पर सूचना बोर्ड जरूर लगाएं ।उस बोर्ड में योजना का नाम,योजना की प्रकलित राशि, संवेदक का नाम आदि का जिक्र अनिवार्य रूप से रहनी चाहिए।जानकारी के अनुसार गिद्धौर प्रखंड में 40 से अधिक गांव में महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना मनरेगा के तहत योजनाएं हो रही है।यहां पैन सफाई,तालाब खुदाई,वृक्षारोपण एवं मिट्टी भराई के कार्य के अलावे सहित सौ से अधिक योजनाओं का संचालन हो रहा है। बता दे कि कार्यस्थल पर योजना का बोर्ड नहीं लगाए जाने से सरकारी राशि की लूट करने की आजादी है। ऐसे में आम लोगों को योजना और प्राक्कलन की जानकारी नहीं मिल पाती है।पंचायत से लेकर प्रखंड तक के विभागीय कर्मी एवं पदाधिकारी की मेल से सरकारी राशि की लूट का जरिया बना लिया है। ऐसे में ग्रामीण मजदूरों के पलायन को रोकने के लिए केंद्र प्रायोजित मनरेगा योजना मजदूरों को घर पर ही मनरेगा उपलब्ध कराने और चेहरे पर खुशहाली लाने के बजाय लूट,खसोट का जरिया बनकर रह गया। खैर जो भी हो इन दिनों गिद्धौर प्रखंड भर में मनरेगा योजना में लूट मची हुई है और जिले के आला अधिकारी इस और कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं जिससे कि मजदूर की रोजी-रोटी की खतरा मंडरा रहा है देखने वाली बात यह होगी कि सरकार मनरेगा को कब तक विभागीय कर्मी के द्वारा लुटवाया जाएगा यह योजना मुखिया,पंचायत समिति सदस्य,मनरेगा पीओ,प्राक्कलन पदाधिकारी सहित अन्य के लिए कामधेनु बनकर रह गया है।

सौर ऊर्जा की ओर पूर्व मध्य रेल के बढ़ते कदम जीरो कार्बन उत्सर्जन मिशन पर तीव्र गति से कार्य प्रगति पर

प्रात : किरण संवाददाता

हाजीपुर । पूर्व मध्य रेल द्वारा एक जीरो कार्बन उत्सर्जन मिशन की दिशा में सार्थक कदम उठाते हुए प्रचलित उर्जा के प्रयोग को कम करने और सौर ऊर्जा के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु कई स्टेशनों एवं प्रशासनिक भवनों तथा समपार फाटकों पर सोलर सिस्टम लगाया गया है। वर्तमान में पूर्व मध्य रेल में पांचों मंडलों एवं मुख्यालय, हाजीपुर में कुल 2197.52 डहस्र क्षमता का सोलर पैनल लगाया जा चुका है। इन सोलर पैनलों से वित्तीय वर्ष 2023-24 में कुल 18.54 लाख यूनिट बिजली का उत्पादन हुआ जिससे बिजली बिल के मद में 77.81 लाख रुपए की बचत हुई । इनमें मुख्य रूप से महाप्रबंधक कार्यालय भवन, हाजीपुर में 510.4 डहस्र तथा दानापुर के मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय एंड हॉस्पीटल में 500 डहस्र क्षमता के सोलर प्लांट स्थापित है । इसी तरह गया मेमू शेड में 272 डहस्र, पाटलिपुत्र स्टेशन पर 140 डहस्र तथा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय भवन, सोनपुर में 110.4 डहस्र क्षमता के सोलर प्लांट कार्य कर रहे हैं । समस्तीपुर मंडल के 30 स्टेशनों यथा - जयनगर, सीतामढ़ी, मधुबनी, दरभंगा, मोहम्मदपुर, ककरघाटी, टेक्टर, तारसराय, भैरापट्टी, अलीनगर टोला, रूपौली, जोगिआरा, राजनगर, पण्डौल, हरपट्टी, सोनबरसा कचहरी, रामभद्रपुर, चमुआ, परसौनी, मुरलीगंज, रून्नी सैदपुर, डुमरा, बाजपट्टी, कमतौल, मुक्तापुर, किशनपुर, हायाघाट, मनीगाछी, बिरौल एवं लोहना रोड स्टेशन तथा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में कुल 222.38 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट लगाया गया है। दानापुर मंडल के 07 स्टेशनों यथा - पाटलिपुत्र, फुलवारीशरीफ, पटना साहिब, फतुहा, बख्तियारपुर, बाढ, राजगी स्टेशनो तथा मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, सेंट्रल हॉस्पीटल एवं पटना पावर हाउस में कुल 862.4 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट लगाया गया है। धनबाद मंडल के 08 स्टेशनों यथा - नेसुब गोमो, गढ़वा रोड, पारसनाथ, हजारीबाग, गझंडी, बरकाकाना, नगर उंटारी एवं सिंगरौली स्टेशनों पर कुल 85.94 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट लगाया गया है। पं.दीनदयाल उपाध्याय मंडल के 07 स्टेशनों यथा - फेसर, कजरत नावाडीह, इस्माइलपुर, चिरैलापौथू बिहार, बगहा बिशुनपुर, गुरारू, जाखीम स्टेशनों पर तथा वैगन केयर सेंटर/डीडीयू, मेमू शेड/गया एवं सिक लाईन/गया में कुल 386 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट कार्य कर रहा है। सोनपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय भवन एवं पहलेजा स्टेशन पर कुल 130.4 डहस्र क्षमता का तथा महाप्रबंधक कार्यालय, हाजीपुर में 510.4 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट कार्य कर रहा है । इसके साथ ही पूर्व मध्य रेल के पांचों मंडलों के कुल 260 स्टेशनों, 120 अन्य भवनों तथा 116 समपार फाटकों पर कुल 9432 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट लगाने का कार्य प्रगति पर है ।इनमें दानापुर मंडल में 39 स्टेशन, 30 अन्य भवनों तथा 20 समपार फाटकों पर कुल 2630 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट; सोनपुर मंडल में 60 स्टेशन, 14 अन्य भवनों तथा 16 समपार फाटकों पर कुल 1375 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट; समस्तीपुर मंडल में 50 स्टेशन, 28 अन्य भवनों तथा 80 समपार फाटकों पर कुल 1027 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट; धनबाद मंडल में 91 स्टेशन एवं 39 अन्य भवनों पर कुल 3760 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट; पं.दीन दयाल उपाध्याय मंडल में 20 स्टेशन एवं 09 अन्य भवनों पर कुल 640 डहस्र क्षमता का सोलर प्लांट लगाने का कार्य विभिन्न चरणों में प्रगति पर है। विदित हो कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए प्रचलित ऊर्जा का कम-से-कम प्रयोग करना आवश्यक है । सोलर ऊर्जा से एक ओर जहां बिजली खरीदने में होने वाले व्यय को कम करते हुए राजस्व की बचत हो रही है वहीं दूसरी ओर स्वच्छ पर्यावरण बनाये रखने में भी सहायक सिद्ध होगी ।

सम्पादकीय

जीरो टेरर प्लान

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई अपने निर्णायक चरण में है। आतंकवाद बड़ी संगठित आतंकी हिंसाओं से सिमट कर महज छद्म लड़ाई रह गया है। केंद्रशासित प्रदेश में हाल ही में हुए आतंकी हमलों के मद्देनजर सुरक्षा स्थिति की समीक्षा के लिए उच्चस्तरीय बैठक हुई जिसमें शाह ने आंतकी गतिविधियों पर पूरी तरह नकेल कसने यानी जीरो टेरर प्लान लागू करने का निर्देश दिया। उन्होंने सुरक्षा एजेंसियों को मिशन मोड पर काम करने और समन्वित तरीके से त्वरित प्रतिक्रिया सुनिशिचत करने का भी निर्देश दिया। मोदी सरकार के जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद को जड़ से उखाड़ फेंकने में कोई कसर न छोडे की बात भी दोहराई। आने वाले महीनों में प्रदेश में चुनाव भी होने हैं, और चौबंद सुरक्षा से चुनाव सहजता से कराने में मदद मिलेगी। शाह ने जून के अन्त में शुरू होने वाली पवित्र अमरनाथ यात्रा की तैयारियों की भी समीक्षा की। हालांकि बीते हफ्ते ही आतंकियों ने राज्य के रियासी, कठुआ और डोडा जिलों में चार स्थानों पर हमले किए जिनमें नौ तीर्थयात्रियों मौत और एक जवान शहीद हो गया। घटना में सात सुरक्षाकर्मियों समेत कई अन्य घायल हुए हैं। हालांकि इस दरम्यान मुठभेड़ में सेना ने दो आतंकी मारे गिराए जिनकी पहचान पाकिस्तानी नागरिक के तौर पर हुई। उनके पास से भारी मात्रा में गोला-बारूद और हथियार बरामद हुए। सरकार के कड़े रुख और स्पष्ट निदेर्शों के चलते सैन्य बलों का उत्साह लगातार बढ़ रहा है। खासकर मोदी सरकार के शांति बहाली के प्रयासों से स्थानीय रहवासी भी सुकून की सांस ले पा रहे हैं। सीमा पार से आतंक रोकने और घुसपैठियों का खात्मा करने की कोशिशों का ही नतीजा है कि कश्मीर में पर्यटकों की संख्या बढ़ी है। सरकार द्वारा बहुस्तरीय सुरक्षा कवर लगाने का आह्वान तथा तीर्थस्थलों और सभी पर्यटन स्थलों के प्रति सुरक्षा बढ़ाने की कवायद में तेजी लाने का असर जल्द देखने को मिल सकता है। मानव खुफिया जानकारी जुटाने और घुसपैठ के ठिकानों को बंद करने के अलावा क्षेत्र में सक्रिय आतंकियों का सफाया करने निर्णय केंद्र के सकारात्मक प्रयासों का नमूना है। प्रतीत हो रहा है कि तीसरी बार सत्ता में आते ही मोदी सरकार ने पूरी तैयारी के साथ आतंकवाद से जूझने के लिए कमर कस ली है।

संविधानिक ढांचे और लोकतंत्र को चुनौती

वे माओवादी हिंसा को दरकिनार करके इसे गरीब आदिवासियों का विद्रोह कहती हैं। करीब डेढ़ दशक पहले उन्होंने रेड कॉरिडोर के केंद्र माने जाने वाले बस्तर की गुपचुप यात्रा की और दंडकारण्य में माओवादियों के साथ काफी वक्त बिताया। वे माओवादियों को भाई, साथी या कॉमरेड कह कर लाल सलाम कहने में फख्र महसूस किया करती थीं। उन्हें संविधान और लोकतंत्र आदिवासियों की खिलाफत का अस्त्र नजर आता है। 1997 में प्रतिष्ठित बुकर पुरस्कार से सम्मानित अरुंधती रॉय अपनी किताब वॉकिंग विद द कॉमरेड्स में लिखती हैं-भारतीय संविधान, जो भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला है, संसद द्वारा 1950 में लागू किया गया। यह जनजातियों और वनवासियों के लिए दुःख भरा दिन था। संविधान में उपनिवेशवादी नीति का अनुमोदन किया गया और राज्य को जनजातियों की आवास भूमि का संरक्षक बना दिया गया। मतदान के अधिकार के बदले में संविधान ने उनसे आजीविका और सम्मान के अधिकार छीन लिए। अरुंधती अपनी इस किताब में माओवादियों को आंतरिक सुरक्षा का खतरा बताए जाने का मखौल उड़ाती हैं। भारत की यह ख्यात लेखिका मानवाधिकार के मुद्दों पर सरकार पर हमले करने से परहेज नहीं करतीं। अरुंधती कश्मीर में तैनात फौज को जनता की दुश्मन बताती हैं। उन्हें संसद पर हमले के प्रमुख आरोपी अफजल गुरु से हमदर्दी रही। अपने ब्लॉग में वह भारत की पूरी न्याय प्रक्रिया पर कटाक्ष करते हुए कहती हैं-लेकिन अब जब अफजल गुरु को फांसी दे दी गई है, तो मुझे उम्मीद है कि हमारी सामूहिक अंतरात्मा संतुष्ट हो गई होगी। या फिर हमारे खून का प्याला अभी भी आधा ही भरा है? 2010 में राजधानी दिल्ली में एक कार्यक्रम में उन्होंने सार्वजानिक रूप से कहा-कश्मीर कभी भी भारत का हिस्सा नहीं था और उस पर भारत के सशस्त्र बलों ने जबरन कब्जा कर लिया था। कश्मीर की पृथकतावादी ताकतों के लिए अरुंधती पसंदीदा चेहरा हैं, और उनके विचारों को वे भारत के बौद्धिक वर्ग की आवाज कह कर दुनिया भर में प्रचारित करते हैं। 2010 में दिल्ली पुलिस ने उनके खिलाफ देशद्रोह का मामला दर्ज किया था। उन पर भारत विरोधी भाषण देने और कश्मीरी अलगाववाद का समर्थन करने का आरोप लगाया गया। अब अरुंधती रॉय के खिलाफ गैर-कानूनी गतिविधियां अधिनियम के तहत मुकदमा चलेगा। अरुंधती अच्छी लेखिका हैं

लोकसभा का अगला स्पीकर कौन?

संजय दीक्षित

नई संसद का पहला सत्र 24 जून से शुरू हो रहा है। 26 जून को लोकसभा के लिए स्पीकर और डिप्टी स्पीकर पद के लिए चुनाव होगा। परम्परा के अनुसार डिप्टी स्पीकर का पद विपक्ष को दिया जाता है। परन्तु पिछली लोकसभा में कोई भी अधिकृत विपक्ष का नेता नहीं था क्योंकि उसके पर्याप्त संख्या में लोकसभा में सदस्य नहीं थे। शुरू-शुरू में जनता दल (यूनाइटेड) ने रेलवे और वित्त मंत्रालय की मांग की थी, तेलगुदेशम ने स्पीकर का पद चाहा था। परन्तु भाजपा स्पीकर का पद अपने पास रखना चाहती है। असल में किस सदस्य को निष्कासित करना या किसी दल में टूटन की स्थिति में कौन असली पार्टी है, किसके पास चुनाव चिन्ह रहेगा, स्पीकर तय करता है। पिछले दिनों हुई बैठक में जिसमें एन.डी.ए. के सहयोगी दलों के सदस्य थे, उन्होंने सर्वसम्मति से स्पीकर पद पर भाजपा के चुनने का अधिकार दे दिया है। भाजपा ने उदारता दिखलाते हुए डिप्टी स्पीकर का पद अन्य सहयोगी दलों को देना तय हुआ है। ऐसी स्थिति में विपक्ष स्पीकर के लिए अपना उम्मीदवार उतार सकती है, यद्यपि संख्या बल को देखते हुए उसका जीतना असंभव है। असल में स्पीकर का आसन बहुत जिम्मेदारी का होता है। सभी सदस्यों को उसके प्रति उदारता दिखलानी चाहिए। परन्तु इस चुनाव में दोनों पक्षों की ओर से जैसा प्रचार हुआ, उसे कड़वाहट और बढ़ गई और विपक्ष अपना उम्मीदवार जरूर उतारेगी। यद्यपि उसके जीतने के कोई चांस नहीं है, फिर भी इससे स्पीकर पद की गर्म में तो कमी आयेगी ही। असल में शायद भाजपा पुनः ओम बिरला को चुनना पसंद करे और डिप्टी स्पीकर के लिए तेलुगु देशम की किसी महिला को यह पद देना चाहेंगे। चन्द्रबाबू नायडू की पत्नी दग्गुबाती पुरंदेश्वरी का नाम स्पीकर पद के लिए लिया जा रहा था, पर वे इतनी सीनियर हैं कि डिप्टी स्पीकर का पद शायद ही स्वीकार करें। जब कोई दल टूटता है तो स्पीकर का निर्णय अहम हो जाता है।

महाराष्ट्र में शिवसेना की टूटने पर स्पीकर ने अपना फैसला डाले रखा, और चाहा कर भी सुप्रीम कोर्ट इसमें दखल नहीं दे सका कि यह आरोप न लगे कि स्पीकर के अधिकार का सुप्रीम कोर्ट ने अतिक्रमण किया है। यूं कहने के लिए यह एन.डी.ए. की सरकार है परन्तु असल में यह भाजपा की ही सरकार है। मंत्री पद के बंटवारे से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई है। असल में जे.डी.यू. के 12 और तेलुगु देशम के 16 सदस्यों के अलावा शेष दल के मात्र एक-एक सांसद हैं और सभी को मंत्री पद मिल गये हैं। वे किस बलबूते पर बगावत कर सकते हैं। भाजपा 240 सीटें जीतकर बहुमत के आंकड़े से 32 काम हैं। परन्तु अनेक स्वतंत्र उम्मीदवारों ने भाजपा का समर्थन किया है। ऐसे में अन्य दलों में नरेंद्र मोदी की पर्सनेलिटी के बराबर कोई टिक ही नहीं सकता। इस कारण इस तीसरे कार्यकाल में भी मोदी जी उसी तत्परता से अपना लक्ष्य पूरा कर सकेंगे, जैसे वे पिछले कार्यकालों में कर चुके हैं। असल में 400 पर का नारा और भाजपा को 370 के नारे ने लोगों में उदासीनता भर दी थी। फिर इस भयंकर गर्मी में बहुत से भाजपा के समर्थक वोट डालने गये ही नहीं। इसी कारण इस बार वाराणसी से नरेंद्र मोदी जी को उतने मतों से बढ़त नहीं मिली जितने पहले और दूसरे कर्यकाल के दौरान मिली थी। मोदी जी का करिश्मा ही कुछ ऐसा है, कि लोग अपने को मोदी का परिवार मानते हैं। फिर उनकी कर्मठता और निष्ठा के सामने कोई भी विपक्ष का नेता टिक नहीं पाता। विपक्ष वैसे भी खंडित है, तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल में अकेले चुनाव लड़ा। मायावती ने विपक्ष को ज्वाइन ही नहीं किया यद्यपि इस बार लोकसभा में उनका कोई उम्मीदवार नहीं है। असल में जिस तेजी से विभिन्न क्षेत्रों में देश में विकास हो रहा है, उसको देखते हुये तो सभी को एक होकर भारत के विश्व गुरु बनने में मदद करनी चाहिए, क्योंकि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से बढ़कर देश का विकास पहले है।

यह है कानून का राज : हम कब करेंगे आत्मावलोकन?

स्विस प्रशासन इस परिवार द्वारा अपने नौकरों का शोषण किये जाने पर गत 6 वर्षों से नजर रख रहा था। हिंदुजा परिवार के सदस्यों पर आरोप है कि उन्होंने अपने जेनेवा स्थित बंगले में काम करने के लिए भारत से कामगारों को बुलाया और उनका शोषण किया। इस परिवार पर मानव तस्करी के भी आरोप हैं। हिंदुजा परिवार ने अपने नौकरों के पासपोर्ट जब्त कर लिये थे और उन्हें न्यूनतम से भी कम मजदूरी दे रहे थे। साथ ही इन कामगारों के बाहर निकलने व कहीं आने–जाने पर भी हिंदुजा परिवार की ओर से पूरी रोक लगी हुई थी। सरकारी वकील के मुताबिक हिंदुजा परिवार अपने एक कुत्ते पर एक नौकरों से ज्यादा पैसे खर्चकरता था। ह्यह्न मिसाल के तौर पर इस परिवार ने एक नौकरानी जो एक दिन में 18 घंटे काम करती थी उसे तो केवल 7 पाउंड मिलते थे। जबकि स्विस कानून के अनुसार कर्मचारियों को इसके लिए कम से कम 70 पाउंड का भुगतान किया जाना चाहिए था। परन्तु यही परिवार अपने एक कुत्ते के रखरखाव और खाने पर सालाना 10 हजार अमेरिकी डॉलर खर्च करता था। कई नौकरों को बिना छुट्टी के पूरे सप्ताह काम करना होता था। उन्हें वेतन भी स्विस करेंसी यानी फ्रैंक्स में देने के बजाय भारतीय रुपये में दिया जाता था। हालाँकि यह अदालती फैसला आने के एक सप्ताह पहले हिंदुजा परिवार ने भारी रकम चुकाकर तीन पीड़ित कामगारों से अदालत के बाहर समझौता भी किया था। गौर तलब है कि मूल रूप से भारतीय, हिंदुजा परिवार का लगभग 47 बिलियन डॉलर का कारोबारी साम्राज्य है।

तनवीर जाफरी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

स्विट्जरलैंड की एक अदालत ने ब्रिटेन के सबसे अमीर भारतीयों में गिने जाने वाले भारतीय मूल के हिंदुजा परिवार के चार सदस्यों को अपने नौकरों के शोषण के मामले में दोषी करार देते हुए उन्हें चार से साढ़े चार वर्ष तक की कारागार की सजा सुनाई है। स्विस प्रशासन इस परिवार द्वारा अपने नौकरों का शोषण किये जाने पर गत 6 वर्षों से नजर रख रहा था। हिंदुजा परिवार के सदस्यों पर आरोप है कि उन्होंने अपने जेनेवा स्थित बंगले में काम करने के लिए भारत से कामगारों को बुलाया और उनका शोषण किया। इस परिवार पर मानव तस्करी के भी आरोप हैं। हिंदुजा परिवार ने अपने नौकरों के पासपोर्ट जब्त कर लिये थे और उन्हें न्यूनतम से भी कम मजदूरी दे रहे थे। साथ ही इन कामगारों के बाहर निकलने व कहीं आने-जाने पर भी हिंदुजा परिवार की ओर से पूरी रोक लगी हुई थी। सरकारी वकील के मुताबिक हिंदुजा परिवार अपने एक कुत्ते पर एक नौकरों से ज्यादा पैसे खर्चकरता था। ह्यह्न मिसाल के तौर पर इस परिवार ने एक नौकरानी जो एक दिन में 18 घंटे काम करती थी उसे तो केवल 7 पाउंड मिलते थे। जबकि स्विस कानून के अनुसार कर्मचारियों को इसके लिए कम से कम 70 पाउंड का भुगतान किया जाना चाहिए था। परन्तु यही परिवार अपने एक कुत्ते के रखरखाव और खाने पर सालाना 10 हजार अमेरिकी डॉलर खर्च करता था। कई नौकरों को बिना छुट्टी के पूरे सप्ताह काम करना होता था। उन्हें वेतन भी स्विस करेंसी यानी फ्रैंक्स में देने के बजाय भारतीय रुपये में दिया जाता था। हालाँकि यह अदालती फैसला आने के एक सप्ताह पहले हिंदुजा परिवार ने भारी रकम चुकाकर तीन पीड़ित कामगारों से अदालत के बाहर समझौता भी किया था। गौर तलब है कि मूल रूप से भारतीय, हिंदुजा परिवार का लगभग 47 बिलियन डॉलर का कारोबारी साम्राज्य है। हिंदुजा समूह का निवेश मुख्यतः कंस्ट्रक्शन,होटल, कपड़े, ऑटोमोबाइल, ऑयल, बैंकिंग और फाइनेंस जैसे क्षेत्र में है। ब्रिटेन में हिंदुजा परिवार की अनेक बहुमूल्य इमारतें भी हैं। जेनेवा के इस अदालती फैसले ने एक बात तो साबित कर ही दी है कि स्विट्जरलैंड में न केवल कानून का राज है बल्कि वहां का कानून इस बात की भी परवाह नहीं करता कि आरोपी कितना अमीर व कितना रसूखदार है। साथ ही यह भी कि शोषित व पीड़ित वर्ग का व्यक्ति कितना ही गरीब व असहाय क्यों न हो मानवाधिकारों का पक्षधर वहां का कानून उसके साथ है।

अब जरा इसी अदालती फैसले के सन्दर्भ में हम अपने देश के वास्तविक हालात का भी आंकलन करें। भारत सरकार द्वारा बाल अधिकार संरक्षण आयोग अधिनियम, 2005 के अनुच्छेद 24 के अनुसार कारखानों, खदानों एवं जोखिम भरे कार्यों में किसी बालक, जिसकी आयु 14 वर्ष से कम हो, नहीं लगाया जायेगा। हमारे देश में बाल संरक्षण कानून के अतिरिक्त विस्तृत श्रम कानून भी बने हुये हैं। इन कानूनों की पालना व इन्हें लागू करवाने के लिये राष्ट्रीय स्तर पर बाकायदा विभाग हैं,विशेष अदालते हैं। गोया पूरी मशीनरी श्रम व बाल संरक्षण हेतु दिखाई देती है जिनपर सैकड़ों करोड़ रुपए खर्च भी होते हैं। परन्तु इन सब के बावजूद धरातलीय स्थिति क्या है यह कौन नहीं जानता। मुख्य मार्ग के ढाबों से लेकर मंत्रियों सांसदों विधायकों व अधिकारियों के घरों तक में श्रम व बाल संरक्षण कानून की धज्जियाँ उड़ती देखी जा सकती हैं। मजदूरों की तो बात छोड़िये अनेक निजी स्कूल्स तक में अधयापकों व अध्यापिकाओं को वेतन कुछ दिया जाता है तो रजिस्टर में दस्तखत अधिक धनराशि लिखकर कराई जाती है। हद तो यह है कि बंधुआ मजदूरी कानून बने होने के बावजूद अभी भी ठेकेदारी प्रथा के तहत तमाम बंधुआ मजदूर काम करते मिल जायँगे जिन्हें ठेकेदार अपनी मनमानी रकम देकर उनसे 8 से 12 घंटे तक काम करवाता है। ईंट के भट्ठों से लेकर सड़क व भवन निर्माण क्षेत्र में भी ऐसे तमाम मजदूर काम करते देखे जा सकते हैं।

अपने देश में कानून का राज ह्यकितना कायम है यह देखने के लिये आपको दर्जनों ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जबकि किसी जघन्य अपराधी ने सत्ता में आने के बाद अपने ही ऊपर चल रहे आपरधिक मुकददमों को ही वापस ले लिया। यह उदाहरण भी मिलेगा कि सत्ता के करीबी व्यक्ति पर चलने वाला दंगे,फसाद,बलात्कार व हत्या तक का मुकददमा सरकार द्वारा वापस ले लिया गया। कई बार देश के बड़े बड़े कानूनविद यहाँ तक कि अनेक पूर्व न्यायाधीश यह कह चुके हैं कि देश की जेलें आमतौर पर ऐसे गरीब व असहाय लोगों से भरी पड़ी हैं जो आर्थिक रूप से गरीब हैं और लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ पाने में असमर्थ हैं। भारत में अभी पिछले दिनों हुआ बहुचर्चित पुणे पोर्शे कार एक्सीडेंट मामला भी एक बड़ा उदाहरण है जिसमें दो इंजीनियरों को कुचल दिया गया था। इस मामले में नाबालिग चालक ने दावा किया था कि दुर्घटना के समय उसका ड्राइवर कार चला रहा था। लेकिन जांच में उसका यह बयान झूठा निकला। यहाँ भी पैसे और रसूख के बल पर वह अपने ड्राइवर को पैसों के एवज में जेल भेजकर स्वयं को बचाना चाह रहा था परन्तु चूँकि मीडिया ने इस मामले को तूल दे दिया था और कार का रजिस्ट्रेशन भी नहीं था,उधर कुचले गए दो व्यक्ति भी इंजीनियर थे इसलिये जाँच निष्पक्ष करनी पड़ी और रसूखदारों की साजिश धरी रह गयी। परन्तु उनका यह दुस्साहस स्वयं यह बताता है कि भारत में ऐसा संभव है कि रसूखदार स्वयं को बचने के लिये अपने ड्राइवर या नौकर को आगे कर देते हैं। याद कीजिये फरवरी 2022 में जब सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली सीन लूंग ने कहा था कि- ह्यजवाहर लाल नेहरू का भारत ऐसा बन गया है जहां मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, लोकसभा में लगभग आधे सांसदों के खिलाफ बलात्कार और हत्या के आरोप लंबित हैं। हालांकि यह भी कहा जाता है कि इनमें से कई आरोप राजनीति से प्रेरित हैं। ह्य उस समय प्रधानमंत्री ली सीन लूंग द्वारा भारतीय सांसदों को लेकर दिए बयान पर भारत के विदेश मंत्रालय ने आपत्ति भी जताई थी। परन्तु क्या हम इस सवाल से बच सकते हैं कि विदेशी सांसदों में भारत के बारे में ऐसी शर्मनाक टिप्पणियों की नौबत ही क्यों आती है? क्या पिछले कुछ वर्षों के दौरान देश और दुनिया ने यह नहीं देखा कि किस तरह विपक्षी दलों के नेताओं यहाँ तक कि मुख्यमंत्रियों तक को भ्रष्टाचार के मामलों में निशाना बनाते हुये उन्हें जेल भेजा गया,अनेक नेताओं पर प्रवर्तन निदेशालय द्वारा छापेमारियां की गयीं। परन्तु जब वही अपराधी सत्ता की शरण में चला गया तो उसे मंत्री या सांसद बनाकर महिमामंडित किया गया? ऐसी सरकार व उसके अंतर्गत चलने वाले शासन प्रशासन से आखिर कानून का राज स्थापित होने की हम क्या उम्मीद कर सकते हैं? हिंदुजा परिवार को लेकर स्विट्जरलैंड की अदालत से आया फैसला क्या हमें यह सोचने के लिये मजबूर नहीं करता कि अपने देश में कानून का राज स्थापित करने को लेकर आखिर हम कब आत्मावलोकन करेंगे?

पाठों में बदलाव साकारात्मक नजरिया

अब 12वीं कक्षा की राजनीति विज्ञान की किताब में से बाबरी मस्जिद, हिंदुत्व की राजनीति 2002, गुजरात दंगों से जुड़े पाठ को हटा दिया है। इसकी जगह राम जन्मभूमि आंदोलन की विरासत क्या है इस पाठ को जोड़ा गया है। इससे पहले इतिहास की पुस्तकों में राखीगढ़ी और आर्यों के मूल स्थान से जुड़े पाठ जोड़े गए हैं। एनसीआरटी की पुस्तकों में वाकई सकारात्मक बदलाव हो रहे हैं। इसके पहले भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में महरौली के लौह स्तंभ के बारे में भी बताया गया है। ऋग्वेद में लोहे के आविष्कार के बारे में बताया गया है। इसी क्रम में सोना, तांबा और कांसा धातुओं के अविष्कार किए गए। अतएव ऐसे पाठों को जोडा भारतीय विज्ञान की विरासत को छात्रों के सामने लाना है। इसी क्रम में भारत के इतिहास में आर्य अब आक्रामणकारी नहीं, बल्कि भारतीय मूल के रूप में दर्शाए गए हैं। 21 वर्ष की खींचतान और दुनियाभर में हुए अध्ययनों के बाद आखिरकार यह तय हो गया कि आर्य सभ्यता भारतीय ही थी। राखीगढ़ी के उत्खनन से निकले इस सच को देश के पाठ्यक्रमों में शामिल करने का श्रेय राखीगढ़ी मैन के नाम से प्रसिद्ध हुए प्राध्यापक वसंत शिंदे को जाता है। एनसीईआरटी की कक्षा 12वीं की किताब में बदलाव किया गया है। इसमें इतिहास की पाठ्य पुस्तक में ईट, मोती और हड्डियां : हड़प्पा सभ्यता नामक पाठ में आर्यों को मूल भारतीय होना बताया है। इसके अलावा कक्षा 7, 8, 10 और 11 के इतिहास और समाजशास्त्र के पाठ्यक्रमों में भी बदलाव किया गया है।

प्रमोद भार्गव
सेवा निवृत्त उप महाप्रबंधक

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान और प्रषिक्षण परिषद् की पुस्तकों में पढ़ाए जाने वाले पाठों में बदलाव की शुरूआत साकारात्मक नजरिए से हो गई है। अब 12वीं कक्षा की राजनीति विज्ञान की किताब में से बाबरी मस्जिद, हिंदुत्व की राजनीति 2002, गुजरात दंगों से जुड़े पाठ को हटा दिया है। इसकी जगह राम जन्मभूमि आंदोलन की विरासत क्या है इस पाठ को जोड़ा गया है। इससे पहले इतिहास की पुस्तकों में राखीगढ़ी और आर्यों के मूल स्थान से जुड़े पाठ जोड़े गए हैं। एनसीआरटी की पुस्तकों में वाकई सकारात्मक बदलाव हो रहे हैं। इसके पहले भारतीय ज्ञान प्रणाली के संदर्भ में महरौली के लौह स्तंभ के बारे में भी बताया गया है। ऋग्वेद में लोहे के आविष्कार के बारे में बताया गया है। इसी क्रम में सोना, तांबा और कांसा धातुओं के अविष्कार किए गए। अतएव ऐसे पाठों को जोडा भारतीय विज्ञान की विरासत को छात्रों के सामने लाना है। इसी क्रम में भारत के इतिहास में आर्य अब आक्रामणकारी नहीं, बल्कि भारतीय मूल के रूप में दर्शाए गए हैं। 21 वर्ष की खींचतान और दुनियाभर में हुए अध्ययनों के बाद आखिरकार यह तय हो गया कि आर्य सभ्यता भारतीय ही थी। राखीगढ़ी के उत्खनन से निकले इस सच को देश के पाठ्यक्रमों में शामिल करने का श्रेय राखीगढ़ी मैन के नाम से प्रसिद्ध हुए प्राध्यापक वसंत शिंदे को जाता है। एनसीईआरटी की कक्षा 12वीं की किताब में बदलाव किया गया है। इसमें इतिहास की पाठ्य पुस्तक में ईट, मोती और हड्डियां : हड़प्पा सभ्यता नामक पाठ में आर्यों को मूल भारतीय होना बताया है। इसके अलावा कक्षा 7, 8, 10 और 11 के इतिहास और समाजशास्त्र के पाठ्यक्रमों में भी बदलाव किया गया है। इतिहास तथ्य और घटना के सत्य पर आधारित होता है। इसलिए इसकी साहित्य की तरह व्याख्या संभव नहीं है। विचारधारा के चश्मे से इतिहास को देखना उसके मूल से खिलवाड़ है, परंतु अब आर्यों के भारतीय होने के संबंधी एक के बाद एक शोध आने के बाद इतिहास बदला जाने लगा है। इस सिलसिले में पहला शोध स्टेनफोर्ड विविद्यालय के टॉमस कीवीशील्ड ने किया था। 2003 में अमेरिकन जर्नल ऑफ ह्यूमन जेनेटिक्स में प्रकाशित इस शोध-पत्र में सबसे पुरानी जाति और जनजाति के वशांणु (जीन) के आधार पर आर्यों के भारत का मूल निवासी बताया गया था। हालांकि वर्ष 2009 में वाराणसी हिंदू विविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो लालजी सिंह और प्रो. थंगराज ने भी आनुवांशिक परीक्षण के बाद आर्यों को मूल भारतीय बताया था। 2019 में प्रो. वसंत शिंदे द्वारा राखीगढ़ी उत्खनन से मिले 4000 साल पुराने वंशाणु की जांच में सबसे बड़ा सच सामने आया। शोध में पाया गया कि राखीगढ़ी से मिला जीन वर्तमान के प्रत्येक भारतीय व्यक्ति में उपलब्ध है। इसके आधार पर यह तथ्य स्थापित हुआ कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति आर्यों द्वारा निर्मिंत है। एनसीआरईटी के इतिहास पाठ्यक्रम निर्धारण समिति के अध्यक्ष बनने पर प्रो. शिंदे ने इस तथ्य के आधार पर पाठ्यक्रम में संशोधन कराए हैं। इसी पुस्तक में मराठा शासक छत्रपति शिवाजी के नाम के साथ छत्रपति और महाराज जोड़ा गया है। इसी तरह कक्षा 12वीं के समाजशास्त्र विषय के पाठ्यक्रम से सांप्रदायिक दंगों के चित्र हटाए गए हैं। इतिहास पुस्तकों में यह बदलाव सिनौली-राखीगढ़ी में हुए उत्खननों में मिले साक्ष्यों के आधार पर संभव हुआ है। प्रोफेसर शिंदे ने राखीगढ़ी के उत्खनन के समय बताया था कि अलग-अलग खुदाई में 106 से भी ज्यादा नर-कंकाल मिले हैं। साथ ही भिन्न आकार व आकृति के हवन-कुंड और कोयले के अवशेष मिले हैं। तय है भारत में 5000 साल पहले हवन होते थे। यहीं सरस्वती और इसकी सहायक दृश्यवंती नदी के किनारे हड़प्पा सभ्यता के निशान मिले हैं। ये लोग सरस्वती की पूजा करते थे। आनुवांशिक संरचना के आधार पर हैदराबाद की संस्था सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी के वैज्ञानिकों द्वारा किए गए इस शोध से जो निष्कर्ष सामने आए थे, उनसे स्पष्ट हुआ था कि मूल भारतीय ही आर्य थे। पाश्चात्य इतिहास लेखकों ने पौने दो सौ साल पहले जब प्राच्य विषयों और प्राच्य विद्याओं का अध्ययन शुरू किया तो बड़ी कुटिल चतुराई से जर्मन विद्वान व इतिहासविद् मैक्समूलर ने पहली बार आर्य शब्द को जाति सूचक शब्द से जोड़ दिया। वेदों का संस्कृत से जर्मनी में अनुवाद भी पहली बार मैक्समूलर ने ही किया था। ऐसा इसलिए किया गया जिससे आर्यों को अभारतीय घोषित किया जा सके। जबकि वैदिक युग में आर्य और दस्यु शब्द पूरे मानवीय चरित्र को दो भागों में बांटते थे। प्राचीन साहित्य में भारतीय नारी अपने पति को आर्य-पुरुष अथवा आर्य-पुत्र नाम से संबोधित करती थी। इससे यह साबित होता है कि आर्य श्रेष्ठ पुरुषों का संकेत-सूचक शब्द था। ऋग्वेद, रामायण, महाभारत, पुराण व अन्य संस्कृत ग्रंथों में कहीं भी आर्य शब्द का प्रयोग जातिसूचक शब्द के रूप में नहीं हुआ है। आर्य का अर्थ श्रेष्ठि अथवा श्रेष्ठ भी है। यदि आर्य भारत में बाहर से आए होते तो प्राचीन विपुल संस्कृत साहित्य में अवश्य इस घटना का उल्लेख व स्पष्टीकरण होता।

टूटती सांसों पर राजनीति करने वालों को सिखाना होगा सबक

डा. रवीन्द्र अरजरिया

देश के लोकतंत्र की व्यवस्था का स्याह पक्ष प्रारम्भ हो चुका है। विधायिका की नींव में राजनैतिक दलों ने मट्ठा पिलाना शुरू कर दिया है। सत्ता, सिंहासन और सल्तनत के लोलिपों व्दारा न केवल परम्परागत मयार्दायें ही तार-तार की जा रहीं हैं बल्कि स्वार्थपरिता की चरमसीमा पर बैठकर संविधान की आड में षडयंत्रकारी योजनाओं को भी अमली जामा पहनाया जा रहा है। कार्यपालिका के अनेक नौकरशाह निरंतर बेलगाम होते जा रहे हैं। नियम, कानून और अनुशासन की धज्जियां उडाने की होड सी लगी है। सरकार के सामने समस्यायें पैदा करने में महारत पाये वेतनभोगियों व्दारा अपनी मनमानियों, लापरवाहियों और अवैध उगाही पर पर्दा डालने के लिये दलगत कीचड उछालने के नये-नये तरीके सुझाये जा रहे हैं। ऐसे में कार्यपालिका और विधायिका के संयुक्त विशेषज्ञ व्दारा तो न्यायपालिका तक को धाराओं, अनुच्छेदों और व्यवस्थाओं में उलझाकर रख दिया है। उनकी पार्टी के सिपाहसालार अपने दायित्वों की पूर्ति के प्रयासों के स्थान पर समस्याओं का ढीकरा दूसरों के सिर पर फोडने में जुटे हैं। दिल्ली में विकराल होते जल संकट को निपटाने के लिए चिट्ठी-चिट्ठी खेल खेला जा रहा है।

समस्या समाधान में देरी के लिए कभी उपराज्यपाल के सिर दोष मढा जाता है तो कभी हरियाणा सरकार को कोसा जाने लगता है। कभी केन्द्र को पहल न करने के लिये कटघरे में खडा किया जाता है तो कभी व्यवस्था के लिए विपक्ष पर अंगुली उठायी जाती है। इतना सब करने वाली आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार ने पंजाब राज्य की अपनी ही पार्टी की सरकार के साथ मिलकर व्यवहारिक समाधान निकालने में रुचि नहीं दिखाई। सियासी दावपेंचों के मध्य आम आदमी की जिन्दगी दांव पर लगाने वाले नेता धरने पर बैठकर अपने कर्तव्यों की इति मान लेते हैं जबकि हरियाणा सरकार व्दारा आंकडों के साथ दिल्ली की जलापूर्ति का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया जा चुका है। वहीं दूसरी ओर संवैधानिक व्यवस्था के लचीलेपन का फायदा उठाकर इस आम आदमी पार्टी के मुखिया अरविन्द केजरीवाल जेल के अन्दर से दिल्ली की सरकार चला रहे हैं। देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब आरोपी के रूप में सलाखों के पीछे पहुंचा व्यक्ति मुख्यमंत्री पद पर आसीन ही नहीं है बल्कि निरंतर दिशा निर्देश भी जारी कर रहा है। राजनैतिक दलों के आपसी रसायन से घातक अम्लराज बनने की स्थिति निर्मित हो चली है जिसका उपयोग आम आवाम पर होना लगभग तय है। दिल्ली में गठबंधन के मंच पर समान विचारधारा का बन्दिस प्रस्तुत करने वाले पंजाब में अलग-अलग ढपली पर अलग-अलग राग अलापते रहे। कहीं प्रशंसा तो कहीं निंदा करने वालों की चालों से अल्पसंख्यक ही सबसे ज्यादा ठगे गये हैं। उनकी समझ में नहीं आ रहा है कि साम्प्रदायिकता का भय दिखाकर वोट लेने वाले अब कौन सी नई चाल चलने वाले हैं। वहीं दिल्ली के जल संकट को लम्बा खींचने हेतु राजनैतिक बयानबाजी करने, विपक्ष की सरकारों को कोसने और केन्द्र को घेरने का क्रमबध्द सिलसिला शुरू हो गया है ताकि नागरिकों को विपक्षी दलों के विरोध में उत्तेजित किया जा सके। बैंगलोर, पूना, मुम्बई जैसे अनेक महानगरों में लम्बे समय से चल रही जल समस्या अब विकराल होती जा रही है मगर वहां की सरकारें अपने स्तर पर समाधान कर रहीं हैं।

पानी का परेशानी से जूझ रहे अनेक महानगरों में दसियों कोस दूर से जलापूर्ति हो रही है मगर फिर भी वहां के उत्तरदायी लोगों की स्वीकृति पर बहुमंजिला इमारतों का जंगल निरंतर बढ़ता जा रहा है। औद्योगिक इकाइयां स्थापित हो रहीं हैं। बडे-बडे संस्थान खोले जा रहे हैं। आबादी का घनत्व विस्फोटक स्थिति तक पहुंचता जा रहा है। सैकडों फुट गहरे बोर अब हजार का आंकडा पार करने लगे हैं। नदियां को बालू माफियों ने रेतस्थान बना दिया है। भयावह होती स्थिति की ओर से आंखें बंद करने वाले अनेक उत्तरदायी वेतनभगियों की नजर महीना पूरा होने के बाद केवल बैंक खाते में आने वाली मोटी तनख्वाय, मिलने वाली अन्य सुविधाओं और फर्जी बिलों के भुगतान पर ही टिकी रहती है। कार्यपालिका के ऐसे महारथियों से प्रशिक्षण प्राप्त करके विधायिका के अनेक चेहरे स्वयं के लाभ हेतु हमेशा विपक्ष पर दोष मढे का सत्तासिध्द उपाय ही सुझाते हैं। दायित्वबोध और कर्तव्यबोध के साथ-साथ अब तो राष्ट्रबोध तक अस्तित्वहीन होने की कगार पर पहुंच गया है। स्वार्थवाद के दलदल में आकण्ठ डूबे लोगों के लिए व्यक्तिवाद, परिवारवाद और स्वजनवाद ही सर्वोच्च होता जा रहा है। ईमानदार करदाताओं, अनुशासित नागरिकों और लोकतंत्र की आखिरी पायदान पर खडे लोगों के समर्पण को शारीरिक विलासता पर लुटाने वालों की नैतिकता पूरी तरह से मर चुकी है। टूटती सांसों पर राजनीति करने वालों को सिखाना होगा सबक अन्यथा वे निरीह की लाश पर भी चंदा वसूलने से नहीं चूकेंगे। सत्ता के नशे की आदत में मदहोश हो चुके लोगों को किसी भी कीमत पर सिंहासन की दरकार होने लगी है। आदर्श, सिध्दान्त और मान्यता के मायने खोने लगे हैं। सरकार बनाने के लिए विरोधी विचारधाराओं के पोषक अब आपस में आलिंगनबध्द हो रहे हैं। पार्टियों के आधारभूत दर्शन से लेकर व्यवहारिक स्वरूप तक में परिवर्तन दिखने लगे हैं। सार्वजनिक मंचों से अतीत का संदर्भ लेकर कडी आलोचना करने वाले अब स्वार्थपूर्ति हेतु एक-दूसरे की शान में कसीदे पढने लगते हैं ऐसे में पार्टी के पक्ष में मतदान कर चुके लोगों के पास स्वयं को कोसने के अलावा कोई चारा नहीं बचता।

संक्षिप्त खबरें

युवती का शव बरामद , प्राथमिकी दर्ज

मकेर (सारण) नेशनल हाईवे 777 पर फुलवरिया चवर से एक युवती का शव बरामद किया है । घटना के सम्बंध में बताया जाता हैं कि कुछ ग्रामीण चवर में काम करने हेतु गए हुए थे जहां पर एक शव को कुत्ता नोच नोच कर खा रहा था ,इसकी सूचना ग्रामीणों ने मकेर पुलिस को दिया ।पुलिस ने उक्त स्थल से युवती का शव बरामद कर छपरा पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है ।कुछ ग्रामीणों का कहना है कि मामला प्रेम प्रसंग का हो सकता है फिलहाल फुलवरिया पंचायत के चौकीदार दशरथ मांझी के बयान पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई है जिसका केसः ल्लङ्ग 175/24 है । इस घटना से युवती को लेकर कई तरह की बाते की जा रही हैं ।फिलहाल पुलिस युवती की शिनाख्त करने की कोशिश कर रही हैं ।इस संबंध में प्रभारी थाना अध्यक्ष शशि रंजन ने बताया कि उक्त हत्या में शामिल सभी लोगो की शिनाख्त कर करवाई की जाएगी

लापता युवक की मोटरसायकिल मिली, मगर वह नहीं

लहलादपुरः शनिवार के दिन अपने घर से मजदूरी करने निकले युवक की मोटरसायकिल नहर में मिली, मगर वह युवक अभीतक गायब है. लापता युवक के परिजनों के अनुसार वह मजदूरी करने घर से निकला, मगर हर दिन की भांति शाम तक जब वह घर वापस नहीं लौटा तो उसके परिजनों ने उसे जहां-तहां ढूंढ़ना शुरू कर दिया. परिजनों ने बताया कि उसे ढूंढ़ने के क्रम में दयालपुर गांव स्थित शायफन के नजदीक नहर से उसकी मोटरसायकिल प्राप्त हुई. मगर लापता युवक का कोई अत्ता-पत्ता नहीं चला. लापता युवक जनता बाजार थाना क्षेत्र के लहलादपुर गांव निवासी खेडारु राम का 24 वर्षीय पुत्र पप्पु राम बताया जाता है

आपसी विवाद में दो पक्षों के बीच हुई जमकर मारपीट

इसुआपुर । थाना क्षेत्र के रामचौरा गांव में दो पक्षों के बीच पूर्व से चले आ रहे विवाद को लेकर जमकर मारपीट हुई । जिसमें तीन लोग बुरी तरह से जख्मी हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए सीएचसी इसुआपुर ले जाया गया। वहां प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से जख्मी स्वर्गीय रामो महतो के पुत्र मुकेश महतो तथा दूसरे पक्ष के स्वर्गीय राजकुमार मांझी के पुत्र रोशन मांझी तथा राजन मांझी को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया। घायल रोशन मांझी ने घटना से संबंधित एक लिखित आवेदन इसुआपुर थाना में दिया है।

कनीय अभियंता से हुई मारपीट के मामले में दर्ज हुई प्राथमिकी

एकमा। स्थानीय नगर पंचायत एकमा बाजार के कनीय अभियंता लालू कुमार से शनिवार के दिन नगर पंचायत के वार्ड संख्या 14 के वार्ड पार्षद उमेश बैठा अपने भाई मुकेश बैठा एवं पांच अज्ञात लोगों के साथ कार्यालय में आकर गाली गलौज करते हुए कार्य में कमीशन मागंने लगें नहीं देने पर जान से मारने की धमकी देते हुए जरूरीयात कागजात को फाड़ दिया। जिस पर कार्यपालक पदाधिकारी पूजा माला के अनुशंसा पर थाना में प्रातमिकी दर्ज कराई गई । पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच में जुट गई है।

मल्टीलेयर फार्मिंग से किसानों को होगा लाभ

बेतिया(घनश्याम)।मझौलिया प्रखंड स्तिथ कृषि विज्ञान केंद्र माधोपुर के वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉक्टर अभिषेक प्रताप सिंह ने बताया कि आज घटते हुए जोत और ध्यान में रखते हुए कम जगह में अधिक से अधिक सब्जियां की खेती से आमदनी में वृद्धि के साथ-साथ प्रति इकाई क्षेत्रफल से कम लागत से खेती करना संभव हो रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए केंद्र में एक प्रत्यक्षण इकाई की स्थापना की गई है जिसमें करेला, मिर्च, खीरा,अदरक, परवल एवं आम भी लगाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को जागरूक करना है। उद्यान वैज्ञानिक डॉ धीरू तिवारी ने बताया कि कुछ किसान भाई इस तकनीक को अपनाकर खेती कर रहे हैं परंतु उन्हें और आधुनिक तरीके से इस तरह की खेती को करने की आवश्यकता है। इस तकनीकी का उपयोग करने से प्रतेक किसान तीस से चालीस प्रतिशत का लाभ कमा सकते है।

देश सेवा के लिए समर्पित श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को पूरा कर रहे हैं नरेंद्र मोदी :रणजीत कुमार

एक देश एक विधान एक निशान के लिए आजीवन कार्य करते रहे श्यामा प्रसाद मुखर्जी : रामदयाल शर्मा

- भारत देश को नई दिशा देने वाले थे श्यामा प्रसाद मुखर्जी : विनय कुमार सिंह
- आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है श्यामा प्रसाद मुखर्जी : वेद प्रकाश उपाध्याय

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। भारतीय जनता पार्टी द्वारा जिले के सभी मंडलों में श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पुण्यतिथि को बलिदान दिवस के रूप में भाजपा नेताओं, पदाधिकारी एवं कार्यकताओं ने श्रद्धा पूर्वक मनाया।

भाजपा के मुख्य कार्यालय में जिला अध्यक्ष रणजीत सिंह की अध्यक्षता में आयोजित श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि सह बलिदान दिवस के उपलक्ष में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि एक सच्चे देशभक्त थे श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं उनके सपनों को पूरा कर रहे हैं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। बिहार प्रदेश अनुशासन समिति के प्रदेश अध्यक्ष सोनपुर के पूर्व विधायक विनय कुमार सिंह ने बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत देश को एक नई दिशा देने का काम किया। उन्होंने एक देश एक निशान एक प्रधान के सिद्धांत के लिए कश्मीर में आजीवन आंदोलन करते रहे उनका नारा था कश्मीर हमारा है को पूरा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। पूर्व अध्यक्ष वेद प्रकाश उपाध्याय अपने संबोधन में कहा कि सच्चे देशभक्त एवं भारत माता के सपूत थे श्यामा प्रसाद मुखर्जी। पूर्व अध्यक्ष रामदयाल शर्मा ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जीवनी आज भी युवाओं को नई दिशा देने का काम करती उनका बलिदान भारत आजीवन याद करते रहेगा।

जिला महामंत्री शत्रुघ्न भक्त ने संचालन किया एवं इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से हेम नरायण सिंह, लोकसभा संयोजक डॉ धर्मेंद्र सिंह, जिला उपाध्यक्ष रामाशंकर मिश्रा,अनु सिंह, गायत्री देवी, मनोज कुशवाहा, जिला महामंत्री विवेक कुमार सिंह, धर्मेंद्र साह, कार्यालय मंत्री अर्द्धेन्दु शेखर, जिला मंत्री रंजन यादव, डॉ राहुल राज, मनोज पाण्डेय,अंगद साह,नगर अध्यक्ष राजेश फैशन, रिंकू सिंह, शत्रुघ्न चौधरी, अनिल यादव अनुप यादव,नंदन जायसवाल, विक्की श्रीवास्तव,मीरा देवी,नितु सिंह,भरत मांझी, अर्जुन कुमार सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता शामिल हुए।

सभी रक्तदाता है सही मायने में समाज के नायक : जीनत मसीह

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।रक्तदाता ही सही मायने में समाज के नायक हैं जो वैसे लोगों की जान बचाते हैं जिन्हें खून की आवश्यकता होती है।उक्त बातें रेड क्रॉस सोसाइटी सारण के सचिव जीनत मसीह ने सदर अस्पताल के ब्लड बैंक में रेड क्रॉस सोसाइटी के बैनर तले अडानी ग्रुप द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में रविवार को कही। उन्होंने कहा कि समाज सेवा के कई आयाम है लेकिन रक्तदान न केवल समाज सेवा है बल्कि सबसे बड़ा दान है।रेड क्रॉस सोसायटी के सदस्य डॉ० शहजाद आलम ने कहा की रेड क्रॉस सोसाइटी की ओर से अस्पताल में पर्याप्त ब्लड की उपलब्धता सुनिश्चित करने में काफी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।इसमें रेड क्रॉस सोसाइटी के युवा इकाई का अहम योगदान है।वहीं अडानी ग्रुप के प्राजेक्ट हेड आनंद झा ने कहा कि रक्तदान करने से न केवल हम लोगों की जान बचाने में अपना योगदान करते है बल्कि उस व्यक्ति के साथ खून का रिश्ता जोड़ लेते है।रक्तदान करने वाले में अडानी ग्रुप के सर्कल हेड पंकज सिंह, डिवीजन हेड छपरा कौशल कुमार सिंह,अडानी ग्रुप छपरा के सदस्य अमित कुमार मिश्रा,आशीष,कौशल,रविकांत,सुजीत,शंकर कुमार, प्रियारंजन,हर्षित अन्य ने रक्तदान किया।रक्तदान शिविर के सफल आयोजन में रेड क्रॉस सोसायटी की सदस्य संजीव चौधरी,अमन राज का महत्वपूर्ण भूमिका रही।

चिरांद रत्न से सम्मानित हुए धर्म प्रचारक अरुण पुरोहित

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण जिला डोरीगंज प्रखंड के चिरांद गांव में 17वां गंगा महाआरती के शुभ अवसर पर चिरांद रत्न से अरुण पुरोहित धर्म प्रचारक जिला प्रमुख विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री पुनीत कुमार गर्ग जिला सत्र न्यायाधीश छपरा ने मोमेंटो अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। मंच संचालन करते हुए शिक्षाविद रामदयाल शर्मा ने अरुण पुरोहित के द्वारा धर्म जागरण पर्यावरण स्वच्छता एवं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य केलिए ह्लचिरांद रत्नह्व की घोषणा की और बताया सम्मान देने का उद्देश्य यह है कि आप सभी भी अरुण पुरोहित के तरह ही सनातन हिंदू जागरण का कार्य करें ताकि आपको भी सामाजिक संस्थाओं के द्वारा सम्मानित किया जाए । इस अवसर पर अरुण पुरोहित ने कहा कि सारण की जनता का प्रेम एवं स्नेह से हमें कार्य करने की ऊर्जा प्राप्त होती है हमारे समस्त सहयोगियों का यह सम्मान है । आप हम सब मिलकर मां गंगा की स्वच्छता का संकल्प ले ना हम मां गंगा में गंदगी डालेंगे और दूसरे को भी गंगा स्वच्छ रखने का संकल्प कराएंगे। मानसून शुरू होते ही बड़े पैमाने पर पौधा रोपण का कार्यक्रम किया जाएगा। आप सभी भी वृक्षारोपण कर पर्यावरण को संतुलित करें इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष श्री कृष्ण कान्त ओझा, सचिव श्री राम तिवारी, मुख्य अतिथि श्री पुनीत कुमार गर्ग जिला सत्र न्यायाधीश छपरा, श्री परमेंद्र कुमार बाजपेई कुलपति जयप्रकाश विश्वविद्यालय, मुख्य संरक्षक 1008 महंत मैथिली शरण महाराज लक्ष्मण किलाधीश अयोध्या, महंत राम जानकी मठ पातेपुर वैशाली विशिष्ट अतिथि लक्ष्मी नारायण गुप्ता महापौर नगर निगम छपरा शाहिद हजारों हजार की संख्या में महिलाएं पुरुष बच्चों ने भाग लिया। काशी से आए 11 बटुकों के द्वारा गंगा महाआरती का अद्भुत दृश्य प्रस्तुत किया गया पूरा वातावरण भक्ति में हो गया। जय मां गंगे हर हर गंगे के उद्घोष से गूंजायमान रहा बंगाली बाबा का घाट।

फोकानिया मौलवी का डॉक्यूमेंट छात्र-छात्राएं अविलम्ब उपलब्ध करावें : डीएमडब्लूओ

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । मुख्यमंत्री प्रोत्साहन राशि से 2023 में वंचित मौलवी - इंटर पास छात्राए एवं फोकानिया - मैट्रिक छात्र - छात्रओं की राशि सरकार द्वारा उपलब्ध करा दिया गया है ' इस संबंध में जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी ने जानकारी देते हुए बताया कि 2023 में मौलवी प्रथम श्रेणी से पास करने वाले केवल छात्राओं को 15000 दिए जाने का प्रावधान है । जबकि 2023 में प्रथम श्रेणी से फोकानिया- मैट्रिक पास करने वाले छात्र-छात्राओं दोनों को 10000 की राशि प्रोत्साहन के रूप में दिया जाता है । ताकि छात्र-छात्राएं आगे की तालीम हासिल कर सके । गत मार्च में अल्पसंख्यक कल्याण विभाग द्वारा राशि उपलब्ध कराया गया था । लेकिन वित्तीय वर्ष समाप्ति होने के कारण सभी छात्र-छात्राओं को राशि नहीं मिल पाया था ' जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी ने यह भी बताया कि प्रोत्साहन राशि से वंचित छात्राओं की राशि सरकार द्वारा उपलब्ध करा दिया गया है । उन्होंने कहा कि मौलवी-इंटर 2023 में प्रथम श्रेणी से पास छात्राएं एवं फोकानिया-मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास छात्र-छात्राएं दोनों जिन्होंने प्रथम श्रेणी से पास किया है, और उन्हें अब तक प्रोत्साहन राशि नहीं मिल पाया है, अल्पसंख्यक कल्याण कार्यालय में मार्कशीट, बैंक अकाउंट, आधार कार्ड एवं आवासीय प्रमाण पत्रों के साथ यथाशीघ जमा करें । ताकि प्रोत्साहन राशि को उपलब्ध कराया जा सके । जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी ने जिला के मदरसा प्रिंसिपल सहित छात्र-छात्राओं से कहा कि समय से डॉक्यूमेंट जमा नहीं करने पर छात्र राशि से वंचित हो जाएंगे, उन्होंने यथाशीघ्र डॉक्यूमेंट जमा करने का आग्रह किया है ।

नीट के पेपर को पूर्णतः रद्द कर पुणः आयोजित हो नीट की परीक्षा :अमित नयन

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।रविवार को एआईएसएफ सारण जिला सचिव अमित नयन ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि नीट के पेपर लीक मामले में एनटीए और केंद्र सरकार पूरी तरह से जिम्मेदार हैं। पेपर लीक मामले में पिछले दिनों देवघर से छः लोगों को गिरफ्तार किया गया। जो की नालंदा जिला से ताल्लुकात रखते हैं। अमित नयन ने कहा कि 24 लाख छात्रों का भविष्य केंद्र सरकार और एनटीए ऐसी बर्बाद नहीं कर सकता। पिछले 10 वर्षों में देश के बच्चों के भविष्य के साथ लगातार खिलवाड़ होते आ रहा है जो की अब बर्दाश्त से बाहर है।जिला सचिव अमित नयन ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के अभी तक शिक्षा मंत्री रहने पर सवालिया निशाना साधा है। अकी केंद्र सरकार क्यों उन्हें शिक्षा मंत्री के पद से हटा रही है? इतना गैरजिम्मेदाराना रवैया अपना कर केंद्र सरकार देश को कमजोर कर रही है। उन्होंने कहा कि कैसे बिना कोई जांच के शिक्षा मंत्री एनटीए को क्लीन चिट दे रहे हैं? शिक्षा मंत्री का स्टेटमेंट पुरी तरह से गैरजिम्मेदाराना है।एक तरफ देश में लगातार हर जगह पेपर लीक होते जा रहा है। वहीं केंद्र सरकार और प्रतिष्ठित संस्थान जिन्हें परीक्षा संचालन की जिम्मेदारी मिली है वह अपना पल्ला झाड़ रहे हैं।यह देश के लिए बेहद हीं दुर्भाग्यपूर्ण है।नीट धांधली में उन्हें और एनटीए के अध्यक्ष को तत्काल अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।केंद्र सरकार और नेशनल टेस्टिंग एजेंसी को संवेदनशीलता दिखाते हुए तो पेपर लीक के दोषियों को शीघ्रता पूर्वक गिरफ्तार करते हुए कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। ताकि भविष्य में ऐसी कोई भी गुस्ताखी करने से माफिया का गिरोह हजार बार सोचे। कई जगह गिरफ्तारिया हो रही है, ऐसे समय में केंद्रीय शिक्षा मंत्री बयान दे रहे हैं की नीट की परीक्षा में कोई धांधली नहीं हुई है। यह बेहद ही असंवेदनशील एवं गैरजिम्मेदाराना है। सभी प्रदेशों को विश्वास में लेकर देश में एक पेपर लीक पर ठोस कदम उठाने की जरूरत है। दोषियों को सख्त से सख्त सजा मुकर्रर हो इसके इंतजामात हो। एआईएसएफ जिला परिषद इसकी मांग करता है कि नीट के पेपर को रद्द करके पुणः नए सिरे के साथ छात्रों को विश्वास में लेकर परीक्षा का आयोजन हो। इसकी हम मांग करते हैं।

चकिया घाट से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद, नाव को भी किया गया जब्त

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । सारण पुलिस द्वारा जिला भर में अवैध शराब सेवन,निर्माण, बिक्री, भंडारण एवं माफियाओं के खिलाफ चलाए जा रहे हैं विशेष अभियान के क्रम में डोरीगंज थाना अंतर्गत चकिया घाट के एक नाव से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद किया गया है । सारण एसपी कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार गुप्त सूचना के आधार पर डोरीगंज थाना एवं एएलटीएफ टीम की संयुक्त कार्रवाई में डोरीगंज थाना अंतर्गत चकिया घाट पर एक नाव के तहखाना से 1816. 32 लीटर विदेशी शराब जप्त किया गया है । सारण पुलिस द्वारा नाव को भी जप्त कर लिया गया है । एसपी कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक चकिया घाट पर कुछ शराब माफिया विदेशी शराब का खेप मंगवाकर नाव से उतार रहे थे, इसी क्रम में सारण पुलिस ने छापामारी कर शराब सहित नाव को भी जप्त कर लिया । इस मामले में डोरीगंज थाना कांड संख्या 133/ 24 दर्ज कर उत्पाद अधिनियम के तहत कार्रवाई कर रही है । छापामारी टीम में पुलिस अवर निरीक्षक सह थानाध्यक्ष डोरीगंज सूरज कुमार, सहायक अवर निरीक्षक सूर्यनारायण मंडल एवं जिला एएलटीएफ टीम सारण आदि शामिल थे ।

बंदरों के आतंक से ग्रामीण परेशान

प्रात :किरण संवाददाता

माँझी प्रखण्ड के छोटकी माड़ीपुर तथा गोबरही के साधपुर शीतलपुर गाँव के लोग पिछले कई दिनों से तीन सनकी बंदरों के आतंक से परेशान हैं। दूसरे किसी गाँव से एक साथ छोटकी माड़ीपुर के बगीचे में पहुँचे तीनो सनकी बन्दर अबतक लगभग एक दर्जन ग्रामीणों के साथ साथ कई मवेशियों को भी काटकर उन्हें बुरी तरह जख्मी कर चुके हैं। सभी जख्मी लोगों तथा मवेशियों का सरकारी अथवा निजी अस्पतालों में इलाज चल रहा है। बंदरों के आतंक से गांव के लोग तथा उस गाँव से होकर आने जाने वाले राहगीर एवम मवेशी बेहद परेशान तथा दहशतजदा हैं। उक्त गाँव निवासी एवम सामाजिक कार्यकर्ता विक्की कुमार सिंह ने बताया कि शाकाहारी प्रजाति से ताल्लुक रखने वाले बंदरों से अलग स्वभाव के ये तीनो सनकी बन्दर अजीबोगरीब ढंग से मवेशियों के मांस नोचकर उसे बड़े ही चाव से खा जा रहे हैं। तीन सनकी बंदरों से जुड़ा यह वाकया देखकर ग्रामीण भी हैरत में हैं। ग्रामीणों ने वन विभाग के कर्मियों से मिलकर तीनों सनकी बंदरों से निजात दिलाने के उद्देश्य से उन्हें पकड़कर अन्यत्र किसी जंगल में छोड़ने की माँग की है।

महिला थाना परिसर में महिला थानाध्यक्ष सहित पुलिस कर्मियों ने चलाया साफ- सफाई अभियान

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। पुलिस अधीक्षक, बगहा सुशांत कुमार सरोज के निर्देश के आलोक में रविवार को महिला थाना परिसर में स्वच्छता के लिए श्रमदान अभियान चलाकर साफ - सफाई का कार्य किया गया।श्रमदान अभियान में महिला थाना की की पुष्पा कुमार ट्विंकल सहित सभी पुलिस पदाधिकारी एवं कर्मियों ने भाग लिया। महिला थानाध्यक्ष पुष्पा कुमार ट्विंकल ने बताया कि एसपी बगहा सुशांत कुमार सरोज के निर्देश के आलोक में रविवार को अहले सुबह श्रमदान अभियान चलाकर विशेष साफ- सफाई का कार्य किया गया। जहां सभी पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस कर्मियों द्वारा महिला थाना परिसर में लगे पौधों के आस पास विधिवत साफ -सफाई कार्य किया और थाना परिसर में लगे पौधों की सिंचाई भी की गई।

ऊक्त विशेष साफ-सफाई कार्य में एसआई ललित रजक,ओ आर अनिल कुमार,महिला सिपाही नेहा कुमारी,पूजा कुमारी प्राची कुमारी, होमगार्ड तैकिर अहमद, मो.मुन्ना,नागेंद्र महतो शामिल रहे।विशेष साफ-सफाई अभियान के दौरान महिला थाना की एसएचओ पुष्पा कुमार ट्विंकल ने बतायी कि सभी पुलिस कर्मचारियों ने महिला थाना परिसर में लगातार स्वच्छता बनाए रखने,खिड़कियां,दरवाजे, फर्नीचर की साफ सफाई करने के साथ ही थाने के रिकॉर्ड इत्यादि की लगातार देखभाल करने को भी कहा गया।महिला थाना की एसएचओ पुष्पा कुमार ट्विंकल ने बतायी कि प्रत्येक व्यक्ति को साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक पेड़-पौधों को लगाने के लिए आवाह्न की। उन्होंने बतायी कि एक पेड़ के ऑक्सीजन से सैकड़ों लोग लाभान्वित होते हैं।हम सभी जहाँ भी रहे,अपने आस पास के वातावरण को हमेशा स्वच्छ रखना चाहिए।उन्होंने बतायी की महिला थाना परिसर को स्वच्छ तथा सुंदर बनाए रखने के लिए प्रत्येक रविवार को साफ-सफाई करने के लिए श्रमदान का यह विशेष अभियान आगे भी जारी रहेगा।

सीआईएसएफ के जवान का ट्रेन से पैर फिसलने से हुई मौत , घर में मचा कोहराम

प्रात :किरण संवाददाता

एकमा - थाना क्षेत्र के पचुवां गांव निवासी स्वः गिरीश देव पाठक के 40 वर्षीय पुत्र सी आई एस एफ के जवान राजेश पाठक उड़ीसा में कार्यरत थे । विभागीय कार्य को लेकर रांची के हटिया शनिवार के दिन आए हुए थे । कार्य निपटारा करने के पश्चात वह उड़ीसा जाने के लिए ट्रेन पकड़ने के दौरान पैर ट्रेन से फिसल गयी । ट्रेन भी अपनी रफ्तार पकड़ रही थी इसी दौरान ट्रेन के नीचे गिर पड़े जिससे उनकी मौत घटनास्थल पर ही हो गई । इसकी खबर विभाग को मिलते हैं सी आई एस एफ के अधिकारी व पदाधिकारी घटना स्थल पर पहुंच कर जायजा लिया इसके पश्चात शव को अपने कब्जे में लेकर जवान के घर रविवार के दिन पहुंचे । जहां शव पुरा तिरंगा से लिपटा हुआ था । जवान का शव घर के दरवाजे पर पहुंचते ही गांव में पसरी मातमी सन्नाटा घर में मच गई कोहराम जहां अंतिम दर्शन करने के लिए लोगों के तांता लग गई । वही मृतक की पत्नी सीमा देवी बड़ा पुत्र विवेक कुमार छोटा लड़का विकास कुमार का रौ रौ के हाल बुरा हो गया था । शव के साथ पहुंचे सी आई एस एफ के जवानों ने दरवाजे पर सलामी दिया । जवान का अंतिम दाह संस्कार मांझी के डुमाई गढ घाट के सरजू तट के किनारे हुई । वहां पर शव को सलामी दी गई। दाह संस्कार के दौरान काफी संख्या में लोग दर्शन के लिए उमड़ पड़े हुए थे।

मशरक में खरीफ प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान जमकर हुआ हंगामा

- बैठने की व्यवस्था नही होने से भड़के किसान

प्रात :किरण संवाददाता

मशरक। मशरक प्रखंड कार्यालय परिसर के ई किसान भवन मे आयोजित प्रखंड स्तरीय खरीफ प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कृषि विभाग की विधि व्यवस्था से नाराज जनप्रतिनिधियो के साथ किसानो ने हंगामा करते हुए बीच मे ही बैठक का बहिष्कार कर दिया।प्रखंड कृषि पदाधिकारी राकेश कुमार द्वारा नाराज लोगो को समझाने का काफी प्रयास किया गया।

पर विधि व्यवस्था से नाराज लोग पुनः प्रशिक्षण कार्यक्रम मे शामिल नही हुए।इससे पूर्व प्रशिक्षण प्रखंड स्तरीय खरीफ कर्मशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन प्रखंड प्रमुख रविप्रकाश सिंह,जदयू प्रखंड अध्यक्ष रामाधार सिंह, आत्मा के उप परियोजना निदेशक आत्मा समशेर आलम और प्रखंड कृषि पदाधिकारी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम शुरू होते ही किसानो द्वारा कृषि विभाग द्वारा दी जानी वाली धान के बीज पर आपत्ति जताते हुए हाई ब्रिड बीज की मांग करने की गई । किसान द्वारा मांग किए जाने वाले बीज मे पायनियर 3727,जे के 401,श्रीराम 505,बार 6444,बायोमसील 205 शामिल थे।

किसानो का कहना था कि विभाग द्वारा दी जाने वाली बीज इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त नही है।बीज के मुद्दे पर बहस चल रही थी इसी बीच कई पंचायत के जनप्रतिनिधि और किसान कार्यक्रम मे शामिल होने के लिए पहुचे।छोटे कमरे मे आयोजित कार्यक्रम मे किसानो को इधर-उधर खड़े देख बहरौली मुखिया अजीत कुमार सिंह और दुरगौली मुखिया प्रतिनिधि सतेन्द्र सिंह द्वारा विधि व्यवस्था पर सवाल उठाया गया।

और संख्या के हिसाब से जगह का चयन न कर विभाग द्वारा खानापूर्ति करने का आरोप लगाया गया। उनका कहना था कि खड़े किसानो को पहले बैठने की व्यवस्था करे उसके बाद कार्यक्रम को आगे बढाए।इसी वादविवाद के बीच जनप्रतिनिधियो के साथ किसान कार्यक्रम का बहिष्कार कर कमरे से बाहर निकल गए।

लोजपा (रा) के जिला माहासचिव की माता की श्राद्ध व ब्रह्मभोज में काफी संख्या में पहुंचे लोग

प्रात :किरण संवाददाता

एकमा - स्थानीय नगर पंचायत के वार्ड संख्या 14 भरहोपुर गांव निवासी प्रसिद्ध चिकित्सक सह लोजपा रामविलास पार्टी के जिला महासचिव डॉ नीरज दूबे की माता जानकी कुंअर की श्रद्धा क्रम व ब्रह्म भोज में काफी संख्या में शामिल होने पहुंचे। सगे संबंधियों, क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों जनप्रतिनिधियों, शिक्षाविदो समाजसेवियों ,साहित्यकारों ने पहुंचकर दिवंगत माता की तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया ।

इस मौके पर लोजपा रामविलास पार्टी के जिला अध्यक्ष दीपक सिंह, एकमा के पूर्व जदयू विधायक मनोरंजन सिंह उर्फ धूमल सिंह ,लोजपा रामविलास के प्रदेश महासचिव कामेश्वर सिंह उर्फ मुन्ना सिंह, उपाध्यक्ष राज रोशन सिंह, पूर्व मुखिया पति रमेश तिवारी ,शिक्षक प्रेम कुमार दुबे ,अरविंद मिश्रा पप्पू दूबे प्रोफेसर अवध बिहारी मिश्रा आदि लोग उपस्थित थे । इस दौरान परिजनों द्वारा जरूरतमंद लोगों के बीच अंग वस्त्र वितरण किया गया। वहीं प्रखंड के पारसा पूर्वी पंचायत के कटेया गांव निवासी समाजसेवी बाबूलाल पंडित के श्राद्ध कर्म व ब्रहम भोज में शामिल हुए मुखिया संघ के उपाध्यक्ष अनिता देवी के पति दीपक गिरि, शिक्षक पुत्र जगत नारायण पंडित व असम राइफल के जवान रामायण पंडित शिक्षक सुजीत कुमार आदि लोगों ने उपस्थित होकर उनका तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया ।

लायंस क्लब छपरा ग्रेटर ने लगाया निःशुल्क मधुमेह जाँच-शिविर

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।स्थानीय नारायण चौक मंदिर के पास रविवार को भले सुबह 6 :30 बजे से लायंस क्लब ऑफ छपरा ग्रेटर के द्वारा निःशुल्क सुगर जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमे लगभग 102 लोगो का शुगर जांच किया गया । कई लोगों का शुगर काफी बढ़ा हुआ था । सबको डॉक्टर से मिलने का सलाह दिया गया। मधुमेह (शुगर) के बारे में प्रिकॉशन लेने की बात कही गई । वरिष्ठ सदस्य एस जेड ए रिजवी ने बताया कि क्लब के द्वारा हर महीने शुगर की जांच शिविर लगाई जायेगी और उसके बारे मे आगाह किया जायेगा इस मौके पर काफी लायन सदस्य शामिल हुए और कार्यक्रम को सफल बनाया प्रोग्राम अध्यक्ष चंदन शर्मा का रोल अहम रहा इस अवसर पर वरिष्ठ लायन सदस्य एस जेड ए रिजवी, अध्यक्ष करण सिंह डॉक्टर कामेश्वर राय, सचिव राजेश कुमार उपाध्याय .एस एम इब्राहिम .अमिताभ कुमार . एडवोकेट जफर हुसैन जैदी , संतोष कुमार सिंह, प्रोग्राम अध्यक्ष चंदन शर्मा रिजवी राज, अर्जुन शर्म मुमताज इमाम , जयप्रकाश कुमार रूपेश कुमार ने सक्रिय भूमिका निभाई । इस कार्यक्रम की जानकारी सेक्रेटरी राजेश कुमार उपाध्याय के द्वारा दी गई ।

संक्षिप्त खबरें

दो सेंटरों में वनरक्षी उन्मुखीकरण की एक दिवसीय परीक्षा संपन्न

वाल्मीकिनगर ।वाल्मीकि टाइगर रिजर्व वन प्रमंडल दो के पांचो रेंज वाल्मीकिनगर, गोनौली, मदनपुर, हरनाटांड और चिउटाहा में पदस्थापित कुल 70 वनरक्षियों के उन्मादीकरण और मूल्यांकन हेतु एक दिवसीय परीक्षा का आयोजन रविवार को वाल्मीकिनगर स्थित वन विभाग के ऑडियो वीडियो हॉल और कोतराहा स्थित कौशल विकास केंद्र में किया गया ।जिसमें पांचों रेंज के सभी वनरक्षी शामिल हुए ।इस बाबत प्रशिक्षु डीएफओ स्टालिन फ्रेडल के ने बताया कि वन विभाग द्वारा वैसे वनरक्षी जो 2020 से 2022 के सत्र में प्रतिनुक्ति हुई थी उन वनरक्षी का लिखित परीक्षा लिया गया है ।जो वनरक्षी इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने की संपुष्टि की जाएगी ।इस मौके पर वाल्मीकिनगर रेंजर राजकुमार पासवान, फील्ड व्योलोजिस्ट सौरभ वर्मा, वनपाल नवीन कुमार, सोनू कुमार सहित कई वन कर्मी मौजूद रहे।

जलालपुर पुलिस ने अर्द्ध जले शव को किया बरामद

जलालपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के आइटीबीपी कैंप से उत्तर कृषि फार्म हाउस के पीछे नूर नगर जाने वाली सड़क के किनारे झाड़ी में फेके गए एक अर्द्ध जले शव को जलालपुर पुलिस ने बरामद कियो थानाध्यक्ष राहुल कुमार, एस आई सुनील कुमार व डब्ल्यू पासवान ने बरामद अज्ञात शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा सदर अस्पताल भेज दियो वही घटना स्थल पर पहुंची फोरेंसिक जांच टीम ने गिरे हुए खून तथा जलाने के लिए डब्बा में लाई गई पेट्रोल व चाकू को बरामद किया हैपुलिस के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि घटना स्थल पर ही चाकू से गोदकर व्यक्ति की हत्या की गई है, वही शव को जलाने की कोशिश भी की गई है शव के गर्दन में रस्सी भी बांधा गया थोघटना स्थल से जली हुई रस्सी भी बरामद की गई है।

पूर्व सांसद ने जताया पीएम का आभार

औरंगाबाद।औरंगाबाद के पूर्व सांसद सुशील कुमार सिंह ने एनटीपीसी नवीनगर के क्षमता विस्तार किए जाने और यहां स्टेज 2 के अंतर्गत 2400 मेगावाट की अतिरिक्त यूनिट लगाई जाने की योजना को मंजूरी देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार जताया है।पूर्व सांसद ने कहा कि उन्होंने अपने संसदीय कार्यकाल में इस परियोजना के विस्तार के लिए लगातार आवाज उठाई थी और आज जबकि इस परियोजना को मंजूरी मिल चुकी है, उन्हें काफी संतोष है। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस परियोजना के लिए तमाम कागजी कार्य चुनाव के पहले ही पूरे कर लिए गए थे और सैद्धान्तिक मंजूरी मिल चुकी थी। अंतिम मंजूरी चुनाव पूरे होते ही मिल गयी। उन्होंने कहा कि इस परियोजना की मंजूरी से बिहार के विकास में एक नया अध्याय लिखा जाएगा और खुद औरंगाबाद जिला तीव्र गति से विकास करेगा। यहां के लोगों को के लिए आर्थिक विकास के नए द्वार खुलेंगे। उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार बिहार के विकास के लिए प्रतिबद्ध है और इसका एक उदाहरण है एनटीपीसी की क्षमता का विस्तार। उन्होंने कहा कि इस मंजूरी से उनके संघर्ष को भी सही दिशा प्राप्त हुई है जो उन्होंने क्षमता विस्तार के लिए गुजरे वर्षों में किया था। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए औरंगाबाद और समस्त बिहार के नागरिकों को भी बधाई दी है।

बलिदान दिवस पर याद किए गए श्यामा प्रसाद मुखर्जी

जलालपुरे जलालपुर स्थित सांसद आवास पर भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि को बलिदान दिवस के रूप में मनाया गयोमहाराजगंज सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल के नेतृत्व में उपस्थित लोगों ने उनके तेल चित्र पर पुष्पांजलि दी मौके पर सांसद सिग्रीवाल ने डा मुखर्जी को याद करते हुए कहा कि उनको हम एक देशभक्त ,शिक्षाविद्, चिंतक व सामाजिक न्याय दिलाने वाले नेता के रूप में जानते हैंडा मुखर्जी ने एक विचारधारा के लिए अपने पूरा जीवन लगायो उन्होंने नारा दिया था कि एक देश, दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे इसके लिए सत्याग्रह भी कियो डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सपना आज पीएम मोदी के नेतृत्व में कश्मीर में अनुच्छेद 370 को समाप्त करके साकार हुआ है।

मृतक के परिजनों से मिले खेल प्राधिकरण के डीजी

मढौरा।बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के डीजी वरीय आईपीएस रविंद्र संकरण रविवार को बिहार राज्य एथलेटिक संघ के सचिव लियाकत अली के पैतृक गांव मशरख पहुंचे। जहां लियाकत अली के पुत्र की सड़क दुर्घटना में हुई मौत की जानकारी प्राप्त की तथा शोक संतप्त परिजनों को ढांढस बंधाया। इस दौरान खेल प्राधिकरण के डीजी जैसे ही पीड़ित परिवार के दरवाजे पर पहुंचे वैसे ही उन्हें देख बिहार एथलेटिक संघ के सचिव लियाकत भावुक हो गए जिन्हें डीजी ने गले लगा लिया।

मशरक जंक्शन पर यात्री सुविधाओं का घोर अभाव, पेयजल की भी नहीं है व्यवस्था

शौचालय एवं प्रतीक्षालय न होने से यात्री परेशान

प्रात: किरण संवाददाता

मशरक। मशरक जंक्शन परिसर में यात्री सुविधाओ का घोर अभाव है। जिसको लेकर प्रतिदिन हजारो की संख्या मे यात्रा करने वाले दैनिक यात्रियों को विभिन्न समस्याओ से जुझना पड़ता है। सबसे बड़ी समस्या तो प्लेटफार्म नम्बर दो पर पेयजल की है। जहां यात्रीगण पानी के लिए इधर-उधर भटकते रहते है। और फिर निराश होकर बोतलबंद पानी खरीदकर यात्रा करने को विवश होते है ।वैसे तो इस प्लेटफार्म पर दर्जनो रेल सप्लाई वाले नल लगे है। पर सभी नल म्युजिअम की तरह शोभा की वस्तु बनी हुई है। रेलवे जंक्शन परिसर में हो रहे निर्माण कार्य में टीकेदार इसी डायरेक्ट नल के सहारे प्लेटफार्म का निर्माण कार्य करा रहे है। भीषण गर्मी के बावजूद भी रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों के लिए प्लेटफार्म पर शीतल पेयजल की कोई व्यवस्था नही की गयी है। जिससे लाखो का राजस्व देने वाले रेल यात्री अपने को ठगा महसूस करते है। पानी की समस्या की शिकायत पर हाल ही मे एक मात्र चापाकल रेल प्रशासन द्वारा लगवाया गया है। जो ज्यादातर खराब रहता है। वही अबतक यात्री सुविधा के लिए प्रतीक्षालय नही बन पाया है ।जिससे यात्रीयो को विशेष कर रात्रि मे प्लेटफार्म पर रहने मे परेशानी होती है। प्लेटफार्म नम्बर दो पर शौचालय तो है ही नही। जबकि प्लेटफार्म नम्बर एक की दक्षिणी छोर पर अटैच तीन शौचालय है ।जिसमे दो हमेशा लॉक रहता है, एक खुला है जिसकी हालत एकदम खराब है। गंदगी के कारण यात्री इस्तेमाल करने से बचते है। इन सभी समस्याओ पर स्टेशन अधीक्षक का कहना है कि ज्यादातर ट्रेन को प्लेटफार्म नम्बर एक पर लाया जाता है। क्रासिंग की स्थिति मे ही प्लेटफार्म नम्बर दो पर ट्रेन का ठहराव होता है। उनकी माने तो अमृत भारत स्टेशन के तहत हो रहे पुनर्विकास कार्य के कारण थोड़ी परेशानी हो रही है। जिसे जल्द ठीक किया जाएगा। पेयजल के लिए चापाकल लगवाया गया है। खराब होने के बाद मैकेनिक के विलंब से आने के कारण यात्री को परेशानी होती है ।शौचालय की स्थिति पर उन्होने कहा की साफ-सफाई की कोई स्थायी व्यवस्था नही है। जिस कारण शौचालय गंदा रहता है। अब देखना है कि स्टेशन के पुनर्विकास कार्य मे यात्री के लिए किन किन सुविधाओ पर ध्यान दिया जाता है।

सीयूएसबी में 'जैविक एवं पारिस्थितिकी अनुसंधान में जैव सांख्यिकी विधियों के अनुप्रयोग' पर राज्यस्तरीय कार्यशाला

प्रात: किरण संवाददाता

गया ।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबी में ह्यजैविक एवं पारिस्थितिकी अनुसंधान में जैव सांख्यिकी विधियों के अनुप्रयोगह्ल पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की गई है। जन संपर्क पदाधिकारी पीआरओ मोहम्मद मुदस्सीर आलम ने बताया कि कार्यशाला का आयोजन सीयूएसबी के लाइफ साइंस विभाग एवं रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल आरडीसी द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। कार्यशाला लाइफ साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. राम प्रताप सिंह को एसईआरबी द्वारा प्रदान की गई वित्तपोषित परियोजना के तहत एसएसआर वैज्ञानिक सामाजिक उत्तरदायित्व गतिविधि का हिस्सा थी ।कार्यशाला का आयोजन जैव सांख्यिकी की बुनियादी समझ प्रदान करने के लिए किया गया जो जैविक अनुसंधान का एक अभिन्न अंग है। इस कार्यशाला में सीयूएसबी के साथ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा; पटना विश्वविद्यालय जैसे बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों से कुल 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया है ` प्रतिभागियों ने अपने शोध के लिए कार्यशाला की विषय-वस्तु और उपयोगिता की सराहना करते हुए इसे उपयोगी बताया बताया है ।औपचारिक उद्घाटन के बाद कार्यशाला के संयोजक प्रो. डी. वी. सिंह, निदेशक, आरडीसी, सीयूएसबी ने संसाधन व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया गया है उन्होंने एसईआरबी द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं में एसएसआर गतिविधि की भूमिका का वर्णन किया गया है।

वहीं प्रो. राम प्रताप सिंह ने कार्यशाला को सफल बनाने में सहयोग के लिए डॉ. गौतम कुमार, डॉ. अमृता श्रीवास्तव, डॉ. संजय कुमार, डॉ. नवीन कुमार सिंह और डॉ. मनोज पांचाल के प्रयासों की प्रशंसा की है।

डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताए हुए मार्ग पर चलें : डॉ मनीष पंकज मिश्रा

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के कार्यालय में भाजपा किसान मोर्चा सह प्रभारी डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा के द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का 71बा बलिदान दिवस मनाया गया सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया है इस अवसर पर डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा ने कहा भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन के रूप में जाना जाता है।23 जून 1953 को, डॉ. मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर मेंभारतीय संविधान के पूर्ण रूप से लागू होने और वहां के नागरिकों के समान अधिकारों के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। उनका बलिदान भारतीय राजनीति और राष्ट्रीय एकता के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक है।डॉ. मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कोलकाता में हुआ था। वे एक उच्च शिक्षित और प्रखर बुद्धिजीवी थे। उन्होंने कानून की पढ़ाई की और बाद में कोलकाता विश्वविद्यालय में उपकुलपति बने। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के साथ ही वे भारतीय राजनीति में भी प्रमुखता से उभरे। वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष बने और बाद में भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो आज भारतीय जनता पार्टी के रूप में विशाल बट वृक्ष के रूप में विश्व की सबसे बड़े पार्टी है इस अवसर पर भाजपा के जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता ने कहा डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी जम्मू-कश्मीर में 'दो विधान, दो प्रधान, दो निशान' के खिलाफ संघर्ष ने उन्हें राष्ट्रीय एकता के प्रतीक के रूप में स्थापित किया है। उनका मानना था कि जम्मू-कश्मीर भी भारत का अभिन्न अंग होना चाहिए और वहां भारतीय संविधान पूरी तरह से लागू होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने "एक देश, एक संविधान" का नारा दिया। उन्होंने बिना परमिट के जम्मू-कश्मीर में प्रवेश किया और वहां गिरफ्तार कर लिए गए हैं। 23 जून 1953 को संदिग्ध परिस्थितियों में जेल में उनकी हत्या कर दी गई लेकिन जेल प्रशासन ने मृत्यु हो जाने की बात की मुखर्जी जी का बलिदानको नमन करते हुए कहा डॉक्टर मुखर्जी के सपना को देश को ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी कुशल नेतृत्व में 5 अगस्त 2019 को 370 और 35 अ हटाकर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी कोश्रद्धा सुमन अर्पित किए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान हमें राष्ट्रीय एकता और अखंडता के प्रति उनके अटूट समर्पण की याद दिलाता है। उनके विचार और सिद्धांत आज भी भारतीय राजनीति में मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। उनके बलिदान दिवस पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलें और भारत की एकता और अखंडता को बनाए रखें। उनके बलिदान को नमन करते हुए हमें अपने कर्तव्यों का पालन करते रहना चाहिए ताकि भारत एक समृद्ध और सशक्त राष्ट्र बन सके।श्रद्धा सुमन अर्पित करने बालो मे जिला उपाध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद अधिवक्ता ,जिला मिडिया प्रभारी संतोष ठाकुर, अजय भट्टाचार्य, महेश यादव मंटू कुमार ललन चंद्रवंशी, विकास सिंह धर्मेंद्र पांडे मिथिलेश मिश्रा डॉ विकास राय रामबालक पांडे प्रमोद सिंह सीता देवी नीरज सिन्हा बबलू गुप्ता सहित अन्य लोग शामिल हुए हैं।

मशरक फीडर रोड में वर्षों से जल जमाव की समस्या, टेंडर के बावजूद समय से काम नही होने से लोग चिंतित

प्रात: किरण संवाददाता

मशरक। मशरक नगर पंचायत की सबसे बड़ी समस्या बरसात के दिनो मे फीडर रोड की सड़क का जलमग्न होना है। वैसे तो पानी निकासी की व्यवस्था नही होने के कारण बिना बरसात के भी घरो के गंदा पानी से सड़क भरा रहता है ।जिससे दुकानदार से लेकर आम जन परेशान रहते हैं ।पिछले एक दशक से फीडर रोड के जलजमाव की समस्या चुनावी मुद्दा भी रहा है। नगर पंचायत बनने के बाद इस समस्या से निजात की उम्मीद जगी ।मेजर सोहन महतो वादे के मुताबिक फीडर रोड मे नाला की प्राथमिकता देते रहे। पिछले साल राजनीतिक दावपेच मे टेंडर की प्रक्रिया पूरी नही हो सकी। इस बार मशरक दुर्गा चौक से लेकर सिनेमा रोड तक नाले का टेंडर वर्क आर्डर निकल गया है जो 46 लाख का है ।इस टेंडर का कार्य सितम्बर 2024 तक हर हाल में पूरा करना है ।अगर काम ससमय शुरू नही हुआ तो टेंडर समाप्त भी हो जाएगा। देखना दिलचस्प होगा कि बरसात से पहले क्या संवेदक ससमय नाले का कार्य आरंभ कर पूरा करने का काम कर पाएगे ।अगर ऐसा होता है तो लोगों को पानी निकासी की मुख्य समस्या का समाधान हो जाएगा ।पर काम शुरू करने की रफ्तार से ऐसा लगता है कि इस बरसात भी समस्या ज्यो की त्यो बनी रहेगी।

भव्य चिरांद के लिए योजना तैयार कराएगा जेपी विश्वविद्यालय

प्रात: किरण संवाददाता

डोरीगंज। गंगा महाआरती के साथ चिरांद विकास परिषद का 17 वां गंगा गरिमा रक्षा संकल्प समारोह व चिरांद चेतना महोत्सव का भव्य आयोजन शनिवार की संध्या में शुरू हुआ। ज्येष्ठ पूर्णिमा की धवल चांदनी रात में मां गंगा की संगीतमय आरती में सहभागी होने के लिए हजारों लोगों की भीड़ चिरांद स्थित बंगाली बाबा घाट पर उमड़ पड़ी थी। थ्चरांद विकास परिषद व गंगा समग्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह के उद्घाटन के क्रम में जयप्रकाश विश्वविद्यालय छपरा के कुलपति प्रो. परमेन्द्र कुमार वाजपेयी ने कहा कि गंगा सरयू ओर सोन नद के संगम पर स्थित चिरांद एक ऐसा पुरातात्विक व धार्मिक स्थल है जहां प्राचीन भारत की ज्ञान परम्परा अत्यंत समृद्ध रूप में हजारों वर्षों तक विद्यमान थीं। यहां जल संरक्षण व प्रकृति के साथ मानव की अनुकूलता पर आधारित सतत व स्थायी विकास का माडल भी उपलब्ध था, जिसके गवाह यहां से उत्खनन में उपलब्ध पुरातात्विक अवशेष हैं। प्राकृतिक संसाधन व मनोरम दृश्य व जनवायु से सम्पन्न इस स्थान में एक उत्तम पर्यटन केंद्र बनने की भी क्षमता है। उन्होंने कहा कि जयप्रकाश विश्वविद्यालय चिरांद को लेकर शोध व अध्ययन कार्य को आगे बढ़ायेगा। साथ ही इस स्थल के युगानुकूल विकास को लेकर पेषेवर तरीके से योजना भी तैयार करायेगा। ताकि यहां विश्व के लोग आएं और लाभ उठाएं।

समारोह के मुख्य अतिथि छपरा के जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग ने कहा कि इस पुरातात्विक स्थल के गर्भ में मानव के उत्थान व पतन की कहानी पड़ी हुई है। यह स्थान श्रीराम के जन्म के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ कराने वाल श्रृंगी ऋषि की भी जन्म स्थली है। इस अतिमहत्वपूर्ण स्थान के इतिहास से सभी को अवगत कराने का कार्य आवश्यक है। समारोह के संरक्षक अध्योध्या के लक्ष्मणकिलाधीश महंत मैथिली रमण शरणजी महाराज ने कहा कि तीन पवित्रतमा नदियों के संगम पर स्थित इस परम तीर्थ का सम्बंध श्रीराम के आविर्भाव से है। इसके महत्व व गौरवशाली अतीत की जानकारी अब देश-विदेश के लोगों को होने लगी है। क्रूज से विदेशी पर्यटकों का यहां आना इसका उदाहरण है। वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण भारत ही नहीं बल्कि विदेश से भी यहां भारी संख्या में यात्री आने लगेंगे। चिरांद विकास परिषद के सचिव श्रीराम तिवारी ने अतिथियो का स्वागत किया और परिषद का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। वहीं परिषद के अध्यक्ष कृष्णकांत ओझा ने चिरांद के गौरवशाली इतिहास का स्मरण कराते हुए उसके विकास की योजना पर संक्षिप्त में विचार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन चिरोद विकास परिषद के न्यासी रामदयाल शर्मा ने किया वहीं गंगा समग्र के जिला संयोजक डॉ कुमारी किरण सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। छह लोगों को मिला चिरांद रत्न आयोजित कार्यक्रम मे समाज मे अच्छे कार्य करने वाले छह लोगों को चिरांद रत्न दिया गया जिसमे चिरांद के दलित वस्ती में रहकर वहां के बच्चों के लिए शिक्षा-संस्कार केंद्र चलाने वाले युवा संन्यासी दिव्यात्मा नन्द जी महाराज ,चिकित्सा के क्षेत्र मे डॉ राजेश रंजन, शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र मे कार्य करने वाले राजकिशोर सिंह, जैविक खेती के लिए विजय चौरसिया, सांस्कृतिक धार्मिक गतिविधि के लिए अरूण पुरोहित तथा मनोज महतो को चिरांद रत्न से सम्मानित किया गया।

'जगदम्बा सरस्वती- स्मृति दिवस पर ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन

गया ।प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम अध्यक्षा जगदम्बा माँ की पूण्य तिथि के अवसर पर ब्रह्माकुमारी संस्थान सिविल लाइन थाना के पीछे, विक्टर एक्सरे गली, होटल सिटी सूर्या के सामने गया में पूरे दिन भर राजयोग अभ्यास किया गया है। इस अवसर पर शिशिर सौरव उपायुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, गया जोन ने कहा कि "दिव्य गुर्णो की। खान जगदम्बा सर्व महान राजस्व अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ की प्राण, प्रथम प्रमुख संचालिका जगदम्बा सरस्वती ने अपना पुराना कलेवर बदलकर अव्यक्त भाव की सेवा में स्वयं को लगा दिया है। सृष्टि चक्र के आदि में उन्हीं के चिहनों का अनुसरण करते हुए आज का विश्वव्यापी ब्रह्माकुमारी संस्थान अपनी यश पताका लहराता जा रहा है। परमात्मा शिव द्वारा ज्ञान प्रकाश की प्रथम किरण निकलते ही वे जगत जननी रूप धारण कर अलौकिक माँ का प्यार- दुलार-सत्कार लुटाने लगीं थीं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिव के ज्ञान गुणों को स्वयं में समाकर सारे जहाँ में फैलाने वाल महिला जगत की सुर्य-चॉद-जगदम्बा हीं थीं। ज्ञानसूर्य सी प्रखर और चन्द्रमा सी शीतल -स्निग्ध होने के कारण ही ईश्वरीय परिवार की प्रगति का प्रवाह उनके इर्द-गिर्द ही बहता था ।इस कार्यक्रम में उपस्थित वार्ड पार्षद सारिका कुमारी ने कहा मातेश्वरी जी जगतमाता के आसन पर विराजमान रह वेहद का प्यार लुटाते हुए टीचर ही नहीं मात वत्सला स्वरूप सदा बनाये रखती थीं। वे दूरान्दशी-विशाल हृदया के साथ रूहानियत की प्रतिमूर्ति बन जल्दीबाजी में नहीं आदि-मध्य-अन्त को देखकर समस्या का समाचान कर देती थीं। किसी की भी बात को समाने के बजाय फैलाने का संस्कार ही नहीं था-यहाँ तक की कमियों-कमजोरियों वाली बात बाबा तक पहुँचाने में सकुचाती थीं ।इस कार्यक्रम में उपस्थित यशवंत सिंह ने कहा मातेश्वरी जी खुद ज्ञान योग से भरपूर थीं पर बाबा के श्री वचनों को सबेरे दो बजे उठकर विचार मंथन करके मक्खन निकाल सबेरे-सबेरे बच्चों में बॉटती हुई साक्षात ज्ञान की देवी सरस्वती दिखाई पड़ती शथीं है। समयबद्धता इतनी थी कि रोटी बनाने, अनाज साफ करते, सब्जी काटने वा भण्डारे में चक्कर लगाने जैसे किसी भी स्थूल वा सुक्ष्म सेवा के लिये ने इशारा दिया और उन्होंने हर कार्य को पूरी प्रवीनता से कर दिखाया है। सहनशीलता की ऐसी र्सिमूर्ति थीं कि निन्दा-स्तुति, मान-अपमान की हालात में ही नहीं, जटिल से जटिल बीमारियों को भी चेहरे पर दिखाई नहीं होने देतीं थीं। दुःखदायी वा कठिनाई शब्द भी जुबों पर आने नहीं देती थी। राजयोगिनी ब्रह्माकूमारी शीला बहन ने अपने संदेश में कहा उनकी वाणी जलतरंग की तरह अमृत बरसाती हुई सत्यता व निर्मलता से भरी होती थीं। नव सृष्टि के निर्माण हेत संकल्प ब्रह्मा से निकलने पर उनका प्रचार-प्रसार करने में जगदम्बा इतनी कुशल थीं कि शिव बाबा ने उन्हें ज्ञान देवी सरस्वती, दुगुर्णो को मिटाने वाली दुर्गा, धन-सम्पदा से भरपूर करने वाली लक्ष्मी ही नहीं, विकराल विकारों को पी जाने वाली काली खपड़वाली जैसे अनेकों गुणों की प्रतिमूर्ति बना दिया है। उनके चमत्कारिक आध्यात्मिक व्यक्तित्व ने ही हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई जैसे वर्ग संघर्ष में उलझे लोगों को इक्कीसवीं सदी के सत्पुरूषों योग्य बना दिया है ।सदा आलौकिकता के सिंहासन पर बैठी रहने के कारण वे सदा ही किसी और लोक से आयी हुई परी जान पड़ती मम्मा ममता की मूरत थीं। गहन आध्यात्मिकता प्रणाओं से औत-प्रोत श्वेतवस्त्र धारिणी सरस्वती मैयया को ब्रह्मा की एक पसली से निर्मित हुआ माना जाता है। वैसे भी वे आदि देव की गोद ली हुई, दिल के पास रहने वाली अतिप्रिय संतान थीं। वे ऊँच-नीच के भेद-भाव रखे बिना, लौकिक मॉ-बाप से हजार गुणा निःस्वार्थ प्रेम व शुभेच्छा लुटाया करतीं थीं। वे माया के जंजीरों से ही मुक्त नहीं कराती पर ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार दिलाने हेतु प्रयत्न शील रहती थीं।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। औरंगाबाद जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन एवं राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक संस्था शब्दाक्षर के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय पृथ्वीराज चौहान स्मृति ट्रस्ट भवन में भक्ति काल के महान कवि एवं समाज सुधारक संत कबीर दास जी की जयंती समारोह धूमधाम से मनाई गई ।दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभ उद्घाटन के उपरांत प्रो. सीएस पांडे की अध्यक्षता में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया ।विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए औरंगाबाद जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह ने निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रसिद्ध कवि कबीर दास के दोहा"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय" का उल्लेख करते हुए कहा कि आपसी समरसता के लिए प्रेम आवश्यक है। प्रो. सीएस पांडे ने कहा कि जिस समय कबीर का प्रादुर्भाव हुआ उस समय मानव मूल्यों का बहुत ही ह्रास हो गया था.इस दिशा में कबीर साहित्य ने समाज को आईना दिखाने का कार्य किया। प्रोफेसर विजय कुमार सिंह ने कहा कि कबीर दास समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। प्रो. डॉ रामाधार सिंह, प्रो. संजीव रंजन, डॉ. हनुमान राम, प्रसिद्ध ज्योतिर्विद शिवनारायण सिंह ने कहा कि कबीर दास जन्मजात विद्वान थे। पुरुषोत्तम पाठक, हेरम्ब कुमार मिश्र एवं शब्दाक्षर के संगठन सचिव सुरेश विद्यार्थी.ने उन्हें समाज सुधारक एवं धार्मिक समन्वय का सेतु बताया। कार्यक्रम का संचालन शब्दाक्षर के जिलाध्यक्ष नागेंद्र कुमार केसरी द्वारा किया गया। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री तथा शब्दाक्षर के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री धनंजय जयपुरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया.कार्यक्रम के समापन के पश्चात छत्तीसगढ़ में वीरगति प्राप्त संड़सा ग्राम निवासी शहीद मदन सिंह एवं जयपुर ग्राम निवासी शहीद शशिकांत सिंह के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया ।मौके पर पृथ्वीराज चौहान स्मृति ट्रस्ट के उपाध्यक्ष डॉ ज्ञानेश्वर प्रसाद सिंह, वरीय सदस्य रामप्रवेश सिंह, प्रो शिवपूजन सिंह, कवि जनार्दन मिश्र जलज, विनय कुमार मिश्र 'मामूली बुद्धि', संजय कुमार सिंह, राम भजन सिंह, सुरेंद्र सिंह, चंद्र प्रकाश 'विकास' सहित अन्य उपस्थित थे।

औरंगाबाद जिले का नाम सत्यचंडी धाम रखा जाए : कौशल सिंह

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद से 5 किलोमीटर की दूरी पर रायपुरा ग्राम अवस्थित सत्यचंडी धाम में 15 दिवसीय आद्रा मेला का उद्घाटन किया गया ।उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता वरीय अधिवक्ता प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता कौशल कुमार सिंह द्वारा किया गया ।जबकि संचालन जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी द्वारा किया गया ।कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि कौशल कुमार सिंह, समकालीन जवाबदेही पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा, जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री धनंजय जयपुरी, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर डॉ शिवपूजन सिंह, डॉ संजीव रंजन, जनेश्वर विकास केंद्र के केंद्रीय अध्यक्ष रामजी सिंह, समाजसेवी दिलीप सिंह, सत्यचंडी धाम न्यास समिति के सचिव राजेंद्र सिंह, पंचायत समिति सदस्य, लालदेव प्रसाद गोकुल सिंह, प्रो दिलीप प्रसाद, शब्दाक्षर के जिलाध्यक्ष नागेंद्र केसरी सहित अन्य लोगों ने दीप प्रज्वलित कर, फीता काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

संबोधन के क्रम में डॉ सुरेंद्र प्र मिश्रा ने सत्यचंडी माता की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि आद्रा नक्षत्र में मेला का आयोजन किया जाना यह दशार्ता है कि यहां के स्थानीय लोग अपनी संस्कृति की ऊर्जस्विता को जानते हैं ।मेला हमारी सनातन संस्कृति का एक धरोहर है ।मुख्य अतिथि कौशल कुमार सिंह ने कहा कि सत्यचंडी धाम से लगाव हमारा बचपन से है यहां का कण कण में हमारी आस्था है ।मैं इस धाम के विकास के लिए हमेशा कृत संकल्पित हूं और मेरी इच्छा है की औरंगाबाद जिले का नाम सत्यचंडी धाम के नाम पर किया जाए ।इस स्थल को विकसित करने की आवश्यकता है। मौके पर महोत्सव पुरुष सिद्धेश्वर विद्यार्थी महोत्सव के उपाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह, विजय पांडेय, मुखिया अशोक सिंह, धाम के पुजारी सहित अन्य उपस्थित थे ।धन्यवाद ज्ञापन आचार्य राम प्रवेश मिश्रा के द्वारा किया गया। सत्यचंडी चालीसा का सामूहिक पाठ भी किया गया।

सड़क निर्माण कार्य का किया गया शिलन्यास

परसा ।नगर पंचायत पारस बाजार के वार्ड 9 में पीसीसी सड़क निर्माण कार्य को लेकर वार्ड पार्षद सूरज कुमार के द्वारा विधि विधान तथा पूजा अर्चना कर भूमि पूजन किया गया ।भूमि पूजन के उपरांत नगर पंचायत के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि मोहम्मद करमुल्लाह द्वारा नारियल फोर तथा पूजा कर सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया ।करमुल्लाह ने कहा कि सप्तम योजना के तहत लगभग दस लाख की लागत से लगभग 5 सौ फीट सड़क का ईट्टीकरण तथा पीसीसी सड़क का निर्माण कार्य होगा ।उन्होंने का आरडब्लूडी सड़क से कटकर सियाराम सिंह के खेत तक सड़क का निर्माण होगा ।उन्होंने कहा कि यह सड़क निर्माण होने से ग्रामीणों को यातायात की सुबिधा उपलब्ध होगी तथा सबसे ज्यादा लाभ छात्र छात्रो को मिलेगी।

अब छात्र छात्राओं को कीचड़ में प्रवेश कर विद्यालय नही जाना पड़ेगा ।इस मौके पर उप मुख्य पार्षद प्रतिनिधि दीपक कुमार, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि अरविंद गिरी, बिजली राय, सोनू रंजन, वार्ड पार्षद अनिल कुमार यादव, वार्ड पार्षद मोहम्मद अजमुल्लाह, वार्ड पार्षद सनोज राय, शैलेश कुमार, सुजीत कुमार, धर्मेंद्र कुमार, मुकेश कुमार, पन्ना लाल राय आदि उपस्थित थे।

दानिका संगीत महाविद्यालय में शिक्षक अभिभावक गोष्ठी

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण सांगीतिक संस्था दानिका संगीत महाविद्यालय औरंगाबाद के सभागार में शिक्षक अभिभावक गोष्ठी का आयोजन किया गया ।संस्था के निदेशक डॉ रविंद्र कुमार के नेतृत्व में आयोजित गोष्ठी में उपस्थित लोगों ने विचार समन्वय किया। सम्बोधन के क्रम में डायरेक्टर ने कहा कि वर्तमान परिवेश में जिस तरह के सामाजिक माहौल में बदलाव हुआ है उस माहौल में बच्चों को अपने अभिभावकों से अपने विद्यालय में बिताए गए पलों के बारे में शेयर करने की अत्यंत आवश्यकता है। यह भी कहा कि अभिभावकों को भी अपने बच्चों पर वर्ग कक्ष में उनके साथ किस तरह का माहौल विकसित हो रहा है ।उनके बच्चे का किस तरह के लोगों से मित्रता है, किन लोगों के साथ उनकी घनिष्ठता है इन बातों को भी वह जरूर शेयर करें और बच्चों की कोई समस्याएं हो उसे निदान करने की भी कृपा करें ।आज के गोष्ठी में इस बात पर भी बल दिया गया कि अभिभावक अपने बच्चों के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार को मूर्ति रूप दें ।अभिभावकों को भी चाहिए कि समय समय पर बच्चों के विद्यालय जाकर वहां के वर्तमान गतिविधियों पर नजर रखें ।साथ ही साथ बच्चों के गतिविधियों पर भी नजर रखें उनके हाव भाव पर भी ध्यान केन्द्रित करें। आज के गोष्ठी में सविता सिंहा, अरविंद कुमार, सृष्टि लक्ष्मी, मनोरंजन कुमार, हेमा पाठक, अंजली सिंह, मोहित पाठक, ओमवीर कुमार, नंदिनी, सिमरन सहित अन्य उपस्थित थे।

परिवार की बजाय काम चुनने पर खुद को दोषी मानती हैं महिलाएं

मशहूर अभिनेता आयुष्मान खुराना की पत्नी ताहिरा कश्यप अपनी आगामी फिल्म शर्माजी की बेटी की वजह से चर्चा में हैं। वह इस फिल्म से निर्देशन में कदम रख रही हैं। इस फिल्म की रिलीज डेट 28 जून तय की गई है। ताहिरा अपनी फिल्म के प्रमोशन में लगातार व्यस्त चल रही हैं। इस दौरान वह कुछ इंटरव्यू भी दे रही हैं। इस दौरान उन्होंने हाल में ही दिए एक इंटरव्यू में, महिलाओं द्वारा अपने काम की बजाय परिवार को चुनने को लेकर बात की है। इस इंटरव्यू के दौरान ताहिरा ने बताया कि महिलाएं अक्सर अपने परिवार की जगह अपने काम को चुनने पर खुद को दोषी मानती हैं। उन्होंने कहा कि अक्सर महलाओं को ही काम और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच चयन करना पड़ता है और इसके लिए उन्हें सामाजिक दबाव का भी सामना करना पड़ता है। इस वजह से पुरुषों के मुकाबले महिलाएं अपने करियर को प्राथमिकता देने की वजह से खुद को दोषी समझने लगती हैं।

पुरुषों को भी इसके लिए दोषी महसूस करना चाहिए

ताहिरा ने आगे कहा कि एक महिला से पूछा जाता है कि वो परिवार और काम कैसे मैनेज करती हैं, लेकिन आम तौर पुरुषों से ऐसे सवाल नहीं पूछे जाते। इस दौरान उन्होंने अपने पति आयुष्मान का उदाहरण देते हुए कहा कि उनसे भी यह पूछा जाना चाहिए कि दो बच्चों के होते हुए भी वह तीन फिल्मों की शूटिंग कैसे मैनेज करते हैं। उन्होंने कहा, सिर्फ महिलाओं को ही नहीं, बल्कि पुरुषों को भी इस सब के लिए दोषी महसूस करना चाहिए।

बच्चे के पहले शो में शामिल ना हो पाने का है मलाल

ताहिरा ने अपनी बात को पूरा करते हुए कहा कि महिलाएं अपने बच्चों के बजाय अपने काम को चुनने के लिए अनिवार्य रूप से दोषी महसूस करती हैं। उन्होंने बताया कि एक बार वह अपने काम की वजह से अपने बेटे के पहले संगीत और नाट्य प्रदर्शन को देखने नहीं जा पायी थीं।

अमेजन पर प्रीमियर होगी शर्माजी की बेटी

बताते चलें कि ताहिरा की आगामी फिल्म शर्माजी की बेटी में साक्षी तंवर, दिव्या दत्ता और सैयामी खेर मुख्य भूमिकाओं में नजर आने वाली हैं। फिल्म की कहानी अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाली तीन मध्यमवर्गीय महिलाओं की यात्रा को दिखाती है। फिल्म जल्द ही अमेजन प्राइम वीडियो पर प्रीमियर होगी। ताहिरा ने साल 2017 में टॉफी नाम की शॉर्ट फिल्म से शुरुआत की थी।

लॉस एंजिल्स 2024 के इंडियन फिल्म फेस्टिवल के लिए जूरी में शामिल हुईं श्रिया पिलगांवकर

एक्ट्रेस श्रिया पिलगांवकर को लॉस एंजिल्स के इंडियन फिल्म फेस्टिवल के 2024 एडिशन में शॉर्ट्स कैटेगरी के लिए जूरी पैनल में शामिल किया गया है। उन्होंने कहा कि यह उनके लिए सम्मान की बात है। श्रिया ने कहा, मुझे लॉस एंजिल्स 2024 के इंडियन फिल्म फेस्टिवल में शॉर्ट्स फिल्म कैटेगरी के लिए जूरी सदस्य के तौर पर आमंत्रित किया गया है। इससे मैं सम्मानित महसूस कर रही हूं। मैं फेस्टिवल में हिस्सा लेने और उभरते साउथ एशियन फिल्ममेकर्स द्वारा इन शानदार शॉर्ट्स फिल्मों को देखने के लिए एक्साइटिड हूं। एक्ट्रेस ने कहा, फिल्म फेस्टिवल का माहौल हमेशा क्रिएटिविटी से भरा होता है। मैं अलग-अलग कहानीकारों और कलाकारों से मिलने और बातचीत करने तथा आईएफएफएलए में फिल्मों की लाइनअप को देखने के लिए बेहद एक्साइटिड हूं। श्रिया को 2018 में मिर्जापुर में देखा गया था। सीरीज में उन्होंने स्वीटी का किरदार निभाया था, जिसे लोगों ने काफी पसंद किया। इसके अलावा, वह गिल्टी माइंड्स, ताजा खबर और द ब्रोकन न्यूज 2 जैसी सीरीज के लिए भी जानी जाती हैं। उन्होंने साल 2016 में शाहरुख खान की फिल्म फैन से बॉलीवुड में डेब्यू किया। श्रिया ने इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स में भी अपनी पहचान बनाई है। वह गुरिंदर चड्ढा द्वारा निर्देशित ब्रिटिश सीरीज बीचम हाउस और दिग्गज फिल्म निर्माता क्लाउड लेलौच की फ्रेंच फिल्म अन प्लस उन में नजर आई हैं। इंडियन फिल्म फेस्टिवल 27 जून को शुरू होगा और 30 जून को समाप्त होगा।

शाहरुख के साथ पर्दे पर नजर आएंगी सामंथा

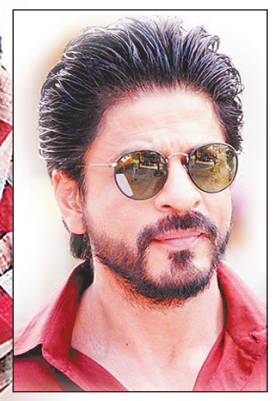

सामंथा रुथ प्रभु आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। वह साउथ फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री हैं। फैंस उनकी हर फिल्म का बेसब्री से इंतजार करते हैं। अभिनेत्री भी अपने फैंस से सोशल मीडिया के द्वारा लगातार जुड़ी रहती हैं। हाल में ही अभिनेत्री ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल की थी। उनका नाम पिछले दशक के 100 सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले भारतीय कलाकारों की आईएमडीबी सूची में शामिल हुआ था। वह ना सिर्फ इस प्रतिष्ठित सूची में शामिल हुई थीं, बल्कि उन्हें इस सूची में 13वां स्थान मिला था। अब अभिनेत्री के अगली फिल्म को लेकर अटकलों का बाजार काफी गर्म है।

शाहरुख के साथ काम करने की है अटकलें

सामंथा को पसंद करने वाले फैंस की सूची काफी लंबी है। उनके फैंस उनसे जुड़ी हर छोटी-बड़ी खबरों पर नजरे गड़ाए रहते हैं। इस वक्त उनकी अगली फिल्म को लेकर अफवाहें तेजी से फैल रही हैं, जिससे अभिनेत्री के फैंस काफी उत्साहित हैं। दरअसल, सामंथा ने कई मौकों पर ये जताया है कि वो शाहरुख खान की बड़ी फैन हैं। एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने कहा भी था कि वह शाहरुख के साथ काम करना चाहती हैं। इस वक्त ये अटकलें काफी तेज हैं कि अभिनेत्री अपनी अगली फिल्म में सुपरस्टार शाहरुख खान के साथ नजर आने वाली हैं।

नहीं हुई है ऐसी कोई आधिकारिक घोषणा

फिल्मी गलियारे में ये अफवाहें तेजी से फैल रही है कि सामंथा अपनी अगली फिल्म में शाहरुख के साथ नजर आने वाली हैं। अफवाहों के मुताबिक, वह मशहूर निर्देशक राजकुमार हिरानी द्वारा निर्देशित फिल्म में काम करने वाली हैं। इस फिल्म में शाहरुख और राजकुमार हिरानी एक बार फिर से साथ आने वाले हैं। इससे पहले दोनों की जोड़ी ने डंकी में एक साथ काम किया था। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर सफल साबित हुई थी। अगर ये बातें सही साबित होती हैं, तो सामंथा पहली बार राजकुमार हिरानी और शाहरुख के साथ काम करेंगी।

सिटाडेल में वरुण धवन के साथ आएंगी नजर

बात करें दोनों कलाकारों के वर्क फंट की तो सामंथा रुथ प्रभु जल्द ही राज एंड डीके की वेब सीरीज सिटाडेल में नजर आएंगी। इसमें वे वरुण धवन के साथ स्क्रीन साझा करती दिखेंगी। यह सीरीज सिटाडेल नाम से ही बनी अंग्रेजी सीरीज का हिंदी रुपांतरण है। वहीं, शाहरुख फिलहाल अपनी आगामी फिल्म किंग को लेकर व्यस्त हैं। इस फिल्म में वह डॉन के किरदार में नजर आने वाले हैं। फिल्म में उनके साथ उनकी बेटी सुहाना खान भी नजर आएंगी।

अभय देओल से अनबन पर अनुराग कश्यप ने तोड़ी चुप्पी

अनुराग कश्यप और अभय देओल ने साल 2009 में एक साथ 'देव डी' फिल्म में काम किया। यह उनके करियर की यादगार फिल्मों में से एक है। हालांकि, इस फिल्म के रिलीज होने के बाद से ही दोनों में किसी वजह से बातचीत बंद है। इससे पहले भी निर्देशक अभय को आड़े हाथों ले चुके हैं। अब अनुराग एक बार फिर अभय के साथ अपनी अनबन पर चुप्पी तोड़ी है और कहा है कि अगर उन्होंने सच कह दिया तो अभिनेता अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहेंगे।

अभय देओल के बारे में कहा

अनुराग कश्यप इन दिनों अपनी आगामी ओटीटी परियोजना 'बैड कॉप' के प्रचार-प्रसार में व्यस्त हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल ही में एक साक्षात्कार में उनसे जब पूछा गया कि उन्हें अपने रिश्ते बरकरार रखने में परेशानियों का सामना क्यों करना पड़ता है। उनसे अभय देओल और पंकज झा जैसे अभिनेताओं के साथ उनके रिश्तों का उदाहरण देकर सवाल पूछा गया। इस पर उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि वह रिश्ते बनाए रखने में बुरे नहीं हैं। अभय के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि वे 'देव डी' की शूटिंग के बाद से एक-दूसरे से नहीं मिले, क्योंकि वे प्रमोशन के लिए भी नहीं आए। निर्देशक ने कहा, 'अगर वह मुझे टॉक्सिक कहना चाहते हैं, तो ठीक है, यह उनकी कहानी का पक्ष है', उन्होंने कहा कि वे सच नहीं बोल सकते क्योंकि अगर यह सामने आया तो अभिनेता मुंह दिखाने के लायक नहीं बचेंगे।

पंकज झा से गलतफहमी के बारे में भी की बात

निर्देशक ने अपने और पंकज झा के बीच की गलतफहमी और समस्याओं के बारे में बात करते हुए कहा कि उन्हें कुछ याद नहीं है। अनुराग ने कहा मुझे जो आखिरी बात याद है, वह यह है कि वे ओशो आश्रम में शामिल हुए थे और अभिनय नहीं बल्कि पेंटिंग में थे। उन्होंने झा को पहले दिए गए रोल में पंकज त्रिपाठी को कास्ट करने की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैं उन्हें 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' में एक रोल के लिए लेना चाहता था, लेकिन वह गायब हो गए, वह व्यस्त थे और मेरा बजट बहुत कम था और मुझे किसी को लेना था।'

सोनाक्षी सिन्हा नहीं अपनाएंगी इस्लाम धर्म

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल शादी करने वाले हैं। ऐसे में चर्चा जोरों पर है कि क्या सोनाक्षी शादी के लिए इस्लाम धर्म अपनाएंगी। इसको लेकर फैंस सोशल मीडिया के जरिए एक्ट्रेस से सवाल पूछ रहे है, लेकिन जवाब उनके होने वाले ससुर अर्थात जहीर इकबाल के पिता इकबाल रतनसी ने दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रतनसी ने बताया कि शादी में न तो हिंदू और न ही मुस्लिम रीति-रिवाज होंगे। यह एक सिविल मैरिज होगी। उन्होंने एक इंटरव्यू में यह भी कहा कि ये बात पक्की है कि सोनाक्षी धर्म परिवर्तन नहीं करेंगी।

डांस के साथ अभिनय का भी दम दिखा चुकी हैं मुक्ति मोहन

मुक्ति मोहन अपना 37वां जन्मदिन मना रही हैं। दिल्ली में जन्मीं मुक्ति मोहन कई टीवी सीरियल्स में काम कर चुकी हैं। मुक्ति ने विशाल भारद्वाज की शॉर्ट फिल्म ब्लड ब्रदर्स से सिनेमा की दुनिया में कदम रखा था मुक्ति मोहन एक बेहतरीन डांसर हैं। जिन्हें जरा नचके दिखा में अपने हुनर का लोहा मनवाते देखा जा चुका है। मुक्ति को कपिल शर्मा के शो कॉमेडी सर्कस में भी देखा जा चुका है। इसके अलावा वह नच बलिए 7 और खतरों के खिलाड़ी सीजन 7 का भी हिस्सा रह चुकी हैं।

100 कलाकारों के ऑडिशन के बाद फाइनल हुए थे राघव जुयाल

धर्मा प्रोडक्शन की नई फिल्म किल का ट्रेलर रिलीज हो गया है। यह फिल्म धर्मा के बाकी फिल्मों से काफी अलग है, क्योंकि इसमें जोरदार एक्शन देखने को मिलने वाला है। इस फिल्म से लक्ष्य लालवानी अपना डेब्यू कर रहे हैं। ट्रेलर में कई बार उनकी झलक देखने को मिली है। किल के ट्रेलर में राघव जुयाल के एक्शन अवतार ने भी दर्शकों की खूब सराहना बटोरी है। अब ऑस्कर विजेता निर्माता गुनीत मोंगा ने बताया कि राघव के किरदार के लिए उन्हें कितने ऑडिशन लेने पड़े थे।

ऑस्कर विजेता निर्माता गुनीत मोंगा ने राघव के किरदार के लिए अपना कास्टिंग अनुभव साझा करते हुए कहा, हमने 100 ऑडिशन लिए और राघव सबसे बेहतर रहे। उन्होंने कहा, हम किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे थे, जो इस भूमिका में खतरनाक और कॉमेडी मिश्रण ला सके। एक ऐसा चरित्र जो सच में एक ही समय में दर्शकों को मोहित और भयभीत कर सके। राघव जुयाल का ऑडिशन काफी अलग था, उन्होंने न केवल रोल की गंभीरता को अपनाया, बल्कि अपनी प्रतिभा भी छोड़ी। किल में राघव के किरदार की तुलना बैटमैन के जोकर जैसे प्रतिष्ठित किरदारों से की जाने लगी है, क्योंकि वह अपने खतरनाक किरदार में जिस अनोखे तरीके से कॉमेडी का तड़का लगाते हैं। उनका प्रदर्शन दर्शकों को मनोरंजन के अगले स्तर तक लेकर जा रहा है गुनीत मोंगा ने आगे बताया, राघव का प्रदर्शन शानदार ढंग से उनके चरित्र के सार को दर्शाता है, उनका रोल दर्शकों को लोकप्रिय किरदार जोकर की याद दिलाएगा, लेकिन एक कहानी के साथ जो पूरी तरह से उनका अपना है। जिन आलोचकों ने फिल्म की शुरुआती झलक देखी है, वे पहले से ही राघव के प्रदर्शन की प्रशंसा कर रहे हैं। कॉमेडी के साथ डर को संतुलित करने की उनकी क्षमता ने सिनेमा में इस तरह के किरदारों को एक नई दिशा दी है। बता दें कि अपने डांस और कॉमिक टाइमिंग के लिए मशहूर राघव जुयाल किसी का भाई किसी की जान के बाद अब एक नए अंदाज में लोगों से रूबरू होने वाले हैं। फिल्म किल में वह बिल्कुल अलग अंदाज में नजर आएंगे। किल 5 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

दो शादियां टूटने पर बोले करण सिंह ग्रोवर

करण सिंह ग्रोवर अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। उन्होंने अपने दो तलाक और बिपाशा बसु से तीसरी शादी के बारे में एक इंटरव्यू में पहली बार बात की है। करण ने इंटरव्यू में कहा, कोई भी ब्रेकअप या तलाक अच्छा नहीं होता है। लोग सब कुछ भूलकर आगे बढ़ जाते हैं और यही सोचते हैं कि जो हुआ, अपने भले के लिए हुआ। करण ने आगे ये भी कहा कि इससे पहले उन्हें कभी अपनी निजी जिंदगी के बारे में बात करने की जरूरत महसूस नहीं हुई क्योंकि सबकी लाइफ में कई बार ऐसा समय आता है जब आपको प्राइवेसी की जरूरत होती है।

बिपाशा से शादी के बाद जिंदगी बदल गई

करण ने इंटरव्यू में बिपाशा की तारीफ की और कहा, मैं बिपाशा की वजह से खुद को पहचान पाया। उनकी वजह से मुझमें जबरदस्त बदलाव आए। पहले मैं रात भर जागता था और दिन में सोता था लेकिन अब सुबह पांच बजे उठ जाता हूं और अब मेरी हर सनराइज और सनसेट देखने की इच्छा होती है।

करण की दो टीवी एक्ट्रेसेस से टूट चुकी शादी

करण की पहली शादी टीवी एक्ट्रेस श्रद्धा निगम से 2008 में हुई थी लेकिन ये एक साल के अंदर ही टूट गई थी। इसके बाद करण की दूसरी शादी टीवी एक्ट्रेस जेनिफर विंगेट से 2012 में हुई थी। शादी के दस महीने बाद ही दोनों ने तलाक ले लिया था। इसके बाद करण ने बिपाशा बसु से तीसरी शादी की थी।

एनटीपीसी नवीनगर की उत्पादन क्षमता होगी 4380 मेगावाट

औरंगाबाद की तस्वीर बदल देगा 25000 करोड़ का निवेश

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। केंद्र सरकार ने औरंगाबाद को एक बड़ा तोहफा देते हुए एनटीपीसी नवीनगर में 800- 800 मेगावाट क्षमता की तीन नई इकाइयों के निर्माण को मंजूरी दे दी है। यहां पहले से ही 1980 मेगावाट बिजली उत्पादन क्षमता का संयंत्र कार्यरत है और इस प्रकार 2400 मेगावाट उत्पादन क्षमता बढ़ जाने से इस परियोजना की कुल उत्पादन क्षमता 4380 मेगावाट हो जाएगी। इस प्रकार 4380 मेगावाट उत्पादन क्षमता के साथ एनटीपीसी नवीनगर भारत की दूसरी सबसे बड़ी थर्मल पावर परियोजना हो जाएगी। इस परियोजना की मंजूरी की महत्ता इसी बात से लगाई जा सकती है कि एनटीपीसी नबीनगर स्टेज 2 के रूप में दी गई इस मंजूरी से 25000 करोड़ से अधिक का निवेश औरंगाबाद जिले में होगा। औरंगाबाद जिले में अब तक किसी भी परियोजना के लिए यह अब तक का सबसे बड़ा निवेश है। केंद्र सरकार और उर्जा मंत्रालय के उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार शीघ्र ही इस 2400 मेगावाट उत्पादन क्षमता विस्तार के लिए निविदा प्रकाशित की जाएगी।नवीनगर सुपर थर्मल पावर स्टेशन के स्टेज 2 के तहत 8800 मेगावाट की तीन इकाइयां यानी कुल 2400 मेगावाट उत्पादन क्षमता वाली परियोजना को धरती पर उतारने के लिए 25000 करोड़ से अधिक का निवेश औरंगाबाद में किया जाएगा। औरंगाबाद जिले में किसी भी परियोजना के लिए यह अब तक का सबसे बड़ा निवेश होगा। इस निवेश से इस पूरे इलाके की तस्वीर बदल जाएगी।

एक तो इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि को मजबूती मिलेगी, वहीं प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों को रोजगार के नए साधन उपलब्ध होंगे। पुनर्वास एवं पुनर्स्थापना तथा सामाजिक निगमित दायित्व (सीएसआर) के तहत क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में भी काफी मदद मिलेगी और इस मद में जिले में, खासकर परियोजना प्रभावित क्षेत्र में करोड़ों रुपए से बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी।

इतनी बड़ी परियोजना के लिए व्यापक मानव संसाधन की आवश्यकता होगी और इस निवेश से प्रत्येक आर्थिक गतिविधि को प्रोत्साहन मिलेगा। फिलहाल नवीनगर में दो विद्युत परियोजनाएं संचालित हो रही हैं।

जिसमें एक भारतीय रेल और एनटीपीसी का संयुक्त उपक्रम भारतीय रेल बिजली कंपनी है तथा दूसरा एनटीपीसी के संपूर्ण स्वामित्व वाला नवीनगर थर्मल पावर स्टेशन है जिसकी वर्तमान उत्पादन क्षमता 1980 मेगावाट है। इन दो परियोजनाओं के निर्माण से ही औरंगाबाद की तस्वीर बदल गई है और अब जबकि इन परियोजनाओं से भी ज्यादा बड़ी परियोजना को मंजूरी मिली है तो यह आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि क्षेत्र के विकास में कितना बड़ा बदलाव आएगा तथा आधारभूत संरचना का भी किस हद तक विकास होगा। स्टेज 2 में बड़े पैमाने पर राशि का निवेश होने के कारण और इसके पूर्ण होने पर बिहार को विभिन्न प्रकार के कर मद में प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए का राजस्व बढ़ेगा। नवीनगर सुपर थर्मल पावर स्टेशन के स्टेज 2 के तहत 8झ8 सौ मेगावाट की तीन इकाइयां यानी कुल 2400 मेगावाट उत्पादन क्षमता वाली परियोजना को मंजूरी मिल गई है और इसकी शीघ्र ही निविदा प्रकाशित की जाएगी। इस स्टेज के पूरा हो जाने पर नबीनगर सुपर थर्मल पावर परियोजना देश की सबसे दूसरी बड़ी परियोजना होगी। इस परियोजना से कुल 4380 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा । अभी वर्तमान में विंध्याचल सुपर थर्मल पावर स्टेशन देश का प्रथम सबसे बड़ा प्रोजेक्ट है जहां लगभग 4800 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है ।

उल्लेखनीय है कि नवीनगर सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट में पहले चरण में 660-660 मेगावाट की तीन इकाइयां स्थापित की गई हैं जो वर्तमान में कुल 1980 मेगावाट बिजली का उत्पादन कर रही हैं. इस थर्मल पावर स्टेशन की उत्पादन क्षमता में 2400 मेगावाट की वृद्धि होने के बाद इस परियोजना का दर्जा सुपर थर्मल पावर स्टेशन से बदलकर मेगा थर्मल पावर स्टेशन हो जाएगा जिससे इस परियोजना को मशीनरींयों एवं निर्माण आदि में कर की छूट के अलावा कई अन्य प्रकार की सुविधा हासिल होती रहेगी। बिहार को नवीनगर प्रोजेक्ट के स्टेज 2 के निर्माण से जबरदस्त फायदा होने वाला है। बिहार को वर्तमान में बिजली की जो आवश्यकता होती है या अन्य राज्यों की बिजली परियोजनाओं पर निर्भरता रहती है, वह इस परियोजना के बनने से दूर हो जाएगी। साथ ही अगले 4 वर्षों के भीतर जो बिहार में बिजली की मांग बढ़ेगीऔर जो आवश्यकता होगी उसकी पूर्ति इस परियोजना के माध्यम से आसानी से हो सकेगी ।बिहार को बिजली के लिए अन्य राज्यों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा बल्कि अपने ही राज्य खासकर औरंगाबाद में उत्पादित 4380 मेगावाट बिजली से राज्य की बिजली आवश्यकताओं की आधा से अधिक पूर्ति हो सकेगी। स्टेज 2 में बड़े पैमाने पर राशि का निवेश होने के कारण और इसके पूर्ण होने पर बिहार को विभिन्न प्रकार के कर मद में प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए का राजस्व बढ़ेगा ।नवीनगर एनटीपीसी बिजली घर की उत्पादन क्षमता में विस्तार में कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा और निविदा फाइनल होते ही निर्माण कार्य प्रारंभ हो जाएगा क्योंकि कई सुविधाएं और संसाधन इस परियोजना के पास पहले ही उपलब्ध हैं। उदाहरण के तौर पर आज भी इस परियोजना के पास 1400 एकड़ सर प्लस जमीन है। यानी इतनी जमीन के लिए अधिग्रहण की कोई प्रक्रिया शुरू नहीं करनी होगी। इसके साथ-साथ बुनियादी आधारभूत संरचनाओं जैसे रेलवे ट्रैक का निर्माण, वॉटर पाइपलाइन का निर्माण, कूलिंग पॉन्ड आदि का निर्माण नए सिरे से नहीं करना होगा और एनटीपीसी नवीनगर के वर्तमान इंफ्रास्ट्रक्चर में ही आशिक विस्तार कर काम चल जाएगा। सबसे बड़ी समस्या भूमि अधिग्रहण की होती है जो पहले ही यहां निष्पादित की जा चुकी है। इसलिए भी 800 मेगावाट की तीन यूनिट यानी 2400 मेगावाट उत्पादन के लिए एनपीसी नवीनगर से बेहतर विकल्प कोई और नहीं था। इसके साथ-साथ सुरक्षा पर भी अतिरिक्त राशि खर्च नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि यहां पहले से ही सारे इंतजाम हैं। जमीन समेत कई सारे संसाधन पहले से मौजूद होने और कोयला के आवंटन के लिए कोलियरियों के प्लांट से नजदीक होने के कारण बिजली के उत्पादन खर्च में कमी आएगी। इस कारण यहां उत्पादित बिजली सस्ती होगी जिसका सीधा लाभ बिहार और उपभोक्ताओं को मिलेगा। इस प्रकार से एनटीपीसी नवीनगर में नई यूनिटों का निर्माण खुद एनटीपीसी के लिए बेहद लाभदायक है। इसी को ध्यान में रखते हुए यहां क्षमता विस्तार को मंजूरी दी गई।

जिलाधिकारी ने डिप्लोमा-सर्टिफिकेट प्रवेश प्रतियोगिता (पीई/पीएम/पीएमएम) परीक्षा-2024 परीक्षा केन्द्रों का किया औचक निरीक्षण

प्रात: किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम) ।बिहार संयुक्त प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा पर्षद द्वारा आयोजित डिप्लोमा-सर्टिफिकेट प्रवेश प्रतियोगिता (पीई/पीएम/ पीएमएम) परीक्षा-2024 रविवार को जिला मुख्यालय के 13 परीक्षा केंद्रों पर एकल पाली (11.00 बजे पूर्वाह्न से 01.15 बजे अपराह्न) में एवं 03 परीक्षा केंद्रों पर द्वितीय पाली (02 बजे अपराह्न से 04.15 बजे अपराह्न) में आयोजित की गई।।

जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय द्वारा आज परीक्षा केन्द्रों औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान विपिन हाईस्कूल सहित अन्य विद्यालयों में अवस्थित परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया गया तथा प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी, केन्द्राधीक्षक एवं वीक्षक को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। इस क्रम में जिलाधिकारी द्वारा सीटिंग प्लान, फ्रिक्सिंग स्थल, सीसीटीवी कैमरा, जैमर, वीडियोग्राफी, साफ-सफाई, अन्य मूलभूत सुविधाओं आदि का जायजा लिया गया। सभी परीक्षा केन्द्रों पर सभी व्यवस्थाएं दुरूस्त पायी गयी। परीक्षा का संचालन स्वच्छ, शांतिपूर्ण एवं कदाचारमुक्त पाया गया। निरीक्षण के क्रम में जिलाधिकारी द्वारा परीक्षा कार्य में संलग्न सभी केन्द्राधीक्षकों, दंडाधिकारियों, पुलिस बल के जवानों आदि को बिहार संयुक्त प्रवेश प्रतियोगिता परीक्षा पर्षद द्वारा दिये गये दिशा-निदेर्शों का अशरक्षः अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि हर हाल में शांतिपूर्ण एवं कदाचारमुक्त परीक्षा का संचालन किया जाय। कदाचार में शामिल छात्र-छात्राओं सहित अन्य व्यक्तियों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाय। उनके विरूद्ध नियमानुकूल कार्रवाई की जाय। इस अवसर पर अपर समाहर्ता राजीव कुमार सिंह, अपर समाहर्ता, विभागीय जाँच कुमार रविन्द्र, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सुजीत कुमार सहित अन्य प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

विडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक का होगा आयोजन

माँझी। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के मंत्री डॉप्रेम कुमार की अध्यक्षता में सारण के सभी जैव विपर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के मंत्री डॉ प्रेम कुमार की अध्यक्षता में सारण के सभी जैव विविधता समितियों के साथ विडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक का आयोजन किया जा रहा है।विधता समितियों के साथ विडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा बैठक का आयोजन किया जा रहा है। विभागीय मंत्री के निदेशानुसार पंचायत, प्रखण्ड तथा जिला स्तर पर गठित जैव विविधता प्रबंधन समितियों की एक साथ राज्यस्तरीय सम्मेलन विडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से 25 जून को 11.00 बजे जिला मुख्यालयों तथा प्रखण्ड मुख्यालयों में आयोजित किया जा रहा है।ज़िले के सभी प्रखंड स्तर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी कार्यालय में एवं ज़िला स्तर पर वन प्रमंडल पदाधिकारी कार्यालय के सभागार मे इस बैठक का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विभागीय मंत्री जैव विविधता प्रबन्धन समितियों को सम्बोधित करेंगे।

17 दिवसीय बरन समर कैम्प 2024 का समापन समारोह संम्पन

गया। बर्नवाल सेवा सदन द्वारा इस कार्यक्रम के शुरूआत में सर्वप्रथम महाराज अहिबरन जी के तैलीय चित्र पर माल्यार्पण एवं आरती गान हुआ है ।इसके उपरांत 17 दिनों में बच्चों ने आर्ट एंड क्राफ्ट , मेहंदी एवं नृत्य प्रशिक्षण में जो भी सीखे उसका प्रदर्शन समाज के अतिथियों बीच किया गया है ।प्रशिक्षित सभी बच्चों को प्रमाण पत्र, और मेडल देकर सम्मानित किया गया है ।समापन सत्र में गया अग्निशमन बचावकर्मियों द्वारा मॉक ड्रिल के माध्यम से सुरक्षा एवं बचाव के दृष्टिकोण से एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया है।*जिसमे समाज के महिलाओं, पुरुषों या बच्चों सभी ने अपनी सहभागिता दिखाई ।इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से नगर समिति के अध्यक्ष प्रेम प्रकाश पवन, सचिव राकेश कुमार, कोषाध्यक्ष विक्की बरनवाल, बिनोद कुमार, राजेश कुमार, हिमांशु गौरव, सहित सैंकड़ो लोग उपस्थित रहे ।

किसान चौपाल का किया गया आयोजन

बरियारपुर (मुंगेर)। करहरिया दक्षिणी पंचायत के दुर्गा मन्दिर प्रांगण मे किसान चौपाल का आयोजन किया गया अध्यक्षता प्रखंड कृषि प्रशिक्षण पदाधिकारी सुधीरतिवारी नेकिया ।उन्होंने बताया कि बरियारपुर प्रखंड के तीन पंचायतों मे धान की खेती के साथ साथ मोटहन फसल का उत्पादन करने का लक्ष रखा गया है। बाकी एग्यारह पंचायतों मे मोटहन फसल उत्पादन करने का लक्ष रखा गया है ।इस तीन पंचायतों के कृषक को भी ज्वार,मक्का, राय, खेड़ी , मड्डुआ, कौनी,बाजरा,चिना के खेती कर कम मेहनत वकम खर्चे पर अधिक लाभ दायक शावित होगी ।उन्होंने बताया किसान सामुहिक खेती कर अपनी आय दुगनी कर सकते है।

सोने की नकली बिस्किट देकर महिला से असली सोने का कान बाली ठग लिया

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। खड़गपुर पुलिस सूत्र ने बताया कि शनिवार को नंदलाल बसु चौक के समीप कोडासी गांव की एक महिला से दो लोगों ने सोने की नकली बिस्किट देकर ठगी का शिकार बना लिया । ठगी की शिकार महिला से लोगों ने कान की बाली और अंगूठी मंगलसूत्र लेकर चंपत हो गए । इधर पीड़ित महिला ने मामले को खड़गपुर थाना में घटना की आवेदन देकर रिपोर्ट दर्ज कराई है।पीड़ित महिला कोडिशी गांव निवासी सुमित्रा देवी ने बताया कि घर से खड़गपुर बाजार कुछ सामान खरीदने गई थी इसी दौरान नंदलाल बसु चौक स्थित मुख्य चौराहे पर बाइक सवार दो अज्ञात लोगों ने मुझे अपनी बातों में उलझाया लिया लालच देकर कपड़े में लिपटा सोने का बिस्किट बताते हुए कान की बाली एवं सोने की मंगलसूत्र एक अंगूठी मुझे से ले लिया बिस्किट को जब रात को दुकान में चेक कराया तो वह नकली निकाला महिला को अपने साथ हुई धोखाधड़ी की जानकारी अपने परिजनों को महिला ने दिया तो परिजनों ने उसे ठग को खोजने का खूब प्रयास किया लेकिन उसका कहीं कोई पता नहीं चला।

पुलिस ने एक कुख्यात नक्सली को डेरनी थाना से किया गिरफ्तार

अमनौर। सारण पुलिस कप्तान के निदेर्शानुसार थाना क्षेत्र में अपराध के मुख्य शीर्ष में वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी को लेकर लगातार अभियान चलाया जा रहा है ।इसी दौरान एसटीएफ के टीम व अमनौर पुलिस के संयुक्त करवाई मे एक कुख्यात नक्सली को डेरनी थाना क्षेत्र से गिरफ्तार कर भेजा जेल ।गिरफ्तार नक्सली की पहचान डेरनी थाना क्षेत्र के सुल्तानपुर गांव के प्रेम मांझी पिता रामदेव मांझी के रूप में की गई है ।पुलिस ने बताया कि नक्सली अमनौर थाना के कांड सख्या 74/10,व 01/14 साथ ही सी एल सी एक्ट में वांछित कई वर्षो से फरार चल रहे अभ्युक्त था ।इनके बीरुद्ध अमनौर डेरनी दरियापुर पानापुर थाना में चोरी रंगदारी आर्म्स एक्ट विस्फोटक अधिनियम सहित कई नक्सल कांड दर्ज है।

मढ़ौरा में प्रस्तावित खेल स्टेडियम का होगा निर्माण : डीजी

प्रात: किरण संवाददाता

मढौरा ग्रामीण। मढ़ौरा थाना के पीछे वाले मैदान में प्रस्तावित खेल स्टेडियम का निर्माण कराया जाएगा। उक्त बातें खेल प्राधिकरण के डीजी रविंद्र संकरण में मशरक जाने के दौरान खेल संघ के लोगों से बातचीत के क्रम में कहीं। उन्होंने कहा कि उक्त स्टेडियम निर्माण के लिए आवश्यक जमीन का चयन किया जा चुका है और इसके लिए जिला पदाधिकारी द्वारा विभाग को एनओसी भी प्राप्त हो चुका है। अब मढौरा में खेल स्टेडियम निर्माण की बाकी प्रक्रियाएं विभाग के स्तर पर पूरी की जा रही है। इसके बाद स्टेडियम निर्माण का टेंडर आदि किया जाएगा। खेल को बढ़ावा देने और ग्रामीण प्रतिभाओं को निखारने के लिए सरकार अब पंचायत स्तर पर खेल क्लबो का गठन करेगी। जिसे खेल प्राधिकरण से निबंधित कराकर खिलाड़ियों को आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि बहुत जल्द ही खेल प्राधिकरण द्वारा

खेल क्लबो के निबंध के लिए फॉर्मेट जारी किया जाएगा। डीजी ने कहा कि सरकार खेल को पंचायत और गांव के स्तर पर ले जाकर ग्रामीण प्रतिभाओं तरासने और निखारने का काम करेगी ताकि ग्रामीण प्रतिभाओं को गांव से निकालकर जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचा जा सके।

मालूम हो की गत 25 दिसंबर से 30 दिसंबर के बीच मढौरा थाना के पीछे वाले खेल मैदान में 67 वी राष्ट्रीय बालिका फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस दौरान खेल प्राधिकरण के डीजी ने उक्त स्थल पर एक बेहतर खेल स्टेडियम निर्माण की घोषणा की थी और इसके लिए जरूरी जमीन को चिन्हित कर अनुमंडल व जिला प्रशासन से जमीन का एनओसी भी विभाग को मिल जाने की बात बताई थी। इधर मढौरा विधायक व पूर्व खेल मंत्री जितेंद्र कुमार राय के मंत्री पद से हटने के बाद से इस स्टेडियम के काम में सुस्ती आ गई है और यहां के लोगों को यह लगने लगा है कि शायद अब यहा प्रस्तावित स्टेडियम निर्माण रुक जाएगा। ऐसे में खेल प्राधिकरण के डीजी द्वारा मढौरा में प्रस्तावित स्टेडियम निर्माण कराये जाने की घोषणा से यहां के खेल प्रेमी और खिलाड़ियों में एक नई उम्मीद जगी है।

अब करहरिया पश्चिमी पंचायत के वार्ड संख्या 6 को मिलेगा शुद्ध पेयजल

प्रात: किरण संवाददाता

बरियारपुर(मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड के करहरिया पश्चिमी पंचायत के वार्ड संख्या 06 में मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना के वर्षो से बन्द हर घर नल जल योजना के द्वारा ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नही हो रही थी जिसे राष्ट्रीय दैनिक प्रातः किरण समाचार पत्र ने प्रमुखता से प्रकाशित किया था। इस खबर पर प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह ने विभागीय

पदाधिकारी के साथ बैठक कर लगाते हुए सख्त निर्देश दिया कि अभिलंब बरियारपुर प्रखंड के करहरिया पश्चिमी पंचायत में मुख्यमंत्री सात निश्चय योजना के नल जल कार्यक्रम को अमली जामा पहनाया जाए। नल जल योजना में सुधार लाने का भी निर्देश दिया गया था। उन्होंने कहा था कि इस तपीश में अगर नल जल योजना बैकार रही तो कब सुधार होगा । इस पर पीएचइडी विभाग के अधिक्षण अभियंता द्वारा संज्ञान लिया गया है। पीएचइडी विभाग के अधीक्षण अभियंता ने अपने अधीनस्थों से

कहा है कि अब कुछ भी सुनना नही चाहते है। अभिलंब नल जल योजना कार्य से सम्बन्ध मे मरम्मती सुनिश्चित किया जाए। इधर नल जल योजना मरम्मती कताओं ने बताया कि हम कार्य करने मे असमर्थ है। क्यों की हमें 21 माह से स्थलों पर पहुंचने के लिए वाहनों में तेल उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है । उन्होंने बताया कि हम अपने घरों से कितनी राशी वहन कर आपके सेवा प्रदान करते रहेंगे। पी एच डी विभाग से राशी नही मिलने के कारण हम लोग हड़ताल पर चले गए हैं।

सरकारी जमीन पर लगे शीशम पेड़ को काटने के मामले में अंचल अधिकारी ने की कार्यवाही

संग्रामपुर (मुंगेर) ।सरकारी जमीन पर लगे पेड़ को काटने के मामले में अंचलाधिकारी निशीथ नंदन ने कटे पेड़ को जब्त करते हुए चोकीदार को लगा दिया गया ।प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रखंड मुख्यालय के नजदीक सरकारी डार के किनारे लगे कुछ शीशम के पेड़ को काटे जाने की जानकारी अंचलाधिकारी निशीथ नंदन को मिली। जानकारी पर अंचल अधिकारी

के द्वारा इसकी सूचना संग्रामपुर थाने को दी गई ।थाना के पुअनि सत्यम कुमार,सौरभ कुमार,अंकित कुमार पुलिस बल के साथ पहुंचे तथा मौके पर पहुंचकर इसकी जांच की गई। जांच में सरकारी डांड के किनारे लगे तीन शीशम के पेड़ कटे हुए थे। पदाधिकारी के द्वारा इस संबंध में आसपास के लोगों से पूछताछ भी की गई। परंतु कोई जानकारी नहीं मिलने के बाद कटे हुए पेड़ को जप्त करते हुए सरकारी जमीन पर पेड़ काटने का आरोप तय करते हुए,प्राथमिकी दर्ज कराई जायेगी। इस संबंध में जानकारी देते हुए अंचलाधिकारी निशीथ नंदन ने बताया कि सरकारी दाढ़ पर लगे पेड़ को काटे जाने की सूचना मिली थी। वहां पहुंचने पर तीन शीशम के पेड़ कटे हुए थे तथा एक को भी लगभग काट ही दिया गया था। इस संबंध में पुरी जांच के बाद प्राथमिकी दर्ज की जायेगी ।एवं कटी हुई वृक्ष को जप्त कर वहां चौकीदार की नियुक्ति कर दी गई है।

सांसद सिग्रीवाल को श्रीरूद्र महायज्ञ के कार्यकर्ताओं ने अंगवस्त्र देकर किया सम्मानित

प्रात: किरण ब्यूरो

पानापुर (सारण)प्रखंड के रसौली गांव में चल रहे श्रीरूद्र महायज्ञ एवं नवनिर्मित नर्मदेश्वर शिव मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा में शनिवार की शाम सांसद जनार्दन सिंह सीग्रीवाल पहुंचे एवं पूजा अर्चन कर क्षेत्र की अमन शांति दुआ मांगी। इस दौरान पूजा समिति के सदस्यों द्वारा सांसद को अंगवस्त्र से सम्मानित किया गया। इस मौके पर

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए सांसद ने कहा कि यज्ञ से वातावरण में शुद्धता आती है। जिस किसी इलाके में यज्ञ होती वह पूरा इलाका भगवतमय हो। उन्होंने पूजा समिति के लोगों का इस पुनित कार्य के लिए आभार प्रकट किया। इससे पूर्व लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करने के पश्चात पहली बार पानापुर पहुंचे सांसाद का जगह जगह बीजेपी कार्यकताओं व सामाजिक संगठन से जुड़े लोगों एवं शिक्षाविदों द्वारा भब्य स्वागत किया। पानापुर बाजार के समिप स्थित सामाजिक कार्यकर्ता विनोद सिंह के आवासीय परिसर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जहां सांसाद का स्वागत किया गया। वहां उपस्थित लोगों से सांसद श्री सीग्रीवाल ने कहा कि हम हमेशा से क्षेत्र में अमन शांति खुशहाली के लिए काम करते आए है आगे भी यह कारवां जारी रहेगा। इस मौके पर विनोद सिंह, संजय सिंह, धीरज सिंह, शिवकुमार सिंह, रामेश्वर सिंह, पारस सिंह, भुट्ट सिंह, शुभनाथ भगत, कुंदन सिंह, जितेंद्र सिंह, शम्भूनाथ, अणू सिंह, दूधनाथ ठाकुर सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

संविधान और आरक्षण पर मंडराता खतरा अभी टला नहीं है : सपा

प्रात: किरण ब्यूरो

मुंगेर। मुंगेर जिला समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेताओं की एक आवश्यक बैठक रविवार को जिला मुख्यालय स्थित शहीद स्मारक भवन में सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव की अध्यक्षता में आयोजित की गई । जिसमें सपाईयों द्वारा सड़क शिक्षा स्वास्थ्य सुरक्षा को लेकर पूर्व से चलाए जा रहे हैं आंदोलन पर चर्चा करते हुए आगे की रणनीति तय करते हुए संविधान और आरक्षण पर मंडराती खतरा एवं सपा प्रमुख अखिलेश यादव के जन्म दिवस मनाने पर भी विचार विमर्श किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने कहा कि निश्चित तौर पर अब देश का विपक्ष मजबूत हुआ है लेकिन संविधान और आरक्षण पर मंडराता खतरा अभी टला नहीं है उधार की जीत से बौखलाई भाजपा जदयू वाली एनडीए की सरकार में राष्ट्र राज्य और जिले का विकास संभव नहीं है इसलिए बैशाखियों पर टिकी सरकार के विरुद्ध संघर्ष तेज करना ही हम समाजवादी लोगों का

उद्देश्य है। उन्होंने आगे कहा कि हम मुंगेर जिला में व्याप्त अराजकता बढते अपराध इलाज के नाम पर हो रहे व्यापार जिला समाहरणालय से लेकर प्रखंड कार्यालय में भ्रष्टाचार किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे हम सपाई अपना संघर्ष और तेज करेंगे। वहीं बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी के प्रधान महासचिव मनोज कुमार मधुकर ने कहा कि समाजवादी पार्टी अपने नीतियों और सिद्धांतों से लैश जिले के सड़क शिक्षा स्वास्थ्य सुरक्षा किसान मजदूर छात्र नौजवान की लड़ाई लड़ती रही है हमारी चाहे जो स्थिति हो हम मुंगेर जिला में विपक्ष की भूमिका में रहे हैं और आगे भी रहेंगे । बैठक में पार्टी के उपाध्यक्ष रामनाथ राय महासचिव अशोक भारत मिथिलेश यादव सदर प्रखंड अध्यक्ष ईश्वर मंडल ने जिले में बढ़ते अपराध एवं भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था पर बिफरते हुए कहा कि भाजपा जदयू की यह सरकार पूर्णता भ्रष्टाचार पर टिकी है इसके हर अधिकारी हर विभाग भ्रष्टाचार में आकंठ डूबा है जिसे लेकर खामोश बैठना भ्रष्ट सरकार के आगे घुटने देखने के समान होगा इसलिए किसी भी कीमत पर जिले में आंदोलन तेज होना चाहिए । बैठक में सर्वसम्मति से जन समस्या को लेकर जुलाई से सड़क पर उतरने एवं पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के जन्म दिवस पर सामूहिक रक्तदान करने आदि का निर्णय लिया गया। बैठक में वरिष्ठ नेता सुरेश यादव महिला सभा अध्यक्ष रंजना अराफात युवाजन सभा अध्यक्ष मो मास अनवर सचिव नकुल यादव मीडिया प्रभारी मनोज क्रांति डॉ सुधीर गुप्ता छडपन मंडल कुमार प्रभाकर मनीष यादव दिनेश साहू जितेंद्र यादव सहित अन्य सपाई उपस्थित थे।

जमीनी विवाद में वृद्ध को मारी चाकू, इलाज के दौरान हुई मौत

दरियापुर ।स्थानीय थाना क्षेत्र के समसपुरा गांव में संपति हड़पने के चक्कर में एक अधेड़ को परोसियो ने चाकू मार कर घायल कर दिया ।हालांकि इलाज के लिए परिजन स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए ।जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया ।मृतक स्व रुदल सिंह का 60 वर्षीय पुत्र मोहर लाल बताया जाता है ।उक्त घटना शनिवार की देर रात की है ।पुलिस ने रात में ही शव को अपने कब्जे में ले कर पोस्टमार्टम के लिए

छपरा भेज दिया ।इसके साथ ही त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने हत्या के मुख्य आरोपी प्रेम शरण सिंह व उसके भाई अरविंद सिंह को गिरफ्तार कर लिया ।जबकि अन्य आरोपी घर छोड़ कर फरार हैं ।घटना को लेकर मिली जानकारी के अनुसार दिन में मृतक का परोसी प्रेमशंकर सिंह उसकी जमीन में मिट्टी कटवा रहा था ।जिसका मृतक ने विरोध किया था ।जिसको लेकर दिन में थोड़ी बहुत बकझक के बाद मामला शांत हो गया ।लेकिन देर शाम जब मृतक घर से खाना खाकर थोड़ी दूर स्थित दालान में सोने चला गया। जहां आरोपी ने चाकू मार घायल कर दिया ।मृतक मोहरलाल सिंह को पुत्र नही है ।उन्हे तीन पुत्री ही है ।जिसकी शादी हो चुकी है ।लेकिन तीनो पुत्री बारी बारी से मायके आकर अपने मां बाप की सेवा करती है ।मृतक की पुत्रियों ने बताया कि उसके पट्टीदार प्रेमशंकर सिंह की उसकी जमीन पर नजर थी ।लेकिन उसका कुछ चल नही रहा था ।इसलिए वह मोहरलाल सिंह को ही पहले रास्ते से हटाने की फिराक में लग गया और चाकू मार कर हत्या कर दी ।घटना के उपरांत परिजनो में शोक का माहौल उत्पन्न हो गया था।

पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव अपने सपरिवार के साथ पहुंचे अजगैबीनाथ धाम, किए गंगा स्नान

भागलपुर। जिले के सुल्तानगंज के अजगैबीनाथ धाम के उतरवाहिनी गंगा घाट पर गंगा स्नान करने पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव अपने सपरिवार के साथ पहुंचे। इस दौरान पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव गंगा स्नान करने के बाद गंगा घाट स्थित अशोका गार्डन में सभी अपने राजद कार्यकताओं के साथ विश्राम किए और जनसंसद के संरक्षक अजीत कुमार से मुलाकात करते हुए सर्वांगीण वार्ता की। वही आगामी श्रावणी मेला को लेकर विचार-विमर्श भी किया। उन्होंने अजीत कुमार से महत्वपूर्ण चुनौतियों पर चर्चा की और सुझाव दिया कि समाज के उपहारी लोगों के हित के लिए नए योजनाओं की जरूरत है। वहाँ

मौजूद लोगों ने उन्हें दी गहरी संवेदना और सम्मान किया। बता दे की पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव की माता पूर्व खड़कपुर विधायक शांति देवी का निधन 10 जून को उनके पैतृक आवास हवेली खड़गपुर में हो गया था। बता दे की शांति देवी का राजनीतिक जीवन काफी उतार-चढ़ाव से भरा रहा। वह एक बार विधायक रही। उन्होंने अपने राजनीतिक सफर के दौरान बरहट प्रखंड प्रमुख के रूप में चुनी गई। इसके बाद शांति देवी राजद के टिकट पर मुंगेर जिले के खड़गपुर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ी थी और वहां से जीत दर्ज की। उन्होंने परिवार के साथ समाज को सजाने-संवारने में अहम भूमिका निभाई। वे समाज सेवी में बढ़चढ़कर हिस्सा लेती थी। उनके निधन के बाद मुंगेर के गंगा घाट पर उनका अंतिम संस्कार किया गया वही मुख अग्नि बिहार के पूर्व मंत्री विजय प्रकाश ने दी। जिसके बाद श्राद्ध कर्म के अंतिम दिन रविवार को अपने सपरिवार के साथ गंगा स्नान करने सुल्तानगंज पहुंचे थे। जहां सभी ने अजगैबीनाथ धाम के प्रसिद्ध उत्तर वाहिनी गंगा में शुद्धता और पवित्रता की डुबकी लगाई। और अपने मां के दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना किए।

अजगैबीनाथ मंदिर के गंगा घाट में गंगा स्नान के दौरान एक बालक डूबा, खोजबीन जारी

भागलपुर। जिले के सुल्तानगंज के अजगबीनाथ मंदिर के गंगा घाट में गंगा स्नान के दौरान एक 13 वर्षीय बालक शनिवार की शाम डुब गया। जिसकी खोजबीन रविवार को भी एसडीआरएफ के द्वारा जारी है। बता दे की भागलपुर से दोस्त के साथ गंगा स्नान करने सुल्तानगंज आया हुआ था जहां की गंगा स्नान ने दौरान बालक गहरे पानी में चले जाने से वह सब गया। डूबे बालक के साथ आए 12 वर्षीय रणवीर कुमार पिता पिंटू साह निवासी हसनगंज बाल्टी कारखाना भागलपुर ने बताया कि दोस्त भागलपुर निवासी गोपी मंडल के पुत्र अनिकेत कुमार के साथ सुल्तानगंज आए थे। उसने बताया कि हमलोग दुकानों से सिगरेट का खाली डब्बा खरीदने का काम करते हैं। इसी को लेकर हम दोनो सुल्तानगंज आए थे। यहां से सिगरेट लेकर मुंगेर आंबेडकर चौक ले जाकर बेचने के बाद जो कमाई होती है, उसे अपने पिता को देते हैं। दोनों शाम को करीब चार बजे गंगा किनारे पहुंचे थे। डूबे हुए बालक के दोस्त रणवीर ने बताया कि अनिकेत अपना बैग चौकी पर रख कर गंगा नदी में नहाने के लिए गया लेकिन डूबने लगा।

मंगला गौरी मंदिर में हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन, गूंजे जय श्री राम के नारे

गया। शक्तिपीठ माता मंगला गौरी मंदिर स्थित हनुमान मंदिर में अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद, राष्ट्रीय महिला परिषद की ओर से हनुमान चालीसा केंद्र में राम भक्तों के द्वारा सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ किया गया है। सर्वप्रथम हनुमान जी को सिंदूर का चोला चढ़ाकर माल्यार्पण किया गया है। मंगला गौरी हनुमान चालीसा केंद्र की संचालिका वीणा गिरी ने सस्वर हनुमान चालीसा पाठ का शुभारंभ कर हनुमान जी की स्तुति की है ।इस दौरान आसपास के महिलाओं ने भजन-कीर्तन प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को भक्तिमय कर दिया है। हनुमान चालीसा की चौपाइयां, जय श्री राम जय हनुमान के नारों से पूरा परिसर गूंज उठा है।

विश्व ओलंपिक एवं हैंडबॉल दिवस पर खिलाड़ियों ने खेल मैदान में केक काटा

विश्व ओलंपिक एवम हैंडबॉल दिवस का जश्न सारण के खिलाड़ियों ने एक साथ मनाया। मशरक मुख्यालय अवस्थित राजकीयकृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मशरक के खेल मैदान में सारण जिला हैंडबॉल खिलाड़ियों के साथ इस जश्न में एथलेटिक , खो खो , कबड्डी , भारोतोलन, वुशु , ताइक्वांडो एवम टी टी के स्कूली खिलाड़ी जुटे। मौके पर खेल प्रशिक्षक संजय कुमार सिंह , राष्ट्रीय हैंडबॉल रेफरी रितेश कुमार सिंह ने खिलाड़ियों के साथ केक काटा। मौके पर खेल प्रशिक्षक ने खिलाड़ियों को खेल स्वास्थ्य, शोहरत के साथ आजीविका के लिए अपनाने की बात कही । अनुशासन के साथ समय की प्रतिबद्धता खिलाड़ी के लिए आवश्यक बताया। विश्व ओलंपिक दिवस के साथ विश्व हैंडबॉल दिवस मनाने जुटे खिलाड़ियों ने एक दूसरे को मिठाई खिला खुशी मनाया। मौके पर राष्ट्रीय खिलाड़ी राजा कुमार सिंह , आकाश कुमार , रवि , शिवम , शबाना खातून , पुष्पा कुमारी , दीपशिखा, दूजा , नेहा , रीमा सहित अन्य शामिल हुए।

संक्षिप्त समाचार

पैट कमिंस को इस विश्व कप में लगातार 2 मैच मिले, दोनों में हैट्रिक

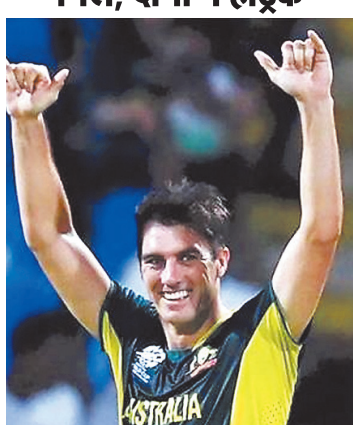

किंग्सटाउन (एजेंसी)। आस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज पैट कमिंस टी20 विश्व कप में लगातार दो हैट्रिक लगाने वाले पहले गेंदबाज बन गए जिन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ सुपर 8 चरण के मैच में यह कमाल किया। कमिंस ने 18वें ओवर की आखिरी गेंद पर राशिद खान को आउट किया। इसके बाद 20वें ओवर की पहली 2 गेंदों पर करीम जनत और गुलबदिन नायब के विकेट लिए। कमिंस ने बांग्लादेश के खिलाफ पिछले मैच में भी 18वें और 20वें ओवर में महमूदुल्लाह, मेहदी हसन और तौहीद हृदय के विकेट लिए थे। आस्ट्रेलिया को हालांकि अफगानिस्तान ने 21 रन से हरा दिया। कमिंस पहले से ही ब्रेट ली (2007), कर्टिस कैंपर (2021), वानिंदु हसरंगा (2021), कैगिसो रबाडा (2021) के साथ पुरुष टी20 विश्व कप में हैट्रिक लेने वाले सात खिलाड़ियों के शानदार समूह के सदस्य हैं। कार्तिक मयप्पन (2022) और जोश लिटिल (2022) भी यह कारनामा कर चुके हैं।

कमिंस ने पारी के ब्रेक में कहा कि आस्ट्रेलिया के लिए 100 से ज्यादा मैच खेलने के बाद लगातार 2 हैट्रिक लगाना सुखद है। उन्होंने कहा कि विश्व कप में अब मुझे लगातार दो मैच मिले और मेरी गेंदबाजी अच्छी रही। मुझे लगा कि उन्होंने शुरूआत में अच्छी बल्लेबाजी की लेकिन मैंने यह भी सोचा कि हमने सीमाएं सीमित कर दी हैं। कुल मिलाकर हमारा अच्छा गेंदबाजी प्रयास रहा। क्षेत्र में हमारा सबसे साफ़ दिन नहीं था। कुल मिलाकर खुश हूं।

मिशेल मार्श गरजे

भारत के खिलाफ दबाव होगा लेकिन ऑस्ट्रेलिया दबाव में अच्छा खेलता है

किंग्सटाउन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान मिशेल मार्श ने कहा कि उनकी टीम दबाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती है तथा वह अफगानिस्तान से मिली हार से उबरकर भारत के खिलाफ सोमवार को होने वाले करो या मरो मैच में शानदार वापसी करेगी। ऑस्ट्रेलिया को टी20 विश्व कप के सुपर 8 के मैच में अफगानिस्तान से 21 रन से हार का सामना करना पड़ा जिससे उसकी सेमीफाइनल में पहुंचने की उम्मीदों को करारा झटका लगा है। ऑस्ट्रेलिया को अब भारत के खिलाफ सुपर 8 के अपने अंतिम मैच में न सिर्फ जीत दर्ज करनी होगी बल्कि अच्छा नेट रन रेट भी बनाए रखना होगा।

मार्श ने संवाददाताओं से कहा कि यह महत्वपूर्ण मैच है जो भारत के खिलाफ होगा और इसमें हमें हर हाल में जीत दर्ज करनी होगी। अगर हमारी इस टीम के इतिहास को देखें तो हमारे खिलाड़ी दबाव में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। हमारे खिलाड़ी निश्चित रूप से इसके लिए पूरी तरह तैयार होंगे। उन्होंने कहा कि हमारे लिए चीजें अब स्पष्ट हैं। हमें खुद पर भरोसा रखना होगा। हमारे पास बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं और मेरा मानना है कि हम सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते रहे हैं। हमें सब कुछ भूलकर आगे बढ़ना होगा और अपना सबसे अच्छा प्रदर्शन करना होगा।

अफगानिस्तान के खिलाफ हार से ऑस्ट्रेलिया का टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आठ मैच का विजय अभियान थम गया। मार्श ने कहा कि हमें इस हार से वापसी करनी होगी। हमारा अपने इन खिलाड़ियों पर बहुत भरोसा है। हमारी टीम बहुत अच्छी है लेकिन आज का दिन हमारा नहीं था लेकिन सकारात्मक बात यह है कि हमें 36 घंटे के अंदर वापसी करने का मौका मिल रहा है।

भारत का सेमीफाइनल खेलना लगभग तय

आज ऑस्ट्रेलिया से पुराना बदला लेने का सुनहरा मौका

ग्रोस आइलेट (एजेंसी)। आत्मविश्वास से लबरेज भारतीय टीम टी-20 विश्व कप सुपर आठ चरण के अपने आखिरी मैच में सोमवार यानी 24 जून को ऑस्ट्रेलिया को हराकर अंतिम चार में प्रवेश के इरादे से उतरेगी। भारतीय समयानुसार रात आठ बजे से खेले जाने वाला यह मैच ऑस्ट्रेलिया के लिए यह 'करो या मरो' जैसा होगा क्योंकि अफगानिस्तान के खिलाफ हार ने उसके सारे समीकरण बिगाड़ दिए हैं। भारतीय टीम लगातार तीसरी जीत के साथ ग्रुप में शीर्ष रहकर सेमीफाइनल में जाना चाहेगी। वहीं अफगानिस्तान से शनिवार की रात को हारी 2021 की चैंपियन ऑस्ट्रेलियाई टीम को हारने पर बाहर होना पड़ सकता है।

ऑस्ट्रेलिया का घमंड तोड़ना होगा – अफगानिस्तान से हारने के बाद अब ऑस्ट्रेलिया को जीतने के साथ यह दुआ भी करनी होगी कि राशिद खान की टीम सोमवार की रात बांग्लादेश से मुकाबला हार जाए। तीन सुपर आठ मैच एक एक दिन के अंतर पर खेलने की दशा में टीम प्रबंधन खिलाड़ियों को रोटेट कर सकता था, लेकिन इसकी संभावना नहीं दिख रही। शनिवार की रात यहां पहुंची भारतीय टीम ने अभ्यास नहीं किया। अफगानिस्तान के खिलाफ विराट कोहली और रोहित शर्मा दोनों ने रन बनाए जबकि शिवम दुबे ने भी अहम पारी खेलकर आलोचकों का मुंह बंद कर दिया। इस टूर्नामेंट में भारत के लिए सबसे सकारात्मक बात हार्दिक पंड्या का हरफनमौला प्रदर्शन रही है, जिन्होंने गेंद और बल्ले दोनों के जौहर दिखाए हैं। कुलदीप यादव की फिरकी भी कैरेबियाई पिचों पर असरदार साबित हो रही है।

कंगारुओं के लिए करो या मरो – डेरेन सैमी स्टेडियम पर यह दूसरा दिन का मैच होगा। दिन रात के मैचों में बड़े स्कोर बने हैं, लेकिन पिछले मैच में इंग्लैंड की टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 164 रन के लक्ष्य का पीछा नहीं कर सकी थी। ऑस्ट्रेलिया को अफगानिस्तान के खिलाफ बल्लेबाजी के 'फ्लॉप शो' के बाद काफी सुधार करना होगा। ऑस्ट्रेलिया की फील्डिंग में लचर प्रदर्शन भी हैरान करने वाला था। यह देखना रोचक होगा कि कोहली लेग स्पिनर एडम जम्पा का सामना कैसे करते हैं जो कई मौकों पर उनका विकेट ले चुके हैं।

भारत से हारते ही टूर्नामेंट से बाहर हो सकती है ऑस्ट्रेलिया

भारत का स्क्वॉड – रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत, संजू सैमसन, शिवम दुबे, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज।

ऑस्ट्रेलिया का स्क्वॉड- मिशेल मार्श (कप्तान), एश्टन एगर, पैट कमिंस, टिम डेविड, नाथन एलिस, कैमरून ग्रीन, जोश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जोश इंगलिस, ग्लेन मैक्सवेल, मिशेल स्टार्क, मार्कस स्टोइनिस, मैथ्यू वेड, डेविड वार्नर, एडम जम्पा।

अभी तो पार्टी शुरू हुई है

आस्ट्रेलिया पर ऐतिहासिक जीत के बाद बस में चैंपियन सॉन्ग पर अफगानिस्तान टीम का डांस

न्यूयार्क (एजेंसी)। अफगानिस्तान की टीम जश्न मनाने के मूड में है और हो भी क्यो न! इस टीम ने टी-20 विश्व कप 2024 के प्रबल दावेदार में से एक ऑस्ट्रेलिया को हरा जो दिया। इस ऐतिहासिक जीत के बाद अफगानिस्तान के अनुभवी खिलाड़ी मोहम्मद नबी और उनके गेंदबाजी कोच ड्वेन ब्रावो ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक स्पेशल वीडियो शेयर किया है। सोशल मीडिया पर शेयर किए गए वीडियो में फैंस को बस से अफगानिस्तान टीम के जश्न की झलक भी मिली। यह खुशी और जश्न का माहौल था क्योंकि बैकग्राउंड में ब्रावो का मशहूर चैंपियन गाना बज रहा था। पूरी टीम ने गाने की मधुर धुनों पर डांस किया और साथ ही हुक-स्टेप भी किए, जो फैंस के बीच वास्तव में लोकप्रिय रहा है।

अफगानिस्तान के लिए ऐतिहासिक दिन – अफगानिस्तान 2022 और 2023 में ऑस्ट्रेलिया को हराने के बेहद करीब आ चुकी थी, लेकिन उसे जीत तीसरी कोशिश में जीत मिली। इसी के साथ टी-20 इंटनेशनल में ऑस्ट्रेलिया की लगातार आठ जीत का सिलसिला भी टूट गया। अफगानिस्तान के लिए जीत की नींव सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज और इब्राहिम जादरान ने रखी, जिन्होंने मुश्किल पिच पर पहले विकेट के लिए 118 रन की साझेदारी की। पैट कमिंस की हैट्रिक ने अफगानिस्तान को 148 रन पर रोक दिया। बाद में अनुभवी मीडियम पेसर गुलबदीन नईब की अगुवाई में अफगानिस्तान ने ऑस्ट्रेलिया के शीर्ष क्रम को ध्वस्त कर दिया। गुलबदीन को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 4-0-4-20 के आंकड़े के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

बदल गया सेमीफाइनल का सिनारियो – अब टूर्नामेंट का सुपर आठ राउंड खत्म होने में सिर्फ चार मैच ही बचे हैं। ऐसे में ग्रुप-1 में, भारत चार अंकों और 2.425 के नेट रन रेट के साथ तालिका में शीर्ष पर है, जिसका टॉप-4 में पहुंचना तय माना जा रहा है। सोमवार को सेंट लूसिया में अगर ऑस्ट्रेलिया बड़े अंतर से भारत को हराता है तो वे भारत से आगे निकल जाएगा और यदि अफगानिस्तान सेंट विंसेंट में बांग्लादेश पर भारी अंतर से जीतते हैं तो वे भी आगे निकल सकते हैं। अगर भारत सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करता है तो वे अपना सेमीफाइनल मैच 27 जून को गयाना में खेलेंगे। ऑस्ट्रेलिया के लिए हालात बेहद खराब हैं क्योंकि वह दो अंक पर है और अफगानिस्तान से करारी हार के बाद उसका नेट रन रेट +0.223 हो गया है।

नाडा ने बजरंग पूनिया को फिर निलंबित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय डोपिंग निरोधक एजेंसी (नाडा) ने रविवार को बजरंग पूनिया को दूसरी बार निलंबित कर दिया। इससे तीन सप्ताह पहले एडीडीपी ने इस आधार पर उनका निलंबन रद्द किया था कि नाडा ने पहलवान को आरोपों के संदर्भ में नोटिस जारी नहीं किया था।

नाडा ने 23 अप्रैल को तोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता पूनिया को निलंबित कर दिया था चूंकि उन्होंने 10 मार्च को सोनीपत में हुए चयन ट्रायल के दौरान डोप टेस्ट के लिए मूत्र के नमूने नहीं दिए थे। खेल की विश्व नियामक ईकाई यूडब्ल्यूडब्ल्यू ने भी उन्हें निलंबित किया था। बजरंग ने इस अस्थायी निलंबन के खिलाफ अपील दायर की थी और नाडा की डोपिंग निरोधक अनुशासन पेनल (एडीडीपी) ने नाडा के आरोपों के संदर्भ में नोटिस जारी करने तक इसे रद्द कर दिया था। नाडा ने रविवार को पूनिया को नोटिस जारी किया। नाडा ने पूनिया को भेजे नोटिस में कहा कि यह आपके लिए औपचारिक नोटिस है कि आपको राष्ट्रीय डोपिंग निरोधक नियमों की धारा 2.3 के उल्लंघन का दोषी पाया गया है और अब आप अस्थाई रूप से निलंबित हैं। पूनिया को आरोप स्वीकार करने या सुनवाई का अनुरोध करने के लिए 11 जुलाई तक का समय दिया गया है।

हम बहुत स्मार्ट हैं, हम बल्ले और गेंद से अच्छे रहे : रोहित शर्मा

किंग्सटाउन (एजेंसी)। टी20 विश्व कप 2024 में टीम इंडिया टूर्नामेंट में अजेय बनी हुई है। टीम इंडिया का सेमीफाइनल लगभग तय हो गया है। लेकिन उन्हें इसे पक्का करने के लिए

गुयाना के मैदान पर उतरना ही होगा। क्या कोई उन्हें रोक सकता है? यह टूर्नामेंट के आगे बढ़ने पर हमें पता चल जाएगा। वहीं, टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने बांग्लादेश के खिलाफ अहम जीत दर्ज करने के बाद अपने खिलाड़ियों की तारीफ की है। रोहित ने साफ शब्दों मे कहा कि सभी खिलाड़ियों का मिला जुला प्रदर्शन ही उन्हें आगे लेकर जा रहा है।

टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने मैच के बाद बल्लेबाजी में आक्रमण रुख अपनाने पर कहा कि मैं लंबे समय से इस बारे में बात कर रहा हूं। हमें मैदान पर जाकर अपना काम करना होगा। आज सब कुछ ध्यान में रखते हुए हमने परिस्थितियों के अनुरूप ढलकर वास्तव में अच्छा खेला। यहां थोड़ा हवा का प्रभाव है, कुल मिलाकर हम बहुत स्मार्ट हैं, कुल मिलाकर हम बल्ले और गेंद से अच्छे थे। सभी 8 बल्लेबाजों को अपनी भूमिका निभानी होगी, चाहे वह कुछ भी हो। हमने देखा कि एक खिलाड़ी ने 50 रन बनाए और अब हम 197 रन तक पहुंचे।

रोहित ने कहा कि टी20 में मुझे नहीं लगता कि हमें अर्द्धशतक और शतक बनाने की जरूरत है, मायने यह रखता है कि आप गेंदबाजों पर कितना दबाव डालते हैं। शुरू से ही सभी बल्लेबाज इसी तरह खेले। टीम में काफी अनुभव है। वहीं, हार्दिक के प्रदर्शन पर रोहित ने कहा कि मैंने पिछले गेम में भी कहा था, उसकी अच्छी बल्लेबाजी हमें अच्छी स्थिति में लाती है। हम शीर्ष 5, 6 के बाद अच्छा प्रदर्शन करना चाहते हैं। हम जानते हैं कि हार्दिक क्या करने में सक्षम है। वह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण खिलाड़ी है, अगर वह ऐसा करना जारी रखता है तो यह हमें अच्छी स्थिति में पहुंचा देगा। उत्साह और अगर हम गेंदबाज के साथ कुछ चर्चा करते हैं और जब वह सामने आता है, तो यह अच्छा है।

मुंबई में तब नींद नहीं आई थी, अब अच्छे से सो पाऊंगा: राशिद खान

किंग्सटाउन (एजेंसी)। ग्लेन मैक्सवेल के ऐतिहासिक दोहरे शतक ने राशिद खान को पिछले साल नवंबर में मुंबई में एकदिवसीय विश्व कप मैच के बाद सोने नहीं दिया था, लेकिन अफगानिस्तान के कप्तान ने टी20 विश्व कप में रविवार को यहां ऑस्ट्रेलिया को हराने के बाद खुशी से पूरी रात जागने से कोई शिकायत नहीं है। अफगानिस्तान ने सुपर 8 चरण के मैच में ऑस्ट्रेलिया को 21 रन से हराकर सेमीफाइनल में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को जीवंत रखा है। इस जीत से टीम मुंबई की कड़वी यादों पीछे छोड़ने की कोशिश करेगी।

पिछले साल नवंबर में एकदिवसीय विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया ने 91 रन पर 7 विकेट गंवाने के बाद जीत के लिए 292 रन का लक्ष्य हासिल कर लिया था। इस मैच में मैक्सवेल ने चोटिल होने के बावजूद 128 गेंद में 21 चौके और 10 छक्के की मदद से नाबाद 201 रन की बेहतरीन पारी खेली थी।

राशिद ने टी20 विश्व कप में उलटफेर करने के बाद कहा कि मुझे लगता है कि मैं अब अच्छे से सो पाउंगा। उस रात को मैं ठीक से सोने नहीं सका

था। उस मैच की यादें हमेशा हमारे दिमाग में रहेगी। जाहिर है, मैं उस (सात नवंबर 2023) पूरी रात सो नहीं पाया था। लग रहा है कि आज भी ऐसा ही होगा। आज खुशी के मारे सो नहीं पाऊंगा। आज पूरी टीम खुश है। उन्होंने कहा कि युद्ध की मार झेल रहे देश के लोगों को जीत से जश्न मनाने का मौका मिलेगा।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के किसी भी प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया पर अफगानिस्तान की पहली जीत के बाद राशिद ने कहा कि एक टीम, एक राष्ट्र के रूप में यह हमारे लिए एक बड़ी जीत है। यह सिर्फ द्विपक्षीय खेल जैसा नहीं है. यह विश्व कप का मैच है और निश्चित रूप से विश्व कप में आप सर्वश्रेष्ठ टीम को हरा रहे हैं। यह एक बड़ी उपलब्धि है। उनकी टीम 2021 विश्व कप के विजेता हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह की टीम को हराना यह आपको हमेशा बहुत अधिक ऊर्जा देता है और आपको सोने भी नहीं देता है।

उन्होंने कहा कि मैंने पहले कहा था अफगानिस्तान में क्रिकेट लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाने का एकमात्र स्रोत है। वहां लोग इसी का जश्न मना सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हम यहां अपने घर में लोगों को यह खुशी दे रहे हैं। हम शायद ही अपने घर में इस तरह के आयोजन देखते हैं जहां वे जश्न मना सकें और उन पलों का आनंद उठा सकें। यह कुछ ऐसा है जो वास्तव में मुझे संतुष्ट करता है। भारतीय टीम ने अगर अपने अगले मैच में ऑस्ट्रेलिया को बड़े अंतर से हरा दिया तो अफगानिस्तान के पास सुपर आठ में पहुंचने का मौका होगा।

ज्वेरेव को हराकर ह्यूबर्ट हर्काज हाले के फ़ाइनल में

हाले, एजेंसी। पूर्व चैंपियन ह्यूबर्ट हर्काज ने शनिवार को विश्व के चौथे नंबर के खिलाड़ी अलेक्जेंडर ज्वेरेव को सीधे सेटों में हराकर टेरा वोर्टमैन ओपन के फ़ाइनल में प्रवेश कर लिया है। हर्काज ने ज्वेरेव को 7-6(2), 6-4 से हराया और अब वह सत्र के अपने दूसरे खिताब से एक जीत दूर रह गए हैं। पांचवीं सीड पोलिश खिलाड़ी ने सेमीफाइनल में ज्वेरेव के खिलाफ 17 एस लगाए और सभी चार ब्रेक अंकों को बचाया। उन्होंने इस जीत के साथ अपनी पांचवीं टॉप 10 ग्रास कोर्ट जीत हासिल की। एक घंटे 33 मिनट की जीत के साथ हर्काज ने ज्वेरेव के खिलाफ आमने-सामने के मुकाबलों में अपना रिकॉर्ड 1-3 कर लिया है। यह उनका 11 वां टूर स्तर फ़ाइनल है और वह अपने नौवें एटीपी टूर खिताब की उम्मीद करेंगे जब उनका रविवार को टॉप सीड जानिक सिनर या चीन के झांग झीझेन से मुकाबला होगा।

मैं ईंट का जवाब पत्थर से देने पर यकीन करता हूं : कुलदीप यादव

ग्रोस आइलेट (एजेंसी)। कुलदीप यादव टी20 क्रिकेट में ईंट का जवाब पत्थर से देने पर यकीन करते हैं और इसी आक्रामक तेवर से भारत के इस कलाई के स्पिनर को वेस्टइंडीज में चल रहे टी20 विश्व कप में अप्रतिम सफलता मिल रही है । पिछले एक साल से अधिक समय से सभी प्रारूपों में भारत के सर्वश्रेष्ठ स्पिनर कुलदीप को अमेरिका में लीग चरण में बाहर रहना पड़ा था। वेस्टइंडीज की स्पिनरों की मददगार पिचों पर वह काफी प्रभावी साबित हो रहे हैं। उन्होंने 2 मैचों में 5 विकेट ले लिए हैं जिसमें बांग्लादेश के खिलाफ शनिवार को मिले तीन विकेट शामिल है। कुलदीप की सफलता का एक कारण उनकी गेंदबाजी में आक्रामकता भी है। उन्होंने कहा कि वह अपनी लैंग्थ से कभी समझौता नहीं करते। उन्होंने कहा कि दुनिया के किसी भी स्पिनर के लिए लैंग्थ काफी मायने रखती है। इस प्रारूप में तो आपको यह भांपना ही होता है कि बल्लेबाज क्या करने की सोच रहा है। इसके लिए काफी आक्रामक होना पड़ा है। मुझे आईपीएल में भी इससे मदद मिली और अब टी20 विश्व कप में भी। अब आस्ट्रेलिया के खिलाफ सोमवार को उन्हें सबसे कठिन परीक्षा से गुजरना है। यह पूछने पर कि बल्लेबाज जब चौके छक्के लगाने की फिराक में होते हैं, वह अपनी रणनीति पर कैसे अडिग रह पाते हैं।

उन्होंने कहा कि जब सामने वाली टीम को प्रति ओवर 10 या 12 रन चाहिए और बल्लेबाज आपकी गेंदों की धुनाई करने को आतुर हों तो सिर्फ लैंग्थ बनाए रखना जरूरी है। उन्होंने कहा कि जब वह आप पर हमले की कोशिश करें तो आपके पास रणनीति होनी चाहिए। ऐसे में विकेट लेने की संभावना अधिक होती है।

कुलदीप ने संकेत दिया कि उन्हें वेस्टइंडीज में टीम संयोजन की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मैं अमेरिका में नहीं खेला। मैं वहां 12वां खिलाड़ी था और ड्रिंक्स लेकर जा रहा था। यह खेलने जैसा ही था। मैंने वहां गेंदबाजी नहीं की लेकिन करना चाहता था। उन्होंने कहा कि वहां विकेट आस्ट्रेलिया की तरह था। मैंने यहां 2017 में टी20 और वनडे में पदार्पण किया और मुझे हालात का पता था। स्पिनर के लिए यहां गेंदबाजी करना अच्छा अनुभव है।

बॉल निकालने के लिए स्टेज के नीचे घुस गए विराट कोहली

एंटीगुआ (एजेंसी)। स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली मैदान पर अपनी अदाओं के कारण चर्चा में रहे हैं। एंटीगुआ के मैदान पर जब भारतीय टीम बांग्लादेश के खिलाफ सुपर 8 का अहम मुकाबला खेल रही थी तब भी विराट चर्चा में रहे। हुआ यूं कि कोहली बाऊंड्री रोप पर फील्डिंग कर रहे थे। 18वें ओवर में रियाद महमुदुल्लाह ने एक जोरदार छक्का लगाया जो मैदान के बाहर चला गया। गेंद बाऊंड्री रोप से बाहर बनी एक छोटी सी स्टेज के नीचे चली गई। क्योंकि वहां कोई बॉल ब्वॉय नहीं था ऐसे में विराट खुद ही गेंद लेने के लिए निकले। गेंद स्टेज के नीचे थे ऐसे में विराट झुके और अंदर घुसते हुए गेंद निकाल लाए। विराट की यह अदा क्रिकेट फैंस को बेहद पसंद आई। घटनाक्रम की वीडियो जब सोशल मीडिया पर वायरल हुई तो फैंस ने इसपर जमकर प्यार बरसाया।

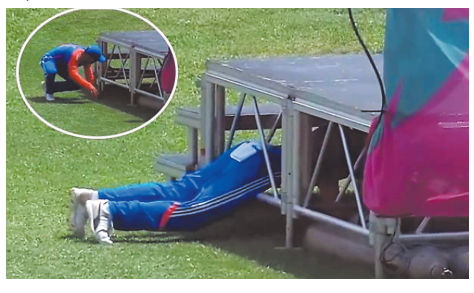

विश्व कप में विराट कोहली बना चुके 3000 रन भारतीय स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने एंटीगुआ में टी20 विश्व कप 2024 के सुपर आठ मुकाबले में बांग्लादेश के खिलाफ 37 रन बनाने के साथ ही एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। टूर्नामेंट के मौजूदा संस्करण में खराब प्रदर्शन के कारण निंदा झेल रहे कोहली ने बांग्लादेश के खिलाफ 28 गेंदों में तीन छक्कों की मदद से 37 रनों की पारी खेली। कोहली अब टी20 और वनडे विश्व कप के इतिहास में 3000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बन गए हैं। मैच से पहले विराट को इस रिकॉर्ड तक पहुंचने के लिए 35 रनों की जरूरत थी। देखें आंकड़े-

टी20 और वनडे विश्व कप में सर्वाधिक रन

1. विराट कोहली - 3002 रन
2. रोहित शर्मा- 2637 रन
3. डेविड वार्नर- 2502 रन
4. सचिन तेंदुलकर- 2278 रन
5. कुमार संगकारा- 2193 रन

संक्षिप्त समाचार

राजकोट गेम जोन आग मामले में मुख्य अग्निशमन अधिकारी समेत तीन अरेस्ट

राजकोट, एजेंसी। राजकोट गेम जोन में आग मामले में प्रशासन ने ताबड़तोड़ ऐक्शन की शुरुआत की है। राजकोट नगर निगम के मुख्य अग्निशमन अधिकारी (सीएफओ) और उप मुख्य अग्निशमन अधिकारी को 25 मई को यहां एक गेम जोन में लगी भीषण आग के संबंध में शनिवार को गिरफ्तार किया गया। एक अधिकारी ने बताया कि सीएफओ इलेश खेर और डिप्टी सीएफओ भीखा थेबा के साथ-साथ टीआरपी गेम जोन में निर्माण कार्य के पर्यवेक्षक रहे महेश राठौड़ को गिरफ्तार किया गया।

गेम जोन में आग लगने की घटना में बच्चों सहित 27 लोगों की मौत हो गई थी। अधिकारी ने बताया कि थेबा भ्रष्टाचार के एक मामले में पहले से ही जेल में हैं और उन्हें ट्रांसफर वारंट के जरिए हिरासत में लिया गया। इसके साथ हमने आग लगने के सिलसिले में अब तक 15 लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस के एक बयान में कहा गया है कि खेर पर आरोप है कि उन्होंने पिछले साल चार सितंबर को टीआरपी गेम जोन में वेल्डिंग कार्य के दौरान लगी इसी तरह की आग के बाद यह नहीं पूछा कि यूनिट के पास अग्नि संबंधी वैध अनापत्ति प्रमाण पत्र है या नहीं और साथ ही उचित अग्निशमन उपकरण भी हैं या नहीं।

बयान में कहा गया कि राठौड़ को अपने कर्तव्य में कथित लापरवाही और वेल्डिंग कार्य के दौरान उचित सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करने के लिए गिरफ्तार किया गया। पूर्व में गिरफ्तार किए गए लोगों में नगर निगम के नगर नियोजन अधिकारी एम डी सागथिया भी शामिल हैं, जो फिलहाल निलंबित हैं।

सैनिक बनने का ऐसा जुनून, रूस की सेना में भर्ती हो गया अमृतसर का तेजपाल; यूक्रेन में मौत

अमृतसर, एजेंसी। अमृतसर के तेजपाल पर सेना में भर्ती होने का ऐसा जुनून सवार था कि भारतीय सेना में एंट्री ना मिलने पर वह रूस की सेना में शामिल हो गए। यूक्रेन जोपरिज्जिया में जंग लड़ते हुए तेजपाल की मौत हो गई। उन्होंने जंग पर जाने से पहले अपनी पत्नी से इतना ही बताया था कि मोर्चे पर जाने की वजह से कुछ दिन वह बात नहीं कर पाएंगे। इसके बाद उनकी बात पत्नी के साथ कभी नहीं हो सकी। दो महीने तो यही पता लगाने में लग गया कि आखिर तेजपाल के साथ क्या हुआ कि उनसे कोई संपर्क नहीं हो पा रहा है। जून में पता चला कि यूक्रेन में मार्च में ही उनकी मौत हो गई थी।

द ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक तेजपाल ने कई बार आर्मी में भर्ती होने की कोशिश की थी लेकिन वह रिजेक्ट कर दिए गए थे। इसकते बाद अर्द्धसैनिक बल और पुलिस में भी भर्ती का प्रयास किया। तेजपाल का एक छह साल बेटा है और तीन साल की बेटी है। तेजपाल के पिता एक किराना स्टोर चलाते हैं।

तेजपाल स्टडी वीजा पर दो बार साइप्रस जा चुके थे। पहली बार 2013-14 में छह महीने के लिए साइप्रस गए और वहां ट्रैवल ऐंड टूरिजम मैनेजमेंट का कोर्स किया। इसके बाद दूसरी बार 17 महीने के लिए वर्क वीजा पर गए। उसी दौरान उनकी मुलाकात परमिंदर कौर से हुई और दोनों ने शादी कर ली। तेजपाल दोस्ती बनाने में माहिर थे और अकसर विदेशी नेटवर्क के संपर्क में रहते थे। विदेश में वह लंबे समय से काम की तलाश कर रहे थे।

परमिंदर को भी इस बात का पता नहीं था कि उन्हें रूस की सेना में भर्ती होने की जानकारी कब मिली। लगभग छह महीने पहले तेजपाल ने रूस की सेना के लिए अप्लाई किया था और उन्होंने इस बात की जानकारी अपने मां-बाप को भी नहीं दी थी। तेजपाल के दोस्तों ने बताया कि वह किसी भी तरह सेना में भर्ती होने का सपना पूरा करना चाहता था। तेजपाल का कहना था कि सेना में अगर वह अच्छा प्रदर्शन करता है तो रूस की स्थायी नागरिकता के लिए भी आवेदन कर सकते हैं। परमिंदर कौर को यह बात पसंद नहीं थी कि वह विदेशी सेना में भर्ती हों। तेजपाल के माता-पिता ने भी इसका विरोध किया था। हालांकि तेजपाल ने अपने मोबाइल का पासवर्ड तक सीक्रेट रखा ताकि उसके मोबाइल पर आने वाले मेसेज के बारे में किसी को पता ना चले। परमिंदर के मुताबिक किसी को परिवार में पता भी नहीं चला कि कब तेजपाल ने रूस के वीजा के लिए अप्लाई कर दिया। एक महीने तेजपाल का परिवार उन्हें समझाता रहा कि वह मॉस्को ना जाएं। लेकिन उन्होंने किसी की एक नहीं सुनी।

गुरुग्राम में बारिश के बाद उमसभरी गर्मी ने बढ़ाई परेशानी

अगले 5 दिन होंगे और भारी

नईदिल्ली, एजेंसी। गुरुग्राम जिले में शुक्रवार दोपहर को हुई बारिश के बाद लोगों को भीषण गर्मी से राहत जरूर मिली है, लेकिन शनिवार को बारिश के बाद उमसभरी गर्मी ने लोगों की परेशानी बढ़ा दी है। शनिवार को सुबह आसमान में बादल छाए रहे। 10 बजे के बाद उमसभरी गर्मी और तेज धूप ने लोगों के पसीने छुड़ा दिए। हालांकि, बारिश के बाद अधिकतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक लुढ़क गया है। इसके अलावा रात के तापमान में भी 4 डिग्री सेल्सियस तक की गिरावट दर्ज की गई है। बारिश के बाद से लू के थपेड़ों से लोगों को बड़ी राहत मिली है।

शनिवार को उमस के कारण लोग परेशान हो गए। तेज धूप के कारण बाहर निकलने में परेशानी हुई। न्यूनतम तापमान 28.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं अधिकतम तापमान 38.5 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम विभाग के अनुसार 26 जून तक क्षेत्र में आंशिक बादल छाए रहने का अनुमान है। अगले चार से पांच दिन तक लोगों को फिर से भीषण गर्मी का सामना करना पड़ सकता है। मौसम विभाग ने अगले चार से पांच दिन मौसम शुष्क रहने के साथ तापमान में बढ़ोतरी होने का अनुमान जताया है।

फसलों को फायदा पहुंचेगा

मौसम विभाग के अनुसार, क्षेत्र में 27 जून को मॉनसून पहुंचने का अनुमान है। इससे 27 और 28 को वर्षा होने की संभावना है। अगर अच्छी वर्षा हुई तो तापमान में गिरावट आने से भीषण गर्मी से राहत मिलेगी और इसके साथ ही खरीफ की अगेती फसलों को भी फायदा मिलेगा। मॉनसून की बारिश शुरू होने से लोगों को गर्मी से राहत मिलने की उम्मीद है।

लोगों से पानी अधिक पीने की अपील

डॉक्टरों ने कम तापमान वाले उमस भरे माहौल को भीषण गर्मी से भी ज्यादा खतरनाक बताया है। डॉक्टरों का मानना है कि तापमान ज्यादा रहने से लोगों को प्यास लगती है और वह पानी पीते रहते हैं। वहीं उमस में पसीना ज्यादा निकलता है और लोगों को प्यास नहीं लगती है। ऐसे में डिहाइड्रेशन के मामले बढ़ने और पेट खराब होने की आशंका बनी रहती है। डॉक्टरों ने लोगों को पर्याप्त मात्रा में पेयजल या तरल पदार्थ का सेवन करने की सलाह दी है।

सत्तारूढ़ दल को मिलेगा लोकसभा अध्यक्ष पद, उपाध्यक्ष को लेकर शरद पवार ने उठाए सवाल

मुंबई, एजेंसी। लोकसभा अध्यक्ष पद को लेकर इन दिनों राजनीति गरमाई हुई है। एनसीपी-एससीपी प्रमुख शरद पवार ने इस मामले पर शनिवार को बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा, हमें पता है कि सत्तारूढ़ दल को अध्यक्ष पद मिलेगा। पहले यह सामान्य प्रथा देखने को मिलती थी कि विपक्ष को उपाध्यक्ष पद दिया जाता था। मगर, मोदी सरकार के दौरान आखिर के 10 सालों में ऐसा नहीं हुआ। मुझे नहीं लगता कि इस बार भी इसमें कोई सुधार होगा।

18वीं लोकसभा का पहला सत्र 24 जून को शुरू होगा और लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव 26 जून को होना है। लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए भाजपा नेता डी पुरंदेश्वरी, राधा मोहन सिंह और भर्तृहरि महताब के नाम चर्चा में हैं। राजनीतिक हलकों के एक वर्ग का यह भी विचार है कि वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को दूसरा कार्यकाल मिल सकता है। लोकसभा चुनाव में विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया ने 234 सीटें जीतीं, जबकि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राजग ने 293 सीटें जीतकर लगातार तीसरी बार सत्ता बरकरार रखी। 16 सीटों के साथ तेलुगु देशम पार्टी (ञ्जष्ठक्क) और 12 सीटों के साथ जनता दल (यूनाइटेड) भाजपा की सबसे बड़ी सहयोगी हैं। बीजेपी ने 240 सीटें जीती हैं।

चुनाव आम सहमति से होना हमेशा बेहतरः संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने इस मामले पर शुक्रवार को बड़ा बयान दिया था। उन्होंने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव आम सहमति से होना हमेशा बेहतर होता है। उन्होंने यह टिप्पणी ऐसे समय की है जब विपक्षी दल लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव लड़ने को लेकर उत्सुक नजर आ रहे हैं। संसदीय कार्य मंत्री से जब सवाल किया गया कि क्या लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव के संदर्भ में उन्होंने विपक्षी दलों से संपर्क किया है तो रिजिजू ने कहा, अगर आम सहमति हो तो यह हमेशा बेहतर होता है। उनका कहना था कि किसी भी निर्णय पर पहुंचने से पहले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श किया जाएगा।

अन्य सांसदों संग शपथ नहीं ले पाएगा उमर अब्दुल्ला को हराने वाला शख्स, दिल्ली की अदालत ने एनआईए से मांगा जवाब

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में शनिवार को जम्मू-कश्मीर की बारामूला लोकसभा सीट से नवनिर्वाचित सांसद अब्दुल राशिद शेख उर्फ राशिद इंजीनियर की अंतरिम जमानत याचिका पर सुनवाई हुई। कोर्ट ने इस मामले में जवाब दाखिल करने के लिए एनआईए (राष्ट्रीय जांच एजेंसी) को वक्त देते हुए अगली सुनवाई के लिए 1 जुलाई की तारीख तय की है। जिसके बाद राशिद अब अन्य नवनिर्वाचित लोकसभा सांसदों के साथ शपथ नहीं ले पाएंगे।

आतंकवाद की फंडिंग मामले में जेल में बंद इंजीनियर राशिद ने सांसद के रूप में शपथ ग्रहण करने के लिए अंतरिम जमानत या कस्टडी पैरोल की मांग करते हुए यह याचिका लगाई है। राशिद की याचिका पर ड्यूटी जज किरण गुप्ता की अदालत में हुई। जहां एनआईए की तरफ से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेश हुए विशेष लोक अभियोजक ने जवाब दाखिल करने के लिए कुछ समय मांगा। उन्होंने कहा कि क्योंकि यह आप का मामला है, इसलिए हमें लाने-ले जाने के तौर तरीकों पर विचार करने के लिए समय चाहिए। राशिद की ओर से एडवोकेट विख्यात ओबेरॉय पेश हुए और उन्होंने कोर्ट से कहा कि राशिद वह व्यक्ति हैं जिन्होंने भारी बहुमत से चुनाव जीता है। लोग उनसे प्यार करते हैं और चाहते हैं कि वह संसद में लोकतांत्रिक तरीके से लोगों की लड़ाई लड़ें। राशिद की बात रखते हुए वकील ने कहा कि शपथ लेना मेरा संवैधानिक कर्तव्य है और शपथ लेने के लिए मैं उनके सामने भीख मांगने को मजबूर हूं। यह वाकई शर्मनाक है। वकील ने तर्क दिया कि अदालत जेल अधिकारियों को लोकसभा सचिवालय से संपर्क करने का निर्देश दे सकती है, एनआईए को लोकसभा सचिवालय से संपर्क करने का निर्देश दे सकती है, या लोकसभा सचिवालय को राशिद के शपथ ग्रहण की तिथि तय करने का निर्देश दे सकती है। उन्होंने राउज एवेन्यू कोर्ट और पटना हाईकोर्ट के आदेश का भी हवाला दिया, जिसमें जेल अधिकारियों को आरोपी को शपथ ग्रहण कराने का निर्देश दिया गया था। इसके अलावा बचाव पक्ष के वकील ने आप सांसद संजय सिंह के मामले में राउज एवेन्यू कोर्ट द्वारा पारित आदेश का हवाला भी दिया। उन्होंने कहा कि इंजीनियर कोर्ट की हिरासत में हैं, इसलिए उन्हें संसद ले जाने में एनआईए की कोई भूमिका नहीं रहेगी। हालांकि, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश किरण गुप्ता ने पाया कि इंजीनियर राशिद पर लगे आरोप आप नेता के खिलाफ लगाए गए आरोपों से अलग हैं।

इससे पहले 18 जून को दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट ने एनआईए को निर्देश दिया था कि वह बताए कि राशिद इंजीनियर को तीन तारीखों में से किस तारीख को शपथ ग्रहण कराना है। जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट ने एनआईए को समय भी दिया। नवनिर्वाचित सांसदों के लिए शपथ ग्रहण करने की निर्धारित तिथियां 24, 25 और 26 जून हैं। लेकिन 1 जुलाई तक कार्यवाही टल जाने की वजह से राशिद अब अन्य सांसदों के साथ शपथ नहीं ले पाएंगे। बता दें कि अब्दुल राशिद शेख उर्फ राशिद इंजीनियर एनआईए केस में हिरासत में रहते हुए जम्मू-कश्मीर की बारामूला सीट से सांसद चुने गए हैं। उन्होंने चुनाव में प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को 2 लाख से ज्यादा वोटों से हराया है। राशिद साल 2019 से जेल में है, जब एनआईए ने उन पर आतंकी फंडिंग मामले में कथित संलिप्तता के लिए गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम के तहत आरोप लगाया था। वह वर्तमान में तिहाड़ जेल में बंद है। पूर्व विधायक का नाम कश्मीरी व्यवसायी जहूर वटाली की जांच के दौरान सामने आया था, जिसे एनआइए ने कश्मीर घाटी में आतंकवादी समूहों और अलगाववादियों को कथित रूप से फंडिंग करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। एनआइए ने मामले में कश्मीरी अलगाववादी नेता यासीन मलिक, लश्कर-ए-तैयबा के संस्थापक हाफिज सईद और हिजबुल मुजाहिदीन के प्रमुख सैयद सलाहुद्दीन सहित कई व्यक्तियों के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया था।

चुनाव से पहले डोनाल्ड ट्रंप ने भारतीय छात्रों को किया खुश

कर दिया ग्रीन कार्ड देने का वादा

वॉशिंगटनएजेंसी। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक चुनावी वादे ने भारतीय छात्रों को खुश कर दिया है। उन्होंने कहा कि अगर वह सत्ता में वापसी करते हैं तो अमेरिका में ग्रैजुएशन करने वाले छात्रों को ग्रीन कार्ड दिया जाएगा। यह अमेरिका में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के लिए बड़ी राहत की खबर है। वैसे रिपब्लिकन नेता ट्रंप इमिग्रेशन नियमों को लेकर सख्त रवैया अपनाने के लिए जाने जाते हैं। वहीं ट्रंप के वादे के मुताबिक अगर उनकी सरकार बनती है तो अमेरिकी कॉलेजों में पढ़ने वाले भारतीय और अन्य विदेशी छात्रों को स्वतः ग्रीन कार्ड मिल जाएगा और वे अमेरिका में स्थायी रूप से रहने के अधिकारी हो जाएंगे।

डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र जब अपने देश जाते हैं तो अरबपति बन जाते हैं। ऐसा ही अमेरिका में भी तो हो सकता है। बता दें कि नवंबर में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव हो सकते हैं। इसमें जो बाइडेन और डोनाल्ड ट्रंप के बीच मुकाबला हो सकता है। चुनाव में अवैध इमिग्रेशन और डिपोर्टेशन का मुद्दा अहम है।

एक पॉडकास्ट के दौरान ट्रंप ने कहा कि अमेरिका कॉलेजों से ग्रैजुएशन करने वाले छात्रों को डिप्लोमा के रुप में ग्रीन कार्ड दिया जाएगा। सिलिकॉन वैली टेक इन्वेस्टर्स की ओर से आयोजित पॉडकास्ट में डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह दुनियाभर से अच्छे प्रतिभाशाली लोगों को अमेरिका बुलाने का अधिकार देंगे। वहीं ट्रंप ने कहा कि अगर कोई अमेरिकी कॉलेज से ग्रैजुएशन करता है तो उसे ग्रीन कार्ड मिलना चाहिए। इसमें जूनियर कॉलेज भी शामिल हैं।

यह स्पष्ट नहीं है कि डोनाल्ड ट्रंप का इशारा उन लोगों की तरफ था जो कि अवैध रूप से अमेरिका में घुसे हैं। या फिर जिन लोगों का वीजा खत्म हो गया है और वे अमेरिका में ही रुके हुए हैं। ट्रंप ने कहा कि वह चाहते हैं कि कुशल ग्रैजुएट उनके देश में रहे और विकास में योगदान दें। वहीं मानवाधिकार कार्यकर्ता ट्रंप के वादे से आश्वस्त नहीं हैं। उनका कहना है कि ट्रंप ने ही पिछले प्रशासन में छात्र वीजा को प्रतिबंधित कर दिया था और ग्रैजुएशन के बाद उन्हें अमेरिका से भगाने की नीति अपना ली थी। वहीं अमेरिकी कंपनियों में विदेशी लोगों को नियुक्त करने के नियम भी कठिन बना लिए थे। ट्रंप ने कहा, अगर आप किसी कॉलेज से दो साल या फिर चार साल की डिग्री लेते हैं। या फिर डॉक्ट्रेट की डिग्री लेते हैं तो आपको अमेरिका में रुकने का अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि बहुत सारे प्रतिभाशाली लोग कंपनियों के ऑफर को इसलिए नहीं स्वीकार कर पाते क्योंकि उन्हें अमेरिका में रुकने का अधिकार नहीं मिलता है।

कोलंबिया में कार में बम विस्फोट; पुलिसकर्मी समेत तीन की मौत

बोगोटा, एजेंसी। कोलंबिया में शनिवार को बम धमाका हुआ। धमाका कार में रखे बम के जरिए किया गया। विस्फोट में एक पुलिसकर्मी समेत तीन लोगों की मौत हो गई। इस दौरान आठ अन्य घायल हो गए। बताया जा रहा है कि जहां धमाका हुआ, वहां वामपंथी विद्रोही समूह सक्रिय है। देश के रक्षा मंत्रालय ने सोशल नेटवर्क एक्स पर कहा कि एक निजी वाहन में रखे विस्फोटक से विस्फोट हुआ, जिससे पुलिस अधिकारी सैंटियागो मोरेनो रियोस के साथ एक दुकानदार और एक व्यक्ति की मौत हो गई। बयान में कहा गया कि दक्षिण-पश्चिमी नारिनो में शुक्रवार को हुए विस्फोट में दो अन्य अधिकारी और छह नागरिक घायल हो गए। घटना उस क्षेत्र में हुई जहां एस्टाडो मेयर सेंट्रल (ईएमसी) नामक एक एफएआरसी असंतुष्ट समूह सक्रिय है। ईएमसी और सेगुंडा मार्केटालिया दो अलग-अलग समूह हैं, जिन्होंने 2016 में एफएआरसी- कोलंबिया के क्रांतिकारी सशस्त्र बल की ओर से शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने पर हथियार डालने से इनकार कर दिया था। इन दोनों समूहों को कभी महाद्वीप पर सबसे शक्तिशाली गुरिल्ला संगठन कहा जाता था। हमला उसी दिन हुआ, जिस दिन सीजर विभाग में विद्रोहियों ने एक पुलिसकर्मी की हत्या कर दी और दूसरे को घायल कर दिया। राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने दोनों हमलों के पीड़ितों के परिवारों के प्रति एकजुटता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जो लोग शांति के बजाय युद्ध का रास्ता चुनते हैं, उन्हें कानून सजा देगा। उन्हें कतई भी बख्शा नहीं जाएगा। हमले सोमवार को कोलंबियाई सरकार और सेगुंडा मार्केटालिया के प्रतिनिधियों के बीच कराकास में होने वाली वार्ता से पहले हुए हैं।

यमन से हूती फिर सक्रिय, लाल सागर में अमेरिकी विमानवाहक पोत तो इस्राइल बंदरगाह पर चार जहाजों पर हमला

सना, एजेंसी। ईरान के हूती विद्रोहियों का लाल सागर में जहाजों को निशाना बनाने का मामला ठंडा नहीं पड़ रहा है। अमेरिका समेत 13 देशों के अंतिम चेतावनी के बाद भी विद्रोहियों ने उत्तरी लाल सागर में अमेरिकी विमानवाहक पोत आइजनहावर को निशाना बनाया। उसने पोत पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। इसके अलावा, हूती विद्रोहियों ने रविवार को दावा किया कि उसने इस्राइल के उत्तरी हाइफा बंदरगाह पर चार जहाजों को निशाना बनाया था।

हूती विद्रोहियों के प्रवक्ता याह्या सारेया ने शनिवार को दावा किया कि उसके सशस्त्र बलों ने एक अभियान चलाकर आइजनहावर को निशाना बनाया। सारेया ने कहा, हमारे सशस्त्र बलों के मिसाइल बल ने उत्तरी लाल सागर में अमेरिकी विमानवाहक पोत आइजनहावर को कई बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों के साथ निशाना बनाते हुए एक अभियान चलाया और अभियान ने सफलतापूर्वक अपने लक्ष्यों को हासिल किया।

एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, फिलहाल इस बात की पुष्टि करने के लिए कोई सबूत नहीं है कि विमानवाहक पोत पर वास्तव में हमला हुआ या नहीं। यह हूतियों द्वारा लाल सागर में अमेरिकी विमानवाहक पोत आइजनहावर को निशाना बनाकर एक महीने से भी कम समय में किया गया दूसरा हमला है। परमाणु ऊर्जा से चलने वाले इस विमानवाहक पोत पर पहला हमला 31 मई को हुआ था, जिस पर अमेरिकी सेना ने कोई टिप्पणी नहीं की थी। सारेया ने कहा कि उग्रवादी समूह ने अरब सागर में व्यापारिक जहाज ट्रांसवर्ल्ड नेविगेटर पर भी बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला किया, जो कि हूतियों के अनुसार जहाज के मालिक द्वारा इस्राइली बंदरगाहों में प्रवेश पर लगे प्रतिबंध का उल्लंघन करने के जवाब में किया गया।

चार जहाजों को निशाना बनाया

यमन के हूती विद्रोहियों ने रविवार तड़के कहा कि उन्होंने इस्लामिक रेसिस्टेंस इन इराक आतंकवादी समूह के साथ एक संयुक्त सैन्य अभियान चलाया था, जिसमें इस्राइल के उत्तरी हाइफा बंदरगाह पर चार जहाजों को निशाना बनाया गया था। याह्या सारेया ने कहा कि दोनों समूहों ने शनिवार को हाइफा बंदरगाह पर सीमेंट के दो टैंकरों और दो मालवाहक जहाजों पर ड्रोन हमला किया। उन्होंने कहा कि जहाज उन कंपनियों के थे जिन्होंने कब्जे वाले फलस्तीन के बंदरगाहों में प्रवेश करने पर प्रतिबंध का उल्लंघन किया था।

हज यात्रियों की मौत के बाद एक्शन में मिस्र, अवैध रूप से सऊदी अरब पहुंचाने वाले एजेंटों के लाइसेंस करेगा रद्द

काहिरा, एजेंसी। हाल के दिनों में विभिन्न देशों से आए हजारों लोग सऊदी अरब में हज यात्रा के दौरान गंभीर परिस्थितियों में मारे गए। लोगों के मरने का मुख्य कारण भीषण गर्मी रहा सऊदी अरब में तापमान 51 डिग्री सेल्सियस से अधिक पहुंच गया है। वहीं, मिस्र के प्रधानमंत्री मुस्तफा मैडबौली ने शनिवार को 16 पर्यटन कंपनियों को उनके लाइसेंस रद करने का आदेश दे दिया है। अरब राजनयिकों ने इस सप्ताह की शुरुआत में एएफपी को बताया कि मिस्रवासियों की 658 मौतें हुईं, जिनमें से 630 अपंजीकृत तीर्थयात्री थे। इसको लेकर मिस्र प्रशासन काफी गंभीर हो गया है। ट्रैवल एजेंटों ने हज यात्रियों को सऊदी अरब अवैध रूप से भेजा जिसकी कोई जानकारी नहीं दी गई। मिस्र कैबिनेट ने एक बयान में कहा कि प्रधानमंत्री ने इन कंपनियों के लाइसेंस रद्द करने, उनके प्रबंधकों को सरकारी अभियोजक के पास भेजने और उन तीर्थयात्रियों के परिवारों को लाभ पहुंचाने के लिए जुर्माना लगाने का आदेश दिया है, जिनकी वजह से उनकी मौत हो गई।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129, 9430990555